स्पंदन

2009-10

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री (मौनीनगर) संचलित

दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री

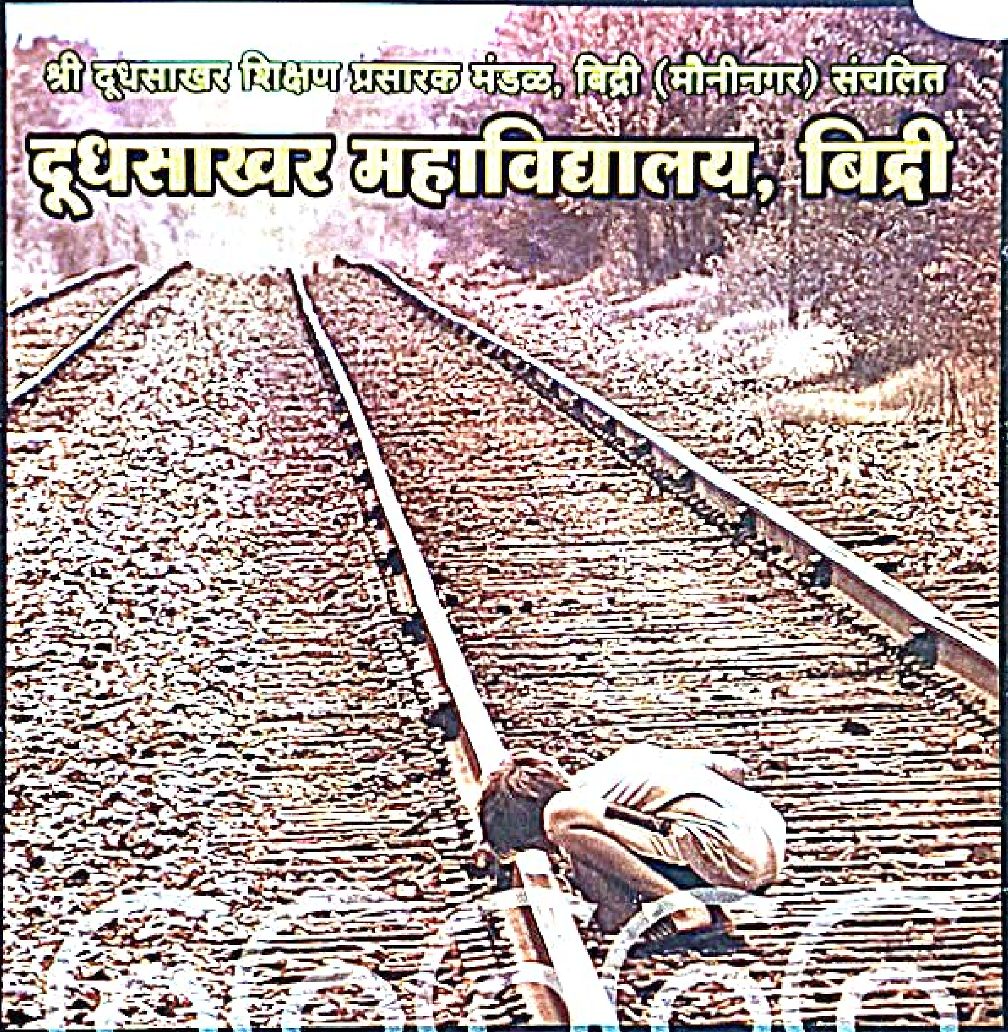

Design By M. Harshvardhan

मा. डॉ. शिरीष चिंधडे Unsderstanding Poetry कार्यशाळेत बीजभाषण करताना.

अग्रणी महाविद्यालय योजनेअंतर्गत बी.ए. ३ इंग्रजीच्या बदल
अभ्यासक्रमावरील (पेपर ४,५,८) चर्चासत्राचे बीजभाषण कर
मा. डॉ. ए. जी. जोशी (प्राचार्य, देवचंद कॉलेज)

होमी भाभा जन्म शताब्दि वर्ष दि. १७ डिसे. २०१० उद्घाटक डॉ. शिवराम भोजे

वार्षिक पारितोषिक वितरण समारंभात मार्गदर्शन करताना मा. विजय कुवळेकर माहिती अधिकारी पुणे

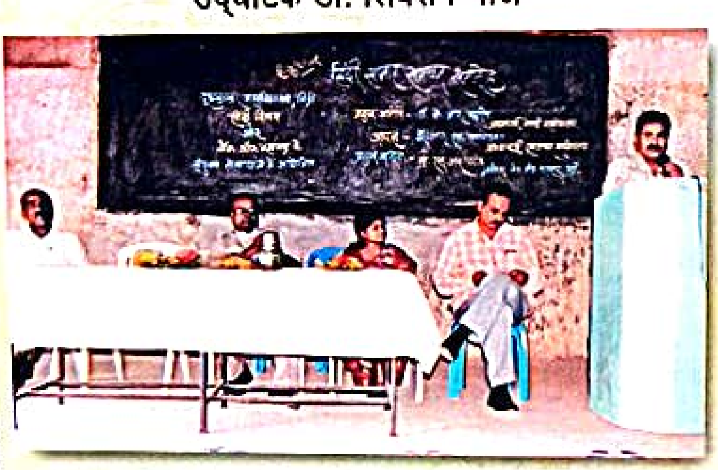

हिंदी दिनानिमित्त प्राचार्य के. आर. पाटील मार्गदर्शन करताना

दूधसाखर भित्तीपत्रक उद्घाटन करताना संचालक मा. जी.डी.पाटील

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री (मौनीनगर)
संचलित

दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री

वार्षिक अंक सतरावा

स्पंदन

सन २००९-१०

संपादक मंडळ

प्रमुख संपादक
प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर

कार्यकारी संपादक
प्रा. डॉ. संजय पाटील

विभागीय संपादक
प्रा. डॉ. संजय पाटील मराठी विभाग
प्रा. डॉ. सादिक देसाई हिंदी विभाग
प्रा. चिंतामणी जाधव इंग्रजी विभाग
प्रा. डॉ. मानसिंग टाकळे शास्त्र विभाग

स्थानिक व्यवस्थापन समिती

अध्यक्ष	:	मा. आमदार कृष्णराव परशराम पाटील
उपाध्यक्ष	:	मा. केशवराव शंकरराव पाटील
सदस्य	:	मा. नामदेवराव शंकरराव भोईटे
सदस्य	:	मा. एकनाथ माणकोजी निकम
सदस्य	:	मा. जी. डी. पाटील
मुख्य सचिव	:	मा. एस. एस. चौगले
सचिव	:	प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर
शिक्षक प्रतिनिधी	:	प्रा. डॉ. संजय दशरथ पाटील
शिक्षक प्रतिनिधी	:	प्रा. संजय रामचंद्र पाटील
शिक्षक प्रतिनिधी	:	प्रा. शशिकांत सावंत
शिक्षकेतर प्रतिनिधी	:	श्री. नामदेव विष्णू पाटील

रजि. नं. केपीआर/केजीएल/आरएसआर (सीआर) २२६६/९९ स्थापना : १५/१०/१९९९

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ सेवकांची सहकारी पतसंस्था

बिद्री (मौनीनगर), ता. कागल, जि. कोल्हापूर

आकर्षक व्याज दर (द.सा.द.शे)

मुदत बंद ठेव :

४६ दिवस ते १२ महिने	७%
१३ महिने ते २४ महिने	८%
२५ महिने ते ४८ महिने	९%
४९ महिने ते ६० महिने	१०%
रिकरिंग ठेव :	१०%
दामदूप्पट ठेव :	९%

सभासद हित, तत्पर सेवा

ठेव	:	७१.९७ लाख
कर्जे	:	९५.०५ लाख
फंडस्	:	८.३८ लाख
गुंतवणूक	:	१२.८७ लाख
खेळते भांडवल	:	१.१६ कोटी

सभासद व विगर सभासद यांचेकडून ठेवी स्विकारल्या जातील

चेअरमन, व्हा. चेअरमन, संचालक मंडळ, मॅनेजर व सर्व सभासद

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री (मौनीनगर)

मा. आमदार श्री. के. पी. पाटील
अध्यक्ष,
श्री दूधगंगा वेदगंगा सह. साखर कारखाना लि. बिद्री
श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री

मा. सौ. मायावती के. पाटील
अधिसभा सदस्या,
शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर

मा. केशवराव शं. पाटील
उपाध्यक्ष,
श्री दूधगंगा वेदगंगा सह. साखर कारखाना लि. बिद्री
श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री

मा. डॉ. आर. एल. राजगोळकर
प्राचार्य,
श्री दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री (मौनीनगर)

संस्था पदाधिकारी

मा. श्री. आर. डी. देसाई
कार्यकारी संचालक, बिद्री कारखाना व
मानद सचिव, श्री दूध साखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री

मा. श्री. एस. एस. चौगले
मुख्य सचिव, बिद्री कारखाना व
श्री दूध साखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री

मा. नामदेवराव शं. भोईटे

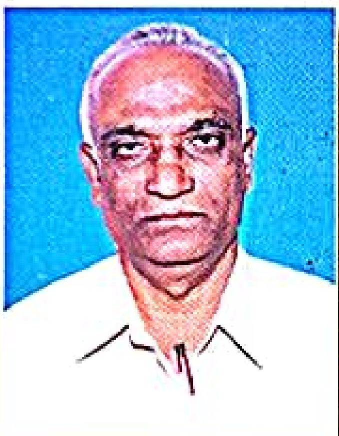

मा. गणपती ज्ञा. पाटील

मा. विठ्ठलराव शि. खोराटे

मा. केरबा द. पाटील

मा. राजेंद्र पां. पाटील

मा. नेताजी कुं. पाटील

मा. पंडीतराव द. केणे

मा. के. जी. नांदेकर

श्री दूधसाखर शिक्षण प्रसारक मंडळ, बिद्री (मौनीनगर)

मा. दिनकरराव भा. जाधव

मा. गणपती गुं. फराकटे

मा. सुनिलराज सु. सुर्यवंशी

मा. बंडीपंत कृ. पाटील

मा. बाजीराव ई. गोधडे

मा. शशिकांत आ. पाटील

मा.सौ. सुवर्णा सं. पाटील

मा.सौ. सविता भि. एकल

मा. रमेश मा. वारके

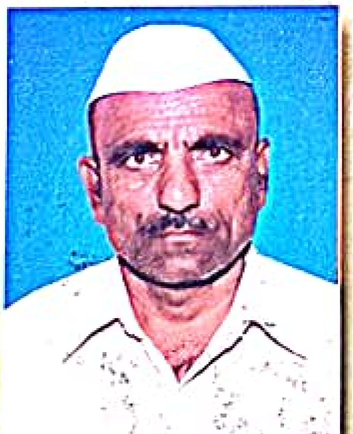

मा. मधुकर गो. जाधव

मा. सुनिलराव शि. कांबळे

मा. ए. वाय. पाटील

राष्ट्रीय सेवा योजना विशेष श्रमसंस्कार शिबीर, येलवळे बु।। ता. कागल

उद्‌घाटक मा. आम. के. पी. पाटीलसाहेब

महिला मेळाव्यात मार्गदर्शन करताना श्रीमती एम.एम. सातवेकर

गाव तलावातील गारवेल निर्मुलन करताना स्वयंसेवक व स्वयंसेविका

ग्रामसफाई करताना स्वयंसेवक व स्वयंसेविका

समारोप प्रसंगी माजी आमदार मा. नामदेवराव भोईटेसो

महाविद्यालयामध्ये रक्तदान शिबीर

स्वामी विवेकानंद व राजमाता जिजाऊ जयंतीप्रसंगी मार्गदर्शन करताना प्रा. एस. आर. पाटील

आमचे गुणवंत

कु. विद्या वंजारे बी.ए.I प्रथम

कु. वैशाली तिरावडे बी.ए.I प्रथम

कु. सुमित्रा कुंभार बी.ए.II प्रथम

कु. पूनम पाटील बी.ए.II प्रथम

कु. शितल पाटील बी.ए. II प्रथम
व हिंदी स्कॉलरशीप

कु. शुभांगी चौगले बी. ए. III प्रथम

संजय देसाई बी. एस्सी I प्रथम

कु. पुनम गोते बी. एस्सी II प्रथम

मारुती पाटील बी.एस्सी III प्रथम

अरुण आरडे बी. एस्सी. III प्रथम

कु. स्वप्नाली साळोखे बी.सी. एस. I प्रथम

हिंदी स्कॉलरशीप →

कु. शोभा रक्ताडे-पाटील बी.ए. III

रोहन डोणे बी.ए. III

हार्दिक अभिनंदन !

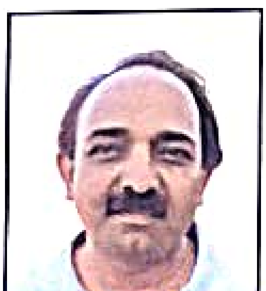

प्रा. डॉ. एम. व्हि. टाकळे
भौतिकशास्त्र विषयात पीएच.डी

प्रा. डी. एन. पाटील
इंग्रजी विषयात एम. फिल

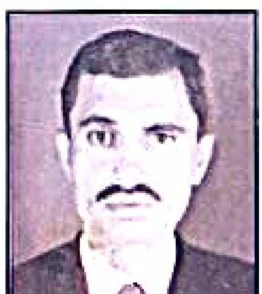

प्रा. एस. एच. पाटील
संख्याशास्त्र विषयात एम. फिल

प्रा. एस. ए. गंगावणे
विद्यापीठ अनुदान आयोगाचे
संशोधन अनुदान

श्रध्दांजली

कै. कु. सीमा सदाशिव कुसाळे

बी. ए.।

हल्दी-कुंकुम समारोह धार्मिक या सांस्कृतिक

भारत देश विविधपूर्ण है। यहाँ धर्म, भाषा, जाति, प्रांत आदि सभी में, विविधता दिखाई देती है। हर धर्म की रुढियाँ, परंपराएँ अलग-अलग है। हर धर्म के प्रचार की और प्रसार की पद्धतियाँ भी अलग-अलग है। हिंदू धर्म में हल्दी-कुकुंम को महत्वपूर्ण स्थान है। कुंकुम तो भारतीय सुहागन का गहना होता है। चैतन्य का प्रतीक होता है।

कुंकुम हल्दी से बनाया है। हल्दी, चूना और नींबू इकठ्ठा करने पर कुंकुम तैयार होता है। वैसे ही स्त्री-पुरुष दोनों भिन्न देह के, भिन्न स्वभाव के होने पर भी भावनिक और बौद्धिक स्तर पर निरंतर रुप में इकठ्ठा आते है। और उनका गृहस्थ जीवन शुरु होता है। कुंकुम स्त्री को सीख देता है कि, कुछ भी हो, एक दूसरें में मिल जाना चाहिए। अलग नही होना चाहिए। ये सुहागिनें धार्मिक विधि के बहाने इकठ्ठा आ जाती है। और अपने विचारों का आचारोंका सुख-दुख का आदान-प्रदान करती है। इससे समाज प्रबोधन को प्रेरणा मिलती है। यह देखकर मन में प्रश्न निर्माण होता है कि हल्दी-कुंकुम समारोह को धार्मिक कहा जाए या सांस्कृतिक ?

वैसे इसे हम धार्मिक भी मानते है और सांस्कृतिक भी। हिंदू धर्म मे पुरुष को शिव का प्रतीक और स्त्री को को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। स्त्री आपने माथे पर गोल कुंकुमतिलक लगाती है। लाल गोल कुंकुम तिलक दुर्गादेवी का, शक्ति का प्रतीक है। पुरुष अपने माथे पर खडा तिलक लगाता है। वह अपने में समाहित शिव रुप की पूजा करता है। माथे पर अपने मन की आत्मिक शक्ति केंद्रिभत होती है। इस तरह हल्दी-कुंकुम का आध्यात्मिक महत्व है।

अपने-अपने परिवार में स्त्री अनेक भूमिकाएँ निभाती है। उसे परिवार की अनेक जिम्मेदारियाँ उठानी पडती है। इसलिए उसे इन से थोडा सा छुटकारा मिले इसलिए ऐसे समारोहों की आवश्यकता होती है। ऐसे समय स्त्रियाँ सर्वधर्म समभाव से बर्ताव करती है। जात-पात का भेदभाव भूल जाती है।

धर्म और राजनीति एक दूसरे से एकदम अलग-अलग है। फिर भी आज के राजनीतिज्ञ राजनीति के लिए धर्म का गलत उपयोग कर रहे है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। राजनीति में धर्म का उपयोग करना याने भारतीय राज्यघटना के विरूद्ध कदम उठाना है। आज हल्दी-कुंकुम जैसे समारोहों का गलत उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक रुप के बजाए उसे राजनीतीक रुप प्राप्त होता है। ऐसे समारोहों का आयोजन करके अपने पक्ष का प्रचार किया जाता है। मतदान करने का आवाहन किया जाता है। महिलाओं को आकर्षक भेट वस्तुएँ दि जाती है। उपहार राजनीतिज्ञों की दृढ धारणा है की धर्म का उपयोग राजनीति में किया जाए तो निश्चित यश मिलता है। जैसे कि राम मंदिर और बाबरी मस्जिद का विषय।

तात्पर्य यह है कि राजनीति में संस्कृति, धर्म, जातिभेद, आदि से निश्चित ही सकारात्मक वातावरण तैयार किया जाता है। पर राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बनना है या नहीं यह हमें सोचना है।

कु. शिल्पा पाटील

बी.ए. ।।

जातियवाद भयंकर समस्या

''दस कोस पर बदले पाणी
दस कोस पर बदले वाणी

इस काव्य पंक्ति से स्पष्ट होता है कि, हिंदूस्तान में अनेक धर्मो के अनेक जाती के लोग इकठ्ठा रहते है। उनके अलग अलग वेश और उनकी भाषा अलग-अलग है, उनके त्योहार भी अलग है फिर भी ये एक ही देश में रहते है। लेकिन क्या ये सचमूच मिलजुलकर रहते है नही? ये आपस में झगडते हैं क्यो?

स्वतंत्र पूर्व काल से लेकर यह जातिभेद कि समस्या आज २१ वीं सदीमें भी नही बदली, आज भी जाति धर्म के नाम पर झगडे होते है। जब स्वतंत्रपूर्व काल था तब चार वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र इनमे इनके धर्मो याने वर्ण नुसार काम दिये थे इनमें इसी कारण उच्च-नीचता थी। आज विविध जाति-उपजाति है। जब हिंदूस्थान स्वतंत्र हुआ तो कश्मिर के लिए हिंदू और मुस्लिम झगडने लगे तब से लेकर आजतक यह झगडे शुरु है।

१९९३ के बाद से लेकर बम्बई में २६ नवबर २००८ को बम्बस्फोट हो गया ये तो आप को, मालुमही है। तब बम्बई में ताज हॉटेल, नरिमन हाऊस, ओबेरॉय होटल आदि महत्वपूर्ण स्थानोपर यह बम्बस्फोट करवाने वाली संघटना का नाम लष्कर-ए-तोयबा है और यह संघटना पाकिस्तानी है।

कुछ ही दिन पहले कि बात है, मिरज इस शहर में जातिय फसाद हो गए। इसका कारण था गणेशोत्सव मंडल के स्वागत कमानी पर लगाया गया अफजलखान वध का पोस्टर यह कारण लेकर मुस्लिमों ने झगडा शुरु किया पत्थर फैके, गाडीयॉ जलाई। इसकारण बहुतसा आर्थिक नुकसान हुआ। और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से बिगड गई।

इन सब करणों से यही दिखाई देता हैं कि आज भी समाज में जातिभेद माना जाता है। इसीके कारण वित्तहानि, मनुष्यहानि तो होती ही है साथमें मानसिक तनाव भी बड जाता है।

आज हम सभी हिंदूस्थान में रहते है लेकिन क्या हम एक ही जाति-धर्म के है? नहीं लेकिन फिरभी हम आज चाहे मुस्लिम हो या हिंदू उनके त्यौहारो में उत्साह से सहभाग लेते है। उनके मंदिरो, मसिदो, गुरुद्वारा में भी जाते है तो फिर भी यह भेद क्यो? हम मिलजुलकर रहकर भी क्यों झगडे करते है। आप को एक गाना मालून है,

''वेगवेगळी माती जरीही
एकच आहे भूमी
हिंदू, मुस्लिम, शीख, इसाई
सारे एकच आम्ही

हे ये गीत हम क्यों गाते है? उसतरह क्या सचमूच हम जीते है? अलग अलग मिट्टी हो लेकिन भुमि तो एक ही है उसीतरह अलग धर्म-जाती हो फिर भी हम यह क्यो नहीं समझते कि, मानवताही सच्चा धर्म है। हम इकदूसरे से लड झगडकर इक दूसरे का खून बहाकर अपना जीवन व्यंर्थ बीता रहे है। यह हिंदूस्तान तो एक बगीचा है, और ये लोग इनमे लगे हुए विविध रंग-रुप के फुल है हमे ये सब झगडे छोडकर मिलकर रहना चाहिए न जाने ये लोग क्यों नही समझते कि,

चाहे हो धर्म अलग-अलग
खून तो एक ही है,
चाहे हो वर्ण-वंश अलग
रहते तो हिंदूस्थान में ही है

यह ध्यान में लेकर हमे मिलजुलकर रहना चाहिए। जातिभेद एक भयंकर समस्या है, उसे हमे मिलकर मिटाना है।

कु. निता पाटील
बी.ए. III

मानव धर्म धर्म है केवल और सभी कुछ भ्रम है।
सब पर प्रेम दुलार लुटाना यही धर्म का क्रम है।।
''चित्रकूट''

रामेश्वर दयाल दुबे

हिंदी विभाग

डॉ. देसाई एस. बी.

अनुक्रमणिका

गद्य	१)	हल्दी -कुंकुम समारोह---	कु. शिल्पा पाटील	३
	२)	जातियवाद भयंकर समस्या	कु. निता पाटील	४
	३)	दोस्ती	कु. पद्मावती पाटील	५
पद्य	१)	छोड दिया	कांबळे रणजीत	६
	२)	दिल की बात	सचिन फराकटे	६
	३)	जोक्स	कु. प्राजक्ता सुतार	७
	४)	प्यार	पंडीत फराकटे	७
	५)	होना जरुरी है	कु. शितल पाटील	७
	६)	दोस्त	विनायक पाटील	७
	७)	ऐसा कोई	अमीत फराकटे	८
	८)	जिंदगी और मौत	श्रीकांत फराकटे	८
	९)	बचपन	कविता पाटील	९

जोक्स्

टीचरजी - सोनू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?
सोनू - मास्टरजी, गिर गया था और लग गंई
टीचरजी - कहाँ गिरे थे और कहाँ लग गई
सोनू - बेडपर गिर गया था और आँख लग गई

दुनिया मे बेवफाओं की कमी नहीं है,
अब सूरज को ही देखो,
वह आता है, उषा के साथ,
रहता है, किरण के साथ,
और जाता है, संध्या के साथ ।

कु. प्राजक्ता महादेव सुतार
बी. ए. ।

होना जरूरी है।

कमरे में सोफे का, शादी में तोहफे का,
किचन में टोस्टर का, स्कूल में मास्टर का,
होना जरूरी है।
चाय में शक्कर का, नल में वॉटर का,
सर्दियो में स्वेटर का, होटल में वेटर का,
होना जरूरी है।
थिएटर में पिक्चर का, कॉलेज में लेक्चर का,
बस में चेकर का, बैंक में लॉकर का,
होना जरूरी है।
दूकान में सेलर का, जेल में जेलर का,
समाज में अखबार का, और
दूधसाखर महाविद्यालय में हमारा होना जरूरी है।

कु. शितल पाटील
बी.ए. ।।।

प्यार

प्यार तो सब करते है,
लेकिन सच्चा प्यार वही करते है,
जो प्यार को गहराई से जानता है,
प्यार तो भगवान की देन है,
जो जिंदगी सँवारता है।
प्यार में जीना तो जीना होता है,
वरना बेकार का रोना होता है।
माँगने से कब मिलता है प्यार,
वह तो दिल की पुकार है यार।

पंडीत फराकटे
बी.ए. ।।

दोस्त

निशानेपर लगता है,
उसे कहते तीर,
दिल में उतर जाए,
उसे कहते हैं तस्वीर,
आप जैसे दोस्त को पाना,
उसे कहते ही तकदीर।

विनायक पाटील
बी. ए.।।।

ऐंसा कोई

काँटो के इस सफर में,
कोई फुल बिठायेगी राहो में,
ऐसी कोई जीवन साथी,
आएगा मेरे जीवन में ?

ऑधियाँरे इस जीवन को,
क्या बदलेगी कोई रोशनी में,
ज्यादा नहीं पर थोडासा रंग प्यार का,
भर देगी कोई जीवन में ?

इस जीवन की जंग मे,
बनेगी मेरी ढाल जो,
क्या ऐसी कोई साथी,
आयेगा मेरे जीवन में ?

तो मैं भी बनके दीपक,
रहुँगा उस ज्योति का,
क्या ऐसा कोई प्यारा साथी,
आयेगा मेरे सुने-जीवन में ?

अमित फराकटे
बी.एस्सी. ।।।

जिंदगी और मौत

क्या है जिंदगी ?
किसे कहते है जीना ?
क्या है मौत ?
किसे कहते है मरना ?

दूसरोंको गम देकर,
जीना भी क्या जीना,
क्या पाया क्या खोया,
खाली हाथ तो जाना ।

जानवर की मौत पाकर,
मरना भी क्या मरना ?
अमर पुण्य को छोडकर,
पाप लेकर क्या करना ?

दूसरों के गमों को बाँटकर,
अपना सुख उन्हें देना,
अपनों के साथ साथ,
दूसरोंके लिए भी जीना ।

जो जो आये धरती पर,
उनको एक दिन जाना,
कुछ और नहीं चाहता,
मुझे दूसरों के लिए है मरना ।

श्रीकांत फराकटे
बी.एस्सी. ।।।

दोस्ती

'दोस्ती' इस शब्द का अर्थ बहुत कम लोगों को ही समझ में आता है। दोस्ती यह आपस में बाते करने से या एकसाथ रहने से नही होती बल्कि विचारों के माध्यम से निर्माण से निर्माण होती है। सच्चा दोस्त तो सूरज के समान होता है क्योंकि उसके पास रहने से पूरे प्रकाश में रहने का भास होता है।

इस दुनिया में हर एक मनुष्य दोस्त के बिना अधुरा है। इसलिए उसके जीवन में दोस्त या सहेली होती है। 'दोस्त' इस शब्द में बहुत बडा अर्थ छुपा होता है। दोस्ती में सबकुछ चलता है, जैसे एक दूसरे पर गुस्सा बहुत करना, डाँटना, हँसी, मजाक उडाना अथवा हक से कुछ माँग लेना इस प्रकार की बहुत बाते जो शब्दों में नही कह सकते तो वो सब दोस्ती में चलता है। सभी को दोस्ती करनी ही चाहिए। जिसके जीवन में दोस्त नही होता वह मनुष्य बहुत कम नसीबवाले होते है, ऐसा मुझे लगता है। हर मनुष्य को दु:ख, मुसीबते होते है और उसमें आधार देनेवाली दोस्ती ही एक रिश्ता होता है। दोस्ती यह तो लडकी-लडकी, लडके-लडके की अथवा एक लकडा और एक लडकी इनमें भी दोस्ती होती है। कोई अपने भाई-बहन, माँ-बाप से तो कोई दादा-दादी से दोस्ती करता है। दोस्ती यह घरवालो से कम पर बाहरवालों से ज्यादा होती है। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि, खून के रिश्तो से ज्यादा दोस्ती का रिश्ता प्यारा और श्रेष्ठ होता है। और यह बिल्कुल सही है। क्योंकि हम जितना दिल खोलकर दोस्त या सहेली से बोल सकते है, उतना-अन्य लोगों से नही बोल सकते। हम अपनी सभी मुसीबते दोस्त या सहेली से बाँट सकते है। फिर वह कौनसी भी बात हो एक दूसरे में आदर विश्वास या प्रेम हो तो दोस्ती बनी रहती है।

एक खुशी काफी है,
पलभर गम भुलाने के लिए।
एक गम काफी है,
जिंदगीभर रूलाने के लिए।
मगर एक दोस्त काफी है,
जिंदगीभर हसाने के लिए।

जिस तरह प्यार मे विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। ठीक उसी तरह दोस्ती में भी एक दूसरे का विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। दुनिया में दोस्ती जैसा पवित्र रिश्ता और कोई नही है। पर कुछ लोग इस पवित्र रिश्तो को अपवित्रता का कलंक लगाते है। जैसे एक लडकी ने लडकी से दोस्ती की तो कोई कुछ नही कहता पर उसी लडकी ने एक लडके से दोस्ती की तो समाज के लोग एक ही रिश्ते से उन्हे देखते है। लोगों को लगता है की उनमें दोस्ती का रिश्ता न होकर प्यार का रिश्ता है। ईश्वरने मनुष्य को दो आँखे दी है फिर भी वह एकही दृष्टि से देखते है। वे यह नही सोचते कि, वे एक दुसरे के सच्चे दोस्त हो सकते है अथवा वे एक दूसरे को भाई-बहन मानते हो। पर लोग इस दो पवित्र रिश्तों का विचार न करके सिर्फ गलत ही विचार करते है। पर मैं ऐसा भी नही कहती कि प्यार का रिश्ता अपवित्र है बल्कि वह पवित्र और ईश्वर की देन है। सिर्फ बुरे विचार करनेवाले लोगों को मेरी बिनती है कि उन दोनों मे से रिश्ता जाने बगैर किसीको गलत न समझे। इसीलिए हर लोगों को दूसरे के जीवन में दखल अंदाजी के बजाए अपना स्वयं का जीवन अच्छे ढंग से बिताए। और बुरे लोगों को मैं कहना चाहती हुँ कि,

जिस प्रकार मन की भाषा मन को समझाती है,
उसी प्रकार दोस्त की भाषा दोस्त ही समझता है,
दोस्त ही जीवन में सुख और खुशी की देन है,
जीवन के दु:ख में दोस्ती के अमृत का एक बुँद काफी है।

कु. पाटील पद्मावती दत्तात्रय
बी.ए. ।।। (हिंदी विभाग)

छोड दिया

मेरे दिल में बसा है प्यार तेरा,
उस दिल को तुमने तोड दिया,
बदनाम ना करेंगे हम तुम्हें ,
तेरा नाम लेना छोड दिया।

जब याद तुम्हारी आएगी,
समझेंगे तुझे कभी चाहा ही नही,
राहो मे अगर मिल जाओगे,
समझेंगे तुम्हे कभी देखा ही नही।

जिन राहों से तुम गुजर जाती हो,
उन राहों से चलना छोड दिया,
किस्मत से अगर, कोई मिल भी जाए,
दिल से नाता जोडना भी छोड दिया।

कु. कांबळे रणजीत पांडूरंग
बी.एस्सी. ।

दिल की बाते

तुम्हे चाह कर भी पा न सकूँगा,
दिल की बात बता न सकूँगा,
हम तुम मिले ना सही,
तुम्हे हरदम दिल में बसा के रखूँगा ।।१ ।।

मोहब्बत और फर्ज की जंग में,
किसी को भुला न सकूँगा ,
माफ करना मगर,
चाहकर भी मोहब्बत को अपना न सकूँगा ।।२ ।।

तेरी वफा को याद रखूँगा,
तेरे खयालों को जुदा कर न सकूँगा,
माफ करना मगर,
चाहकर भी वफा कर न सकूँगा ।।३ ।।

ये दिन काट न सकूँगा,
रात बीता न सकूँगा,
सच कहता हूँ मगर,
जिंदा तो रहूँगा पर जी न सकूँगा ।।४ ।।

सच कहता हूँ मगर,
जिंदा तो रहूँगा पर जी न सकूँगा ।।

सचिन फराकटे
बी.ए. ।

माझी आजी

स्वप्नाहूनी सुंदर, फुलापेक्षा छान,
अशी होती माझी आजी एक महान ।।

वैभव मिळविले तिने कष्ट केले फार।
तिचे सर्वांच्यावर प्रेम होते अपार।।

करायची ती दीन दुबळ्यांना दान।
म्हणून तर लहान-थोर तिचा ठेवायचे मान ।।

चालायचा सारीकडे तिचा सरकार।
जणू भासे ती आहे मोठा सरदार।।

रात्र होताच तिच्या सावल्या विरल्या।
खरंच सांगते हृदयात फक्त तिच्या आठवणी उरल्या

तुझ्या आठवणीने अश्रू उभे दाटतात।
पुन्हा येशील घरी म्हणून सर्वजण वाट पाहतात।।

फार लवकर गेलीस आजी आमच्यामधुनी सरुनी ।
आशीर्वाद दे आम्हाला भरभरूनी।।

पुन्हा एकदा आजी परत येशील हीच एक आशा
आता करू नकोस कोणाची निराशा।।

कु. आशा फराक्टे
बी. ए. ।।

◆◆◆

मैत्री

अफाट पसरलेल्या या जगात,
आपल म्हणून कोणी असतं सुख-दु:ख
जाणायला हक्काच माणूस असतं
भरकटलेल्या पावलांना
दिशा देणारं कोणी असतं,
आपल्यावरच्या त्यांच्या प्रेमालाच
'मैत्री' हे नाव असतं...!

कु. उज्ज्वला जाधव
बी.ए. ।।।

ती मुलगी मराठी असते !

कंपनीमध्ये अनेक सुंदर मुली असतात,
पण जी गोड लाजते,
ती मुलगी मराठी असते.

कंपनीमध्ये मुली जीन्स घालून येतात,
पण जी जीन्सबरोबर पायात पैंजण घालते,
ती मुलगी मराठी असते.

कंपनीमध्ये अनेक मुली असतात,
पण वात्रटपणा केल्यावर कानाखाली वाजवते
ती मुलगी मराठी असते.

कॉलेजमध्ये अनेक मुली असतात,
स्वत:च्या नोटस् सहज दुसऱ्याला देते
ती मुलगी मराठी असते.

शॉपिंगलाही अनेक मुली जातात,
खर्चाचा विचार करून फक्त कानातलं घेऊन येते
ती मुलगी मराठी असते.

प्रेम सगळेच करतात,
पण आयुष्यभर कुठल्याही परीस्थितीमध्ये
जी प्रेमाने साथ देते
ती मुलगी मराठी असते.

कु. नीलम उदय दाभोळे
बी. एस्सी. ।

◆◆◆

आठवण

भेटाव फार वाटत,
लिहाव फार वाटत,
आठवणीने तुझ्या,
मन माझं बेभान होत.

आठवतात त्या गोष्टी,
आठवतात ते दिवस,
विसरून कसा जाऊ,
मंतरलेले ते दिवस.

तू आठवलीस की,
आठवत तुझ ते हसण,
सगळ्यांना एकत्र करून,
विनोद एखादा सांगण.

विनोद एखादा सांगता-सांगता,
गोष्ट एखादी सांगणं,
आणि सर आले की,
सगळ्यांच्या आधि पळून जाण.

वर्गाच्या कोपऱ्यात गप्पा रोज मारण,
मी आलो नाही म्हणून संताप करण,
मी आलो की विनोद एखादा माझ्याजवळ सांगण,
मी हसण्यापूर्वी तूच मोठ्याने हसण.

किती किती आठवू तुला,
तू मला विसरली नाहीस ना ?
का मी भांडण करतो म्हणून,
तू अशी रुसलीस का ?

खरंच आपण भेटलो होतो,
की ते एक स्वप्न होत,
सांग सांग दशरथा,
का तुझ्या रामाला असं वनवासात पाठवलंस.

महेश (पवन) मच्छिंद्र पाटील
बी. ए. III (हिन्दी)

◆◆◆

यात माझंही नाव असावं

अबोलीच्या फुलागत दरवळण्यापेक्षा
तू गुलाबाच्या फुलागत दरवळाव
त्याकडे बघणारं कुणीतरी असाव
यात माझंही नाव असाव

तु कुणाशी तरी बोलाव
बोलता बोलता गालात हसाव
हसण्यातही प्रेम दिसाव
यात माझंही नाव असाव.

नकळत कुणाच्यातरी प्रेमात पडाव
प्रेम इतकं मनापासून द्याव
की त्यात स्वत:लाही विसराव
यात माझंही नाव असाव.

तू कुणाबरोबर तरी फिराव
फिरता फिरता नदी काठी जाव
जाता जाता थोडंस गाव
यात माझंही नाव असाव.

मनाचा हेवा प्रेमच असाव
तुझ्या भावनांशी खेळणारं असाव
परतूं भावना विसरणार नसाव
यात माझंही नाव असाव.

तुला सुंदर स्वप्न पडाव
त्यात रात्रीचं चांदण दिसाव
स्वप्नात बरोबर कुणीतरी असाव
यात माझंही नाव असाव.

सुखदेव सदाशिव पाटील
बी.ए.

◆◆◆

माझ्याजवळ कोण असत?

जेव्हा डोळे मिटूनी मी बसतो,
तेव्हा डोळ्यात तुझीच प्रतिमा असते,
चेहरा तुझा मनात असतो,
आरसाही बघत असतो निर्विकारपणे,
तेव्हा माझ्याजवळ कोण असत ?
तू वचन दिले नाहीस तरी,
तुझीच वाट पाहात असतो,
दिवस रात्र स्वप्न बघत,
तुझ्या आठवणीत रमतो तेव्हा,
माझ्याजवळ कोण असतं?
ओठ मिटलेले असतात,
खास वेगात चालतो,
नजरेत व्याकुळता असते,
काळीज जवळ असत तेव्हा,
माझ्याजवळ कोण असत ?
तू मला सोडून गेलीस,
म्हणून जग मला हसत,
त्यांना प्रेमातल काय कळत,
तेव्हा माझ मन उदास होत,
तेव्हा माझ्याजवळ
कोणी कोणी नसत...!

सागर भाऊ पाटील
बी. ए. ।

◆◆◆

तुझ्याचसाठी

तुझ्यासाठी सजणं,
तुझ्यासाठी सवरणं,
पण तूच नाहीस म्हटल्यावर,
व्यर्थ वाटतं जगणं,
तुझ्याकडे पाहून हसणं,
तुझ्या बोलण्यावर लाजणं,
शब्दही असतात माझे,
तुझ्याचसाठी खास,
पण तू नसतेस,
हे असतात फक्त,
माझ्या मनाचे भास,
डोळे माझे तुझी वाट पाहतात,
रात्र रात्र जागतात,
पण तू येतच नाहीस,
आणि ते भरभरून वाहतात.

श्रीधर शिवाजी पाटील
बी. ए. ।।। (हिंदी)

कधीतरी असेही जगून बघा

कधीतरी असेही जगून बघा...
माणूस म्हणून जगताना,
हा एक हिशोब करून तर बघा,
''किती जगलो'' याऐवजी कसे जगलो?
हा एक प्रश्न जरा मनाला विचारून तर बघा,
कधीतरी असेही जगून बघा...

कधीतरी एखाद्यावर विनोद करण्याआधी
समोरच्याचा विचार करून तर बघा,
तर कधी कोणाच्या हास्यासाठी, समाधानासाठी
न आवडलेल्या विनोदावरही हसून तर बघा
कधी असेही जगून बघा..

संकटांमुळे खचून जाणारे तर शेकडोंनी मिळतात
कधीतरी अडचणीवर मात करण्याची हिम्मत दाखवून तर बघा..
स्वत: पुरता विचार तर नेहमीच करतो आपण
कधीतरी बुडण्यासाठी काठीचा आधार होऊन तर बघा
कधी असेही जगून बघा

वर्तमान आणि भविष्याची चिंता तर सदाचीच असते
कधीतरी भूतकाळाच्या विश्वात गुंगून तर बघा।
काळाची वाळू हातातून निसटली म्हणून काय झाले?
आधी अनुभवलेला क्षण पुन्हा एकदा जगून तर बघा।
कधी असेही जगून बघा।।

प्रतिसादाची काळजी का करावी नेहमी ?
एखाद्यावर जिवापाड, निर्मळ, एकतर्फी प्रेम करून तर बघा

कु. विद्या कृष्णात फराक
बी. एस्सी. ।।

◆◆◆

मन

मन म्हणजे काय असत....
चंचलपणाचं ते प्रतीक असत...!
दिसता दिसतही नसत...
अन्, थांबता... थांबतही नसत....!!

कमळाच्या पानावरील...
दवबिंदूचं स्वरूप असत...!
व्यक्ती व्यक्तीच ते...
प्रतीबिंब असत...!!

राखेतून जन्म घेणाऱ्या...
फिनिक्स पक्ष्यासारख ते असत...!
चैतन्याने भारलेल्या...
सुगंधी फुलांचं ते रूप असत...!!

हसायचं की रडायच...
घडायचं की बिघडायच...
जगायचं की मरायच...
या निर्णयाचं स्वातंत्र्य मात्र...
फक्त त्यालाच असत...!!

कु. मनिषा राजाराम कांबळे
बी. एस्सी ।।

◆◆◆

आई

आई म्हणजे मंदिराचा कळस
अंगणातील तुळस.
भजनात गुणगुणावी अशी संतवाणी
वाळवंटात प्यावं असं थंड पाणी.
आरतीत वाजवावी अशी लयबद्ध टाळी
आणि वेदनेनंतरची पहिली पहिली आरोळी.

कु. गीतांजली शिवाजी माजगावकर
बी. एस्सी ।।

यश

अपयशाला टाळून यशासाठी
धरती-पाताळ एक करावं,
यश गाठायचं असेल तर,
अपयशाचं भय बाजूला ठेवावं....

जीवनात यश मिळत नाही,
म्हणून आपण जीव देऊ नये,
यशस्वी जीवन होत नाही,
म्हणून मनासारखं जगायला भिऊ नये...

यश मिळवायचं असेल तर,
प्रयत्नांना जपलं पाहिजे,
यशासाठी उरायचे असेल तर,
अपयशाचे दुःख टिपलं पाहिजे....

कधी यश कधी अपयश,
हा जीवनाचा नियम आहे
यशापयशाच्या चक्रातून,
जाणं हाच जीवनक्रम आहे....

कु. धनश्री पाटील
बी. ए. II

◆◆◆

आठवण

तुझ्या आठवणी अशा आहेत,
जशा भुईवर सांडलेल्या सावल्या,
कधी गोळा करता येत नाहीत.....!

तुझ्या आठवणी अशा आहेत,
जशा सागरावरच्या लाटा,
डोळ्यात साठवून ठेवता येत नाहीत....!

तुझ्या आठवणी अशा आहेत,
मंदिरापुढील पिंपळपाने,
जी कधी मोजता येत नाहीत....!

तुझ्या आठवणी अशा आहेत,
ज्या केवळ तूच तू आहेस,
ज्या कधी कळल्याच नाहीत....!

कु. दीपाली आनंदा पाटील
बी. ए. II

अधुरे प्रेम

नुसते सूचक बोलत राहतेस,
पण प्रेम व्यक्त करत नाहीस,
मी बोलायची वाट पाहतेस,
स्वतः काहीच बोलत नाहीस

माझ्यावर प्रेम करतेस तर,
सांगत का नाहीस एकदा मला
माझं मन जाणतेस तरी
कसली भीती वाटते तुला

पत्र अगदी प्रेमळ लिहितेस,
आणि म्हणतेस फक्त मैत्री आहे,
पण कारण काही वेगळंच आहे,
याची मला-पूर्ण खात्री आहे

आता सोड ना हे लाजण तुझं,
अन् हाक दे माझ्या प्रेमाला,
मनातले शब्द मनातच ठेवतेस,
का छळतेस अशी सांग मला?

विक्रम देसाई
बी. एस्सी. III

◆◆◆

स्पंदन

मला प्रेमात पडायचंय

अमावस्येच्या रात्री मला चांदणं पाहायचंय
आयुष्याच्या या वळणावर,
मला प्रेमात पडायचंय ॥

कधी खळखळून हसणारी,
कधी माझ्याकडे बघून हसणारी,
कधी गाल फुगवून बसणारी,
अशी वेडी शोधायची, दिवसभर तिला बघायचं,
मला प्रेमात पडायचंय ॥

उडणाऱ्या ओढणीचा
ओझरता स्पर्श अनुभवायचा,
गुलाबी ओठांतून माझे नाव ऐकायचं,
स्पर्शाने गुलाबी होणारे तिचे गाल,
ती नजर स्मृतीत कैद करायचीय,
मला प्रेमात पडायचंय ॥

विचाराचं सौंदर्य जिच्या अंगी
संस्काराचे लेणे ज्याच्या ठायी,
अमृतास गोड तिची वाणी,
भोळेपण हा सहज स्वभाव, अशी बाला
जिच्या प्रेमात मला पडायचंय ॥

राम पोवार
बी. ए. ।

◆◆◆

काही शब्द

काही शब्द असे असतात,
उगाचच काळजात रूतून जातात,
लाव्हारसाचे रूप घेऊन,
मेणासारखे वितळून जातात ।

काही स्वप्ने अशी असतात,
उगाचच जीव भारून जातात,
डुंबणाऱ्या नौकेलाही किनाऱ्यानजीक,
तारून जातात ।

काही सूर असे असतात,
उगाचच रुंजी घालून जातात,
आकाश निरभ्र असूनही,
कुठेतरी बरसून जातात ।

अन् काही व्यक्ती अशा असतात,
उगाचच काळजाला वणवा लावून,
उंबराच्या फुलाचे रूप घेतात।

सागर चौगले
बी.ए. ॥

◆◆◆

आठवण

एक दिवस जीवन अशा मुक्कामावर जाणार,
मैत्री तर फक्त आठवणीतच राहणार.
प्रत्येक कॉफी-कप आठवण मैत्रीची देणार,
आणि हसत हसत डोळे अश्रूंनी पाणावणार.
ऑफिसच्या चेंबरमध्ये क्लासरूम दिसणार,
परंतु मनात असून पण दिलासा नाही मिळणार.
पैसे तर आपल्याकडे खूप असणार,
परंतू ते उधळण्यासाठी कारणच नसणार.
जगा आनंदाने या प्रत्येक क्षणांना माझ्या जिवलगांनो,
कारण जीवन हे क्षण तुम्हां परत नाही देणार.

सुयोग साळोखे
बी. एस्सी ॥।

साथ

आकाशातील चांदण्यांना,
चंद्राची साथ होती,
नयनातील अश्रूंना,
भावनांची साथ होती...!

हृदयातील प्रश्नांना,
मनाची साथ होती,
सागरातील लाटांना,
किनाऱ्याची साथ होती...!

मनातील प्रेमाला,
आपुलकीची साथ होती,
गुलाबाच्या पाकळ्यांना,
काट्यांची साथ होती...!

लहान मुलांना,
आईची साथ होती,
जीवनातील माझ्या प्रत्येक क्षणाला,
'श्वासाची' साथ होती...!

कु. तेजस्विनी ठोंबरे
बी.ए. ॥

अभिमान

तुझ ते निरागस बोलण,
मला खूप आवडत,
चार-चौघीतही तुझं वेगळेपण,
अगदी आपसूकच जाणवत ।

तुझ्या डोळ्यात दिसून येतो,
माझ्यावरचा अतोनात विश्वास,
खळखळून हसण तुझ,
खरंच वाटतं झकास ।

तुझा तो मिश्किलपणा,
आणि ते खोड्या करण,
जरा जरी रागावलो मी तरी,
चटकन डोळ्यात पाणी काढण ।

माझा प्रत्येक शब्द
तू किती सहजपणे जपतेस,
साग बर ही कला,
कोणत्या शाळेत शिकतेस ?

तुलाही फुलाप्रमाणे जपण्याचा,
मी आटोकाट प्रयत्न करतोय,
अभिमान वाटतो मला माझा,
की, मी तुझ्यावर प्रेम करतोय ।

शरद चंद्रकांत डावरे
बी. ए. ॥

◆◆◆

प्रीत

माझ्या प्रीतीच्या फुलावर,
होतो दवाचाही भार,
ओठांची थरथर,
ओठांमध्ये.....

भांबावल्या नयनांना,
दिसे तुझाच रे रंग,
उठे सुखद तरंग,
मनामध्ये......

मनात मोरपीस,
चढे गालावर रक्तिमा,
लाजला तो चंद्रमा,
नभामध्ये.......

तुझ्याचसाठी केला
जो हार पापण्यांनी
मनातल्या सुरांनी
मनामध्ये......

माझी मी न राहिले,
आता तुझीच जाहले,
पुरती वेडावले
तुझ्यामध्ये.....

सोनपावलांनी आली,
सख्या, प्रीत तुझ्या दारी
नको पाठवू माघारी
फुलामध्ये......

अनिकेत एकनाथ बकरे
बी. एस्सी ॥

पहिला दिवस

कॉलेजच्या फाटकातून आत जाताना,
कोणतरी हसली,
माग वळून पाहिल तर,
मनात कोणतरी बसली ॥१॥

प्रीतफुलांचा गुच्छ बनुनी केसामध्ये होत,
केस तिचे मखमली, गालीचेच सोनेरी.
मोकळ्या मनाला जागवून,
हळूच कोणी हसल,
चेहरा कुठला शोधत स्वत:च फसलो ॥२॥

समोरून गेली माझ्या एके दिवशी अप्सरा.
जिना चढताना सुद्धा समोरच तिचा देह
हळूच हात गालावरून कानामागे गेला
आणि तो सरळ येऊन,
माझ्या हृदयाला ठसला ॥३॥

कोण परी म्हणू की रंभा,
डोळ्यांना डोळे नाही भिडेना,
असेल ती एक सुंदरा,
कॉलेजच्या जीवनातला पहिला दिवस
पहिली लैलाही बोलत दिसली,
कॉलेजच्या फाटकातून आत जाताना
कोणतरी हसली......

उमेश कुंभार
बी. एस्सी - I

प्रेम

प्रेम, प्रेम करायचे नाही
युपी-बिहारी-मराठी-गुजराती म्हणून
तर प्रेम करत रहायचे
फक्त भारतीय म्हणून ।

प्रेम, प्रेम करायचे नाही
हिंदू-मुस्लीम-ख्रिश्चन, शीख म्हणून
तर प्रेम करत रहायचे
फक्त माणूस म्हणून।

प्रेम, प्रेम करायचे नाही
मुलगी दिसली म्हणून,
तर प्रेम करत रहायचे
फक्त एक मैत्रीण म्हणून ।

मेघराज कृष्णा फराक्टे
बी. एस्सी. ।।। (भौतिकशास्त्र)

◆◆◆

क्षणांतर...

काही क्षण असे येतात
खूप हसावेसे वाटते...
काही क्षण असे येतात
रडण्याशिवाय गत्यंतरच नसते.
काही मन अशी असतात
दुसऱ्यांना फक्त रडवत असतात.
काही क्षण असे येतात
जीवनातील सारी सुख एकाच क्षणी देऊन
जातात.
काही क्षण असे असतात
एकाच सेकंदात सगळ काही हिसकावून घेतात.
काही अनुभव असे येतात
जाता-जाता जीवनाचा खरा अर्थ शिकवून
जातात
काही अनुभव असे येतात
पराभवातच जीत कशी असते ते दाखवून देतात

कु. नीता पाटील
बी. ए. ।।। (मराठी)

मन

मन म्हणजे आपल्या विचारांचं प्रतिबिंब
जसे की श्रावणातल्या पहिल्या पावसातील भिजणं ओलंचिंब

मन म्हणजे वळणावणाचा निसरडा रस्ता
त्यातून चालत असताना खाव्या लागतात मोठ्या खस्ता

मन म्हणजे गार वाऱ्यात झुलणारे, उंच झोके
त्यावर जडलेले असतात आपले हृदयाचे ठोके

मन म्हणजे बेधुंद लाटांची लहर
त्याला असते नक्षीदार शंख-शिंपल्यांची झालर.

मन म्हणजे असतो आठवणींचा चुडा
जसा की सुगंधी, मंत्रमुग्ध करणारा फुलांचा सडा

मन म्हणजे भिंतीतील नाजून शिल्पकार
त्याप्रमाणे आपण मनाशी केलेले असतात निश्चय ठाम

मन म्हणजे सुख दुःखाचे तरंग अपार
त्याच परीक्षा पार करत जायचे असते समुद्रावर

मन म्हणजे अमर्याद आशा-आकांक्षाचा सागर
जसे की तिन्ही ऋतुंत फुलणारी पांढरीशुभ्र तरंग

मन म्हणजे निजर्जल खळाळते पाटाचे पाटी
त्याच ठिकाणी म्हटली जातात आयुष्याची गोड गाणी

कु. राजश्री दिलीप कुलकर्णी
बी. एस्सी.।।।

नशीब

नशिबात जे असत ते घडत,
म्हणून नशिबाला दोष द्यायचा नसतो,
नशिबात जे घडल नाही म्हणून
निराश व्हायच नसत,
येणाऱ्या संकटाला सामोर जायच
असत.

मनात दुःख ठेवून हसायच असत,
यालाच तर जीवन म्हणायच असत
आपण नशिबाच्या हातात नाही तर
नशिबाला आपल्या हातात घ्यायचं
असतं.
यालाच जगण म्हणायच असत.

नशिबात एकदा हरलो म्हणून
जीवन संपवायच नसत.
नशिबाला पुन्हा घडवायच असत
त्यातच स्वप्नांना आकार द्यायचा
असतो.

यालाच तर नशीब म्हणायच असत.
यालाच तर नशीब म्हणायच असत.

कु. पूजा अनिल पाटील
बी. ए. ||| (इतिहास)

◆◆◆

कुणीतरी आठवण काढतंय...

हसता हसता डोळे अलगद भरूनही येतील
बोलता-बोलता शब्द ओठी जातीलही विसरून
कावर-बावर होण्यासारख बिलकूल काही नाही
कुणीतरी आठवण काढतंय बाकी काही नाही.

रस्त्यामध्ये दिसतात की चेहरे येता-जाता
एकसारखे दिसू लागतील सहज बघता-बघता
सृष्टीमध्ये दोनच जीव आणखी कुणी नसेल
भिरभिरल्यागत होण्यासारख बिलकूल काही नाही
कुणीतरी आठवण काढतय बाकी काही नाही

मोबाईल वाजण्याआधी तो वाजल्यासारखा वाटेल
जुनाच काढून एस् एम एस् वाचावासा वाटेल
दिवस सरता वाटत जाईल उगाचच उदास
पावलोपावली जड होत जाईल बहुदा श्वास
घाबरून-बिबरून जाण्यासारख काही नाही
कुणीतरी आठवण काढतय बाकी काही नाही

जेवता-जेवता जीवघेणा लागेलही ठसका
घरचे म्हणतील सारखा कसा लागतो उठता-
बसता
चेहरा लपवत डोळे पुसत पाणी प्यावे थोडे
बोलण्याआधी आवाजाला सांभाळावे थोडे
सांगून द्याव, काळजीसारख बिलकूल काही नाही
कुणीतरी आठवण काढतंय बाकी काही नाही
I Miss My All Friends बाकी काही
नाही.

विजय ईश्वरा कांबळे
बी. ए. ||

न घडलेली भेट

येण्याच वचन देऊनही तू आली नाहीस

वेळ जात होता आणि मला बधीर करत होता तरीही तुझ्या हव्याहव्याशा सहवासाला मुकलो म्हणून नव्हे तर,

नाराजी दूर करण्याची क्षमता असलेल्या अनुकंपेचा तुझ्यातील अभाव पाहून मला दु:ख झाले केवळ मानवतेपोटी जन्माला येणारी कणवही तुझ्यात शिल्लक राहिलेली दिसत नाही.

तुझं माझ्यावर प्रेम नाही हे दिसतच आहे कारण केवळ प्रेमच तुझ्यामध्ये प्रामाणिकपणा निर्माण करू शकते.

हे मला माहीत आहे आणि होते.

परंतु मानवाने जी महान कार्ये केली त्यांना स्मरून तरी

तू तुझ्या आयुष्याचा तासभर माझ्यासाठी खर्च केला असतास,

तर मी एवढं तरी निश्चित म्हणू शकलो असतो की,

एका स्त्रीने एका काळान ओरखडा काढलेल्या मनावर फुंकर घातली.

तिचं त्याच्यावर प्रेम नसतानाही......

विशाल यशवंत भोई
बी. ए. ||| (इंग्रजी)

मला वाटतं

मला वाटत मी एक स्वच्छंदी पक्षी व्हाव
आकाशात उंच भरारी घेऊन सार जग बघाव
मला वाटत मी एक नदी व्हाव
साऱ्यांची दु:ख घेऊन सुख देऊन जाव
मला वाटत मी तेजस्वी सूर्य व्हाव
साऱ्या जगाला प्रकाश देत रहाव
मला वाटत उंच पर्वत व्हाव
संकटावर मात करून ताठ मानेन जगाव
मला वाटत पृथ्वी व्हाव
सुख-दु:खात सर्वांना सामावून घ्याव

विश्वजीत उर्फ कपिल देसाई
बी. एस्सी ||| (रसायनशास्त्र)

◆◆◆

आठवणीत DMB च्या

आठवणीत DMB च्या
नकळत विरघळेन मी,
पाने पलटताना आयुष्याची
मलाच विसरेन मी.
नाते DMB शी
असेच तुटेल का ?
मी विसरीन या आठवणींना
मलाच पटेल का ?
गुरुवर्य, मित्र, मैत्रिणी
आयुष्याच्या वळणावर आठवतील ;
आठवणींच्या साठवणीतले अश्रू
नकळत गालावर येतील.
DMB च्या कुशीत
भरारीचे शिक्षण मिळाले
पाखरांचे होऊन पक्षी
इथेच ध्येय साध्य झाले.....

किरण पाटील
बी. एस्सी. कॉम्प्युटर |||

कधी कधी

कधी कधी अस होत
मनीच आभाळ भरून येत
भारल्या तारकात रित वाटत....
कधी कधी अस होत
कोसळत्या तुफानी पावसात
मन मात्र कोरडंच राहत....
कधी कधी अस होत
आनंदाने ओठ हसतात
डोळे उगाच भरून येतात
कधी कधी अस होत
सर्व सुखे भोगीत असताना
भरल्या घरात एकाकी वाटत....

ऋषिकेश चौगले.
बी. ए. ॥

♦♦♦

मुखवटा

आकर्षणाच्या मार्गाने नजरेस नजर भिडली।
नवी पालवी प्रीतीची पुन्हा नव्याने फुलली।
खोट्या शपथांना तिच्या भुलली
उद्यानातील भेट पहिली।
भूक, तहान, अन झोपेची
होती आता विसर पडली ।
इतरांशी बोलणारी वाक्ये ती पुन्हा माझ्याशी बोलत असे
भावूक होऊन मी मात्र तिच्या कोमल स्वरांना भुलत असे
सौंदर्याच्या मुखवट्यामागून कूटनीती करायची ।
माझ्यासह कित्येकांना ती ध्येयावाचून झुलवायची
भातुकलीचा खेळ असा कित्येकांशी खेळशील ?
अजून किती निष्पापांचा 'नखऱ्याने' घात करशील ?

विशाल बा. पाटील
बी. एस्सी. ।।।

कुणीतरी असावं

माझ्याच विचारांनी दिवस सुरू करणार असाव।
काळजी घे स्वत:ची म्हणताना कळवळणार असाव
आई-बाबा सोबत असताना फोन कट करणार नसाव
त्यांना कळणारही नाही इतक्या सहजतेने बोलणार
असाव
दिवसभर माझ्या फोनची वाट पाहणार असाव।
फोन का केला नाहीस म्हणून तक्रार करणार असाव।
प्रत्येक दिवशी मला भेटण्याची ओढ असणार असाव।
सुट्टीच्या दिवशी वेळ काढणार असाव।
बोलून दिवसभराचा कंटाळा घालवणार असाव।
डोळ्यातील भाव समजणार मन तिच असाव।
एखाद्या भावनिक क्षणी डोळ्यात पाणी आणणार असाव
खरंच माझ्यावर जीवापाड प्रेम करणार कुणीतरी असाव.

विनायक बाजीराव पाटील
बी. ए. ॥

♦♦♦

कॉलिंग करायचं राहून गेलं

पाहताच क्षणी तुला,
हृदयात झाला माझ्या मिस कॉल,
ठेवला सेव्ह करून तुझा मिस कॉल,
आणि केला मेमरी कार्डमध्ये,
तुझा एक नवीन फोल्डर....

खूप ठरवलं तुला कॉल करण्याचं,
कनेक्टिंग चांगलं होत होत म्हणून,
पण आलीच नाही मला रेंज,
कारण भीती होती कॉल ॲबॉर्टेड
होण्याची

खूप प्रयत्न केला, तुला कॉल करण्याचा,
दुसऱ्या हॅन्डसेटमार्फत,
पण त्याच्याकडूनही मिळाली नाही रेंज
त्यामुळे काही दिवसांकरता, तू न आल्याने,
गेलो मी आउट ऑफ रेंज...

पुन्हा कॉल करण्याचं ठरवलं, तेव्हा
वाटलं
बऱ्याच गॅपमुळे तुझ्या दृष्टीने मी
कव्हरेज क्षेत्राच्या बाहेर गेलेलो असावं,
आणि इम्पॉसिबल ते पॉसिबल झालं,
हळहळू माझ्या मेमरी कार्डमधून
तुझा फोल्डर डिलीट होतो आहे आणि
कॉलिंग करायचं राहून गेलं.

विजय जयसिंग कांबळे
बी. ए. III

◆◆◆

तरुण-तरुणींसाठी प्रार्थना

कामासाठी वेळ द्या
कारण ती यशाची किंमत आहे.
विचार करण्यासाठी वेळ द्या,
कारण ते शक्तीचे उगमस्थान आहे.
खेळण्यासाठी वेळ द्या,
कारण ते तारुण्याचे गुपित आहे.
वाचनासाठी वेळ द्या,
कारण तो ज्ञानाचा पाया आहे.
स्नेहासाठी वेळ द्या,
कारण तो सुखाकडे नेण्याचा मार्ग आहे.
स्वप्नासाठी वेळ द्या.
कारण ते ध्येयाकडे जाण्यास सोबत करील.
हास्यविनोदासाठी वेळ द्या.
कारण ते जीवनसंगीत आहे.
व्यक्तिमत्त्व विकासाचे सोपे मार्ग

कु. माधुरी आबासो भाले
बी. एस्सी. III (रसायनशास्त्र)

शिवरायांचे आठवावे रूप । शिवरायांचा आठवावा प्रताप ।।

कुळी भोसल्यांच्या शहा भूप होई ।
तयाची वधु सुव्रता ती जिजाई ।
अशांच्या कुशी शिवाजीच जन्मला ।
स्मरा त्या छ. शिवाजी महाराजांना ।।

शिवछत्रपती म्हणजे महाराष्ट्राचा पंचप्राण आणि एक प्रमुख प्रेरणास्थान. आज साडेतीन-चारशे वर्षे होत आली. महाराष्ट्रातील किंबहुना हिंदुस्थानच्या जनमानसात शिवरायांचे, त्यांच्या कार्याचे स्मरण नेहमी होत असते. साडेतीनशे वर्षांपूर्वीच्या जगाचा व त्या काळातील भौतिक, वैचारिक, सामाजिक वातावरणाचा विचार करता, शिवरायांचे कार्य आणि त्यांच्या विचारांचे श्रेष्ठत्व आजही त्यांच्या इतर समकालिनांपेक्षा काकणभर वरचढच आहे.

शिवरायांनी केलेल्या लढाया, त्यासाठी वापरलेले युद्धतंत्र, शस्त्रे, त्यांनी बांधलेले गिरीदुर्ग, जलदुर्ग हे तर तत्कालीन विश्वात आगळे वेगळे आणि प्रभावी होतेच पण त्यांनी सर्व विश्वात ज्यावेळी सरंजामशाही होती. त्या काळात राजा आणि राजनिष्ठा लोकांसाठी होती असे आचरण ठेवले. सर्वसामान्य रयतेचा ते प्रथम विचार करत.

शिवाजी महाराज हे महाराष्ट्राचे आराध्यदैवत आहे. अर्थात त्यांचे व्यक्तिमत्त्व संपूर्ण मानवजातीला भूषणास्पद आहे. लंडनच्या एशियाटिक लायब्ररीमध्ये श्रेष्ठ विभूतींच्या यादीत छत्रपती शिवाजी महाराजांचे नाव अग्रभागी झळकत आहे. शिवरायाचा गनिमी कावा या युध्दतंत्राचा जगभर विविध विद्यापीठामधून आजही अभ्यास केला जात आहे. प्रतापगडचे युध्द संपूर्ण जगातील महत्त्वाच्या दहा युध्दापैकी एक मानले जाते. जगातील नामवंत युध्दशास्त्रज्ञांनी 'गिनिमी काव्याचे आदर्श युध्द' म्हणून या युध्दाला मान्यता दिली आहे.

प्रतापगडावरील शिवरायांच्या पुतळ्याखाली पोर्तुगीज गव्हर्नरचे एक वाक्य लिहिलेले आहे.

'छत्रपतीशिवाजी महाराजांची तुलना फक्त जगज्जेत्या अलेक्झांडरबरोबर करता येईल. अस त्या वाक्याचा अर्थ आहे. छत्रपती शिवरायांची महान गुणसंपदा महाराष्ट्रातील शिवभक्तांनी व हिंदुभक्तांनी जाणली पाहिजे आणि आपल्या जीवनामध्ये या सदगुणांचा आदर्श ठेवून त्याप्रमाणे वाटचाल केली पाहिजे. ते सदगुण आत्मसात करण्याचा प्रत्येकाने निरंतर प्रयत्न केला पाहिजे. "परमेश्वर पक्षपाती आहे म्हणून छत्रपती शिवाजी महाराज महाराष्ट्रात जन्माला आले असावेत. असा राष्ट्रपुरुष इंग्लंडमध्ये जन्माला आला असता तर आम्ही जगावर आणखी चारशे वर्षे राज्य केले असते", असे एका इंग्रज इतिहासकाराने म्हटले आहे.

नेपोलियन व अलेक्झांडर या दोन विश्वविख्यात राज्यकर्त्यांशी शिवरायांची तुलना केल्यास शिवाजी महाराज सरस ठरतात. कारण नेपोलियन व अलेक्झांडर हे दोन्ही योध्दे स्वार्थी होते. शिवाजी महाराज हे चारित्र्यसंपन्न आणि नि:स्वार्थी राजे होते. हिंदुस्थानच्या संपूर्ण स्वातंत्र्यासाठी त्यांनी आयुष्यभर प्रचंड धडपड केली. त्यांच्या या प्रयत्नांना यशही आले.

शिवरायांच्या काळात हिंदवी स्वराज्याचा देशभर विस्तार झाला होता. हे लक्षात ठेवले पाहिजे. हा महापुरुष महाराष्ट्रात जन्मला, याचा आपण अभिमान बाळगला पाहिजे. एवढेच नाही, तर त्यांच्या निर्भयतेचा, राष्ट्रप्रेमाचा, स्वधर्माभिमानाचा आणि सत्च्यारित्र्याचा आदर्श समोर ठेवून आपण वाटचाल केली, त्यांचे गुण आत्मसात करण्याचा प्रयत्न चिकाटीने व प्रामाणिकपणे केला, तर आपला देश जागतिक महासत्ता बनू शकतो. परंतू आपण छत्रपती शिवरायांना विसरलो तर कदापि यश मिळणार नाही, हे प्रत्येक देशभक्ताने लक्षात ठेवावे.

अर्जुन शिवाजी खतक

बी. एससी.

ध्येयवेडी माणसे

''मुलामुलींची वीण वाढविणे आणि चार काटक्या जमवून घरटे बांधणे याला का संसार म्हणावयाचे ? असला संसार चिमण्या व कावळेसुध्दा करतात. हजारो जणांच्या घरांतून सोन्याचा धूर निघावा म्हणून स्वत:ची चार चूलबोळकी फोडून टाकणे ह्याचे नाव संसार !'' स्वातंत्र्यवीर सावरकरांच्या या चार ओळीतून आपल्याला कळते की त्याची 'लाईफ स्टाईल' काय असेल. पृथ्वीवरच्या प्रत्येक माणसाची एक वेगळी जीवनशैली आहे. कोणाचा आदर्श शिक्षक या ध्येयाच्या दिशेने, तर कोणाचा आय्.ए.एस्., आय. पी. एस्. वा आर्मी ऑफिसर या खडतर मार्गाने प्रवास सुरूच राहणार. अशा प्रकारे प्रत्येकाला वेगळ्या प्रकारे जीवन जगण्याची इच्छा आहे.

काहीजण आपले जीवन ध्येयवेडे होऊन जगतात, तर काहीजण प्रत्येक दिवस आळसात घालवतात. आपण क्रांतिकारकांचा, उद्योजकांचा, मनापासून समाजसेवा करणाऱ्या लोकांचा, आर्मी ऑफिसरच्या किंवा वैज्ञानिकांच्या जीवनशैलीकडे बघितले तर आपल्या असे लक्षात येते की, ध्येयाविषयी ते खूपच एकनिष्ठ विचार करत होते. याचे उत्तम उदाहरण म्हणजे नोबेल विजेता पेरी क्युरीच्या आयुष्यात घडलेली घटना. पेरी क्युरी प्रश्न सोडवताना एखाद्या ठिकाणी थांबतो आणि सकाळी उठून पाहतो तर त्या प्रश्नांचे उत्तर कधी लिहिले हे सुद्धा त्याला माहीत नसते. म्हणजे किती ध्येयवेडी ही माणसे !

भारतीय स्वातंत्र्याच्या इतिहासाचा मागोवा घेताना आपल्याला जाणवेल की, सुभाषचंद्र बोस याचे विचार हे त्या काळातही तितकेच तेजस्वी होते आणि आता ही इंग्रजी राजवटीत सर्वोच्च्य प्रशासकीय परीक्षेत उत्तीर्ण झाल्यानंतर कलेक्टर होण्याची संधी असताना, आयुष्यातील सर्व सुखे समोर आली असताना त्यांनी स्वातंत्र संग्रामात उडी घेतली आणि देशाला स्वातंत्र करण्यासाठी त्यांनी आझाद हिंद सेनेची स्थापना केली. इंग्रजांशी सशस्त्र लढा पुकारला

आणि जगातून भारताला स्वातंत्र्य मिळवण्यासाठी मदत गोळा केली. सुभाषचंद्र बोस आपल्या ध्येयाविषयी म्हणतात. ''काही जण मला स्वप्नमग्न म्हणतात. खरे आहे ते लहानपणापासून मी स्वप्नेच पाहात आलेलो आहे. या सर्व स्वप्नांमध्ये मला प्राणप्रिय आहे हिंदूस्थानच्या स्वातंत्र्याचे स्वप्न एकच प्रश्न मला सतत अस्वस्थ करीत असतो. माझे हे प्रियजन स्वप्न प्रत्यक्षात केव्हा उतरणार आहे? कारण तोच माझा एकमेव जीवनध्यास आहे. कोण काहीही म्हणो, स्वप्नांशी समरस होणे हा माझा स्वभावच आहे.''

प्रत्येक क्षेत्रात टॉपला गेलेल्या व्यक्तीचा अभ्यास केल्यास आपल्याला असे लक्षात येईल की, त्यांनी त्याच्या आयुष्यात खूप श्रम घेतले आहेत. आपल्याला जर कोणत्याही क्षेत्रात टॉपला जायचे असेल तर अविरत श्रमाला पर्याय नाही. श्रम करताना अपयश आले तर काही हरकत नाही ? पुन्हा प्रयत्न करू. तरीही नाही जमले? काही हरकत नाही. पुन्हा प्रयत्न करतच राहू.....

अदित्य बिर्ला म्हणतात '' मी गेल्या २०-२२ वर्षांमध्ये ४ सुट्या घेतल्या आहे.'' सचिन तेंडूलकर पाकिस्तान विरुद्ध शतक मारल्यानंतर म्हणतो ''मी गेले ८ दिवस झोपलो नाही''. आणि ए. आर. रेहमान दिवसातले २१-२२ तास काम करतात. आपल्या भारत देशाला जर महासत्ता बनायचे असेल

तर अशा काही महान व्यक्तींचा आदर्श प्रत्येक युवकाने ठेवला पाहिजे.

तुम्ही तुमच्या प्रत्येक कृतीचा समाजावर होणाऱ्या परिणामाचा विचार करा. तुम्ही मतदान करायला चालला? तर विचार कराच १९ व्या वर्षी देशासाठी शहीद झालेला खुदिराम बोस, ब्रिटिशांच्या विरोधात समोरासमोर लढाई केलेली राणी लक्ष्मीबाई, मातृभूमीसाठी सर्वांत प्रथम मीच बलिदान करेन' असे म्हणणारे राजगुरू आणि 'स्वराज्य हा माझा जन्मसिद्ध

हक्क आहे. आणि तो मी मिळवणारच' असे म्हणणारे लोकमान्य टिळक, आठवा अशा स्वातंत्र्यवीरांचा इतिहास, अशा स्वतंत्र भारताचे नेतृत्व करण्यासाठी कोणत्या नेत्याची आवश्यकता आहे याचाही विचार कराच.

भारत देश महासत्ता बनवण्यासाठी अनेक समस्या आहेत. परंतु प्रत्येक समस्या सोडवण्याची ताकद भारतीय तरुणांच्यामध्ये आहे. आवश्यकता आहे ती व्यापक दृष्टीकोनाची आणि ध्येयवेडे होऊन समस्या सोडवण्याची.

शरदचंद्र शंकर पाटील

बी. एस्सी ।।।

स्वप्न आणि सत्य

अचानक एके दिवशी जीवनाची सफर करण्यासाठी घराबाहेर पडले. वाटत होते जीवनाच्या मुळापर्यंत पोहचण्यासाठी मला कितीतरी मार्ग सापडतील. पण माझ्या ध्येयापर्यंत जाणारा फक्त एकच मार्ग होता. बाकी सर्व मार्ग माझी फसवणूक करत होते, पाहताक्षणीच वाटले होते की, कोणताही मार्ग माझा सोबती होईल. मात्र थोड्याच वेळात कळले की, जे दिसते ते सगळेच चांगले असते असे नाही. एखाद्या सुंदर चेहऱ्यामागेही दुष्ट भाव असू शकतो. जसा चंद्रावर डाग असतो.

''माझे म्हणून आले
कुरवाळण्या परंतु
पाठीवरी सहानुभूतीच्या
जखमा देऊन गेले''

शेवटी मनाला विचारून एक मार्ग निवडला पण त्यावर फक्त संकटेच होती. त्यातून मला बाहेर काढणारे कोणीच नव्हते. मी अडकून पडले होते.

''झाडे झडून गेली
पक्षी उडून गेले
एकेक दुःख येथे
मलाच छळून गेले''

थोडा वेळ मी थांबले. बंद केलेले डोळे उघडून पाहिले तर मी माझ्याच घरात होते. घराबाहेर कधी पडलेच नव्हते. मग माझ्या लक्षात आले की, मी माझ्याच फसवणुकीचे एक स्वप्न पाहिले होते जे आजपर्यंत सत्यात आलेले नाही. आणि मला वाटते की, ते स्वप्न कधीही वास्तवाच्या रूपात माझ्या समोर येऊ नये. आणि जर आलेच तर मी म्हणेन की,

''संकटांना कधी कंटाळायच नसत
त्याला सामोर जायच असत
कुणी सोबत नाही म्हणून
अर्ध्यातून परतायच नसत
आपल सामर्थ्य दाखवायच असतंसं
याचंच नाव जीवन असतं
ते भरभरून जगायच असतं''.

कु. पूनम पाटील

बी. ए. ।।। (राज्यशास्त्र)

स्पंदन

विद्यार्थी मित्रहो, आत्महत्या का करता?

सध्या वर्तमानपत्र हातात वाचायल घेतलं की विद्यार्थी आत्महत्येची बातमी असतेच. मग विद्यार्थी दहावीचा असो किंवा इंजिनिअरिंगचा, कारण फक्त परीक्षेची भीती अथवा अभ्यासाचा तणाव.

समाजाला आत्महत्या ही लागलेली एक कीड आहे. ती कीड थांबवण्यासाठी विद्यार्थी, पालक, शिक्षक यांनी एकत्र येऊन चर्चा करणे गरजेचे आहे. बहुतेक मुले ही शेतकरी कुटुंबातील असतात. आई-वडील शेतात काबाडकष्ट करून मुलांच्या शिक्षणासाठी पैसा गोळा करतात, मुलगा शिक्षण घेऊन मोठा साहेब, वकील, डॉक्टर, शिक्षक होईल असे स्वप्न पाहात आपले जीवन जगत असतात. मात्र त्यांची मुले नको त्या ठिकाणी नको तेथे पैसा खर्च करतात व वाईट सवयींच्या आहारी जात आहेत. त्यामुळे त्यांच्या अभ्यासावर परिणाम होतो व परीक्षेचा निकाल लागतो, मग मुलगा आत्महत्या करतो.

एखाद्या विद्यार्थ्याला जर अभ्यासक्रम कठीण वाटत असेल तर त्याच वेळी आपली कुवत ओळखून आपला मार्ग निवडला पाहिजे. चौथीपर्यंत शिक्षण घेतलेले धीरूभाई अंबानी पेट्रोल पंपावर पेट्रोल भरण्याचे काम करत होते. नंतर ते चक्क पेट्रोलियम कंपनीचे मालक बनले मग, तुम्ही का होऊ शकत नाही एक यशस्वी माणूस. आपल्या अंगी परिश्रम, जिद्द, चिकाटी असेल तर आपल्याला प्रवाहाविरुद्धसुद्धा पोहता येते. पूर्वी आत्महत्या कोण करायचे? जे आजाराला कंटाळलेत, ज्यांचे वृद्ध वयामध्ये कोण पालन पोषण करण्यासाठी वारस नाहीत असे लोक आत्महत्या करत. पण आज विद्यार्थी ज्या वयात खेळायचं, बागडायचं, मोठे होऊन आपल्या आई-वडिलांची स्वप्ने पूर्ण करायची व त्यांना सुख द्यायचं पण हे करण्याअगोदरच ते जगाचा निरोप घेतात व आई-वडिलांना कायमचं दु:खी करतात.

जीवन हे यश-अपयशाचे केंद्र आहे. जीवनात

प्रवास करताना यश, अपयश मिळणार हे नक्कीच परंतु अपयशाला आत्महत्या हा मार्ग नव्हे हे प्रत्येकाने लक्षात ठेवलं तर समाजाला लागलेली कीड नक्कीच थांबेल.

निरंजन चव्हाण

बी. एससी. ॥

जीवन

'व्यक्ती तितक्या प्रकृती' या म्हणीनुसार म्हणजेच, प्रत्येक व्यक्ती ही वेगवेगळी असते. जीवनाच्या वाटेवर अनेक व्यक्ती भेटतात. त्यातील थोड्याच व्यक्ती हृदयावर जखमा करतात तर थोड्या व्यक्ती आपल्याशा वाटतात. प्रत्येक व्यक्तीला सुख-दुःख ही असतात. म्हणून कोणी पळवाटा काढाव्यात हा त्यावरचा मार्ग नव्हे. जीवनाच्या वाटेवर चालताना अनेक व्यक्ती तेथेही भेटतात. त्यातील काही काटे रुतणारे असतात. तर काही खोलवर जखम करतात. ''आपल्यासारखी समोरची व्यक्ती नसते.'' जीवनात वाकडी वाट स्वीकारल्यानंतर दुःख वाट्याला येते. त्यावेळी सुखाची जाणीव होते.

व्यक्ती आयुष्याने मोठी होत नाही तर, त्याच्या कर्तृत्वाने मोठी होते. जीवनात काटे असतात. काटे म्हणजेच दुःख आणि दुःखाला सामोरे जाणे म्हणजेच परीस्थितीशी सामना करणे. जीवनात जे काही मिळाल नाही तर नशिबाला दोष द्यायचा आणि जे काही मिळाल ते माझ, मी केल अस म्हणायचं. नशिबाला किंवा आजू-बाजूच्या कोणत्याही व्यक्तीला दोष देऊन आयुष्य घडवायचं नसतं. आयुष्यात एखादी गोष्ट ठरविली की मिळेलच असे नाही. त्यासाठी दुसऱ्याच्या जीवाची माती करणं कितपत योग्य आहे? स्वतःच्या पदरी अपयश आलं म्हणून निराशा बाळगू नका ! आणि आपल्या बरोबर दुसऱ्याला दोषी ठरवू नका असंच-असतं आयुष्य का? तर नाही. जी व्यक्ती अन्यायाविरुद्ध आवाज उठवेल जो दुसऱ्यांच्या दुःखात सामील होईल आणि वाईट गोष्टीचा त्याग करेल...

चांगल्याचा सहवास आयुष्य घडवत असतो. वाईट मार्गाचा अवलंब करणे म्हणजे आयुष्य नव्हे तर जगण्यासाठी येणाऱ्या प्रश्नांना तोंड देणे म्हणजे आयुष्य माणूस जन्मतःच गुन्हेगार नसतो, तर या

समाजात आल्यानंतर परिस्थितीशी एकरूप होऊन, झगडून स्वतःचं अस्तित्व शोधण्याच्या नादात तो गुन्हेगारीकडे वळतो. आज कशाचीही पर्वा न करता जमिनीत गाडले जाणारे लोक, त्याचबरोबर रस्त्याच्या कडेला किडा, मुंगीसारखे चिरडून जाणारे लोक कुठे गेलं या पृथ्वीवरील माणुसकीपण?

शूरांची-शूरभूमी, साधु संतांची - संतभूमी, कर्मवीरांची -कर्मभूमी अशी ही आपली महाराष्ट्र भूमी अशा या महाराष्ट्र भूमीत जगण्याची जाण आणि जगण्याचे भान विसरलेल्या या पिढीकडे पाहताना प्रश्न पडतो, या देशाचा आधारस्तंभ असा कोलमडला कसा? म्हणूनच म्हणावेसे वाटते.

''जीवन ही एक आग आहे, कोण म्हणेल बाग आहे, पण मरेपर्यंत जगणे भाग आहे''.

'स्वतःवर विश्वास ठेवा जीवन कसं जगायचं ते समजेल'.

कु. सारिका अनंत सावंत

बी. ए. ।।

आत्महत्या का? कोणासाठी?

सकाळी पेपर उघडला. ठळक बातमी 'अभ्यासाच्या टेन्शनने विद्यार्थ्याची आत्महत्या, कारण तर काय अभ्याचं टेन्शन आत्महत्या ही काही फॅशन नाही की ते काही नाटक नाही, आपलं सुंदर आयुष्य एका क्षुल्लक कारणासाठी संपवून टाकणं हे एक वेड आहे जे आजच्या आपल्या विद्यार्थी मित्रांना लागलं आहे. आज आपल्या समाजात कित्येक विद्यार्थी या ना त्या कारणाने आत्महत्या करत आहेत. कारणे तार काय अभ्यासाचे टेन्शन, कुणाचे विषय राहिलेत, तर कुणाला रॅगिंगची भीती, पण माझ्या मित्रांनो, आत्महत्या केल्याने सारे प्रश्न सुटणार असते तर सर्वांनीच आत्महत्या करून आपापले प्रश्न सोडवले असते. प्रत्येक पालक आपल्या पाल्यामध्ये आपली स्वप्ने पाहत असतात ती स्वप्ने आपल्या पाल्याने पूर्ण करावीत अशी त्यांची प्रामाणिक इच्छा असते पण या इच्छा काही वेळा विद्यार्थ्यांवर लादल्या जातात त्यामुळे विद्यार्थ्यांला आपल्या मनातील इच्छांना निरोप द्यावा लागतो. खरं तर या गोष्टी स्वाभाविक आहेत. पालकांनी इच्छा दर्शविणे व विद्यार्थ्याने त्या इच्छेला मान देणे पण यामुळे विद्यार्थी मनात घुसमटत राहतो. आपल्या इच्छा पूर्ण न झाल्यामुळे तो पूर्णपणे निराशेच्या आहारी जातो. त्यामुळे त्याला आत्महत्येचे वाईट विचार सुचतात. या निराशेपोटी विद्यार्थी आत्महत्येस कवटाळतो. मग या आत्महत्येस दोषी कोण? दोष कुणाचा? दोष आहे.- 'संवादाचा' बहुतेक मुलं आपल्या आई-वडिलांशी कधी संवादच साधत नाहीत. त्यामुळे त्यांच्या इच्छा, आकांक्षा, मते पालकांना समजू शकत नाहीत. आपल्याला कोणत्या गोष्टीत रस आहे किंवा आपल्याला कोणत्या क्षेत्रात करिअर करायचं आहे हे विद्यार्थ्याने धाडसानं आपल्या पालकांना सांगण्याचा प्रयत्न केला पाहिजे. जशा नाण्याला दोन बाजू असतात तसाच संवाद आहे. संवाद सुद्धा दोन्ही

बाजूंनी होणं आवश्यक आहे. पालकांचा व विद्यार्थ्यांचा यात पूर्ण सहभाग हा संवादातला अविभाज्य भाग बनतो. पालकांनी संवादामध्ये पालकांची भूमिका न बजावता एका मित्राची भूमिका वठवली तर त्यांचा पाल्य आपली मते ठामपणे मांडू श.कतो. आपल्या पाल्याला ज्या गोष्टीत रस आहे त्या दिशेने वाटचाल करण्यासाठी त्यांच्या पालकांनी प्रोत्साहन दिलं पाहिजे. असे पालक झाले तर समाजातील आत्महत्या थांबण्यास बरीचशी मदत होईल. मग कोणताही विद्यार्थी आत्महत्येच्या आहारी जाणार नाही. कोणत्याही अडचणीचा सामना करताना हृदयावर हात ठेवून फक्त एकच म्हणा

"ALL IS WELL"

स्वप्नील मारुती यादव

बी. एस्सी ।

चाली चॅप्लीन

आजच्या युगात आपल्याला कोणी विचारलेले की जगातील कोणत्याही पाच सर्वश्रेष्ठ शोकांतिका सांगा त्यावेळी आपण लगेच काही लोकांची नावे सांगू पण जेव्हा जगातील कोणत्याही पाच जास्त आनंद देणाऱ्या व्यक्तीची नावे आठवायला मात्र थोडा वेळ लागतो. 'चार्ली चॅप्लीनं' हे एक त्यातलच एक नाव स्वतः दुःखात जगताना इतरांना हसवत राहणाऱ्या सुप्रसिध्द अभिनेत्याला आपल्या जीवनाचे गुपित विचारल्यावर तो म्हणतो, '' मला एकच चिंता आहे. लहानपणी इतरांच्या प्रेतावर मी फुलं वाहिली, नंतर आईच्या शवावर ! परंतू माझ्यासाठी फूल वाहायला कोण उठणार? तेव्हा मीच माझ्या शवपेटीतून उठून माझ्या प्रेतावर फुले उघळीन आणि हाच माझा शेवटचा अभिनय करू पाहण्याची माझी इच्छा आहे.

आयुष्यभर तोंडावरील हसू कधी न ढासळू दिलेला चार्ली आपल्या मनाशी विसंगतीत संगती शोधण्याचा प्रयत्न करत असे. आणि स्वतः वर ओढावलेल्या परीस्थितीशी सामना करण्याचा प्रयत्न करत असे. त्याचा कपड्यांचा अवतार व हातातील छडी आणि डोक्याची टोपी हे त्याला हास्यकारणाला नेहमी मदत करत असत. तो दररोज स्वतः बदलच एक नवीन स्क्रीप्ट स्वतः लिहीत असे. त्याबद्दल तो म्हणतो, 'मी दर दिवशी एक हजार शब्द डिकेटंट करतो तेव्हा कुठे संवादाच्या तीनशे शब्दांएवढा मजकूर मिळतो.

चार्लीने १९१८ मध्ये अमेरिकन मासिकासाठी एक लेख लिहिला. तो त्यामध्ये म्हणतो, हास्यस्पद आणि अडचणीत आणणाऱ्या स्थितीमध्ये जनतेला एखाद्यासमोर आणण्यात माझी खरी भिस्त असते. त्यामुळे हॅट वाऱ्यावर उडत चाललेली दाखवण्यात गंमत नाही, तर त्या हॅटच्या मागे त्याचा मालक, डोकीवर केस आणि कोटाच्या शेपट्या उडवीत जाणारा पाहण्यात खरी मजा आहे.

चार्ली आपल्या आयुष्याबद्दल बोलताना म्हणतो, जीवनात कितीही अवघड प्रसंग आला कितीही तापदायक परीस्थिती आली तरी मी माझी छडी प्रथम त्वरित हातात घेतो, माझी हॅट सरळ करतो आणि माझा नेकटाय ॲडजस्ट करतो, जरी मी साष्टांग नमस्कार घातलेला असला तरी माझी हीच पध्दत असते. या अडचणींच्या प्रसंगात अशावेळी मी केवळ स्वतःला लोटत नसतो तर त्याच परीस्थितीत इतरांना लोटण्याचे मला समाधान होते. त्यावर मला मी अभिनय केलेल्या 'धी ॲडव्हेंचर' मधील प्रसंग आठवतो. त्यामध्ये मी एका तरुणीबरोबर बाल्कनीमध्ये बसून आइस्क्रीम खात आहे असा प्रसंग दर्शविला आहे. तेव्हा घडलेला विनोद म्हणजे, बाल्कनीच्या खाली एक सुंदर श्रीमंत घराण्यातील स्त्री बसली होती. तेव्हा आइस्क्रीम खात असलेला चमचा मी तिला पाहात पाहात माझ्या साऱ्या कोटवरील

सांडलेले आइस्क्रीम आणि दुसरे म्हणजे जेव्हा माझ्या

हातातून चमचा निसटतो व सरळ त्या स्त्रीच्या नाकावर जाऊन आदळतो. तेव्हा हा प्रसंग पाहताना लोकांना खूप आनंद होतो पण एकीकडे असाही विचार केला तर.

श्रीमंत आणि सुखासीनतेचं हे दुःख पर्यवसान पाहण्यात जनतेने घेतलेले सुख हे त्याचे पहिले लक्षण मानता येईल. दुसऱ्या लक्षणामध्ये रंगमंचावर किंवा पडद्यावर ज्या भावना अभिनेता भोगत आहे, त्या स्वतःही भोगल्योच प्रेक्षकांना वाटत राहणे हे होय. पुष्कळ लोकांना, श्रीमंत माणसांना अत्यंत वाईट काळ घालवावा लागतो. हे पाहण्यात खरी गंमत वाटते. या गोष्टीची सत्यता रंगमंचावरील अनुभवाने मला फार लवकर दाखवून दिली. याचे प्रमुख कारण म्हणजे दहा पैकी नऊजण स्वतः गरीब असून श्रीमंतांचे मत्सरी असतात. जर मी त्या प्रसंगात ते आइस्क्रीम श्रीमंत बाईऐवजी एखाद्या गरीब बाईच्या अंगावर पडलेले दाखवले असते तर हास्याऐवजी त्या बाईबद्दल प्रेक्षकांमध्ये सहानुभूती निर्माण झाली असती. शिवाय ती घटना इतकी हास्यकारकही झाली नसती. कारण त्या बाईजवळ गमावण्यासाठी प्रतिष्ठाही नव्हती. श्रीमंत बाईच्या नाकावर आइस्क्रीम पडण्यात प्रेक्षकांच्या दृष्टीने त्या बाईचे तसेच व्हायला हवे ही प्रतीक्रिया.

मी माझ्यासाठी भाग्याची गोष्ट मानतो की, मी उंचीनं व अंगाने लहान आहे. कारण छोट्या माणसाचा छळ होत असल्याचे पाहून गर्दीमधील लोकांची नेहमी सहानुभूती मिळायला लागते. हे प्रत्येकाला माहीत आहे. कमकुवताला लाभणाऱ्या या संधीचा फायदा मी माझ्या चित्रपटातील खांदे उडवून दयापूर्ण हावभाव देऊन आणि भयभीत वातावरणात नेऊन हवा तसा करून घेतो. जर मला कुणाचे लक्ष वेधून घ्यायचे असेल तर मी त्याच्या खांद्यांना स्पर्श करण्याऐवजी किंवा हाक मारण्याऐवजी त्याला माझ्या छडीने आपल्या जवळ ओढून घेतो. आणि त्या वेळी विनोद घडतो आणि एकच हास्य पिकते.

मला एका गोष्टीबद्दल सतत काळजी घ्यावी लागते. ती म्हणजे 'अतिशयोक्ती' न होऊ देणे. एखाद्या मुद्यावर सतत भर देत राहणेही मला पसंत नाही. कारण मी माझी विशिष्ट चाल जास्त वाढवली किंवा कोणत्याही गोष्टीमध्ये भर घालण्याचे मी ठरवले तर खरोखरच मी माझी फिल्म बिघडवीन असे वाटते.

आत्मसंयम ही सर्वांत महत्त्वाची गोष्ट आहे. माझ्या सुरवातीचे चित्रपट मला न आवडण्याचे कारण हेच आहे की, त्यात संयम पाळणे कठीण होते. करमणूक करण्यासाठी एखाद-दुसरा प्रसंग ठीक आहे. अन्यथा दुसऱ्या कशावरही जेव्हा चित्रपटाची उभारणी होत नसेल तेव्हा असा चित्रपट थकवा आणणारा ठरतो. कदाचित माझ्या पध्दतीमुळे मला नेहमीच यश मिळालेही नसेल. परंतु काहीतरी क्रूर, पाशवी आणि थिल्लर गोष्टीपेक्षा चाणाक्ष गोष्टींनी हशा मिळवणे मी हजारपटीने महत्त्वाचे मानतो.

" माझ्या चित्रपटामध्ये ज्या गोष्टी मी सहजसुंदरपणे वापरू शकेन, त्या गोष्टी उघडे डोळे ठेवून आणि कोट्यांची रेलचेल करून वापरणे हेच तर माझे सर्वांत मोठे गुपित आहे.'

सुशांत ज. पाटील

बी. एस्सी ।।

पहिल प्रेम

आयुष्याच्या वेलीवर अनेक फुलं फुलतात. त्यातल सर्वात सुंदर, हवहवस परंतु कधी-कधी हृदयाला वेदनादायी वाटणार ते म्हणजे 'पहिल प्रेम' कुणी पाहिलं काय हो पहिल प्रेम ... नक्कीच कारण प्रत्येकाच्या आयुष्याचा तो अविभाज्य घटक असतो. तरी सुद्धा अनेकजण त्याच अस्तित्वच नाकारतात. कुणास ठाऊक ? मला वाटतं काहींना ते कळत नाही.

आकर्षण म्हणजे प्रेम नव्हे हे जरी सत्य असलं तरी 'आकर्षण' हीच पहिली प्रेमाची नांदी असते. कारण ते कुणीही ठरवून करू शकत नाही अन्यथा टाळू शकत नाही. त्या एका नजरेत सारी सृष्टी बदलवण्याची ताकद असते. रोज डोक्यावर घेऊन फिरणारं नभ कधी निळंभोर वाटू लागतं हेच उमगत नाही. अशातच कुणाचे तरी डोळे काळेभोर दिसू लागतात आणि मग इतरांना वाटतं याला वेड लागलं. परंतु तो त्याला सुंदर नाव देतो ! ते म्हणजे माझं 'पहिलं प्रेम'....

कधी-कधी सहवास हा पहिल्या प्रेमाचा दुवा ठरतो. जसे की मनुष्य हा समाजशील प्राणी आहे. हा समाज आपल्याला अनेकांचा सहवास घडवून देतो. त्या सहवासाचा कळत-नकळत आपल्या मनाच्या जडण-घडणीत मोलाचा वाटा असतो. काही सहवास अखंड असतात, तर काही फक्त क्षणांपुरते तर काही सहवास मनावर कायमचा ठसा उमटून जातात । सहवासात असताना त्याचं महत्त्व कधीही पटत नाही. परंतु अचानक जेव्हा मनाला 'तो' सहवास संपत आला आहे याची जाणीव होते तेव्हा मात्र होणारा घाव जिव्हारी बसतो. आपण सर्वात अवघड वळणावर असल्याची जाणीव होते. डोळे पाण्यानं भरूनही 'बांध' घातल्याप्रमाणे ते आतल्या आतच साठून राहते. या अशा आणि अनेक गोष्टीतच पहिल्या प्रेमाचा विजय असतो. नकळत तो आपल्या सर्वांगावर होतो आपणच लादून घेतो.

पहिल्या प्रेमात प्रेमभंगाला जागा नाही. कारण पहिलं प्रेम प्रत्येकाच्या आयुष्यात नेहमी राहतं. कोणी कितीही विसरण्याचा प्रयत्न केला तरी त्याचं अस्तित्व आपणास कायम जाणवतं मग प्रत्येकाला आपलं मन भावनाशून्य वाटू लागतं. जुन्या आठवणी मनाला दाहक दंश करतात. त्याची परिणती आसवांमध्ये होते. बोलण्यास शब्द फुटत नाहीत. शब्दाचे सामर्थ्य ही उणे ठरते. शब्द शून्य होतात. अशावेळी भावनाचा होणारा कोंडमारा आता पर्यंतच्या अनुभवाच्या भिंतीला जमीनदोस्त करण्यास पुरेसा ठरतो. अशावेळी योग्य उपाय म्हणजे आपल्या भावना प्रिय व्यक्तीजवळ व्यक्त करणे. पण हे सर्वात अवघड असतं. पण असंही म्हणतात.

'' कोई भी चीज मुश्कील हो सकती है,

पर नामुमकीन नहीं ।

जसं पहिलं प्रेम आपल्या जीवनात महत्त्वाचं ठरतं तसं ते व्यक्त करणंही अत्यंत महत्त्वाचं

असतं. त्यासाठी आपण योग्य काळ-वेळ यायला पाहिजे. पहिल प्रेम म्हणजे आपल्या जीवनातील अंकुर म्हटला तर ते व्यक्त करणे म्हणजे तो अंकूर फुलण्यासाठी घातलेले खत-पाणी होय. सर्व प्रेमवीरांना माहीत असलेली एकमेव गोष्ट म्हणजे.

"Everything is fair in love and War" खरतर प्रेम व युद्ध या दोन टोकाच्या बाजू आहेत. परंतु प्रेमाची सत्यता पटवायला युद्धासारखी दुसरी उपमा बहुधा नसावी. प्रेम म्हणजे अनेक भावनांचे न दिसणारे तरीही मनावर घाव घालणारे युद्धच म्हटले पाहिजे. परंतु युध्दातील एकाची जीत व दुसऱ्याची हार हा नियम प्रेमाला लागू होत नाही. निर्मळ प्रेम नेहमीच जिंकत असतं, जरी ते इतरांच्या दृष्टीने हरलं असेल. कारण आपल्या प्रिय व्यक्तीच्या सुखातच त्याचा विजय दडलेला असतो. त्यामुळेच प्रेमात हार जीत

होत नाही, तर जिंकण्याची उमेद व हार पचवण्याची ताकद मनाला प्रेमच मिळवून देत असतं.

''मेणबत्ती स्वत: जळून इतरांना प्रकाश देत असते,

चंदन स्वत: झिजून इतरांना सुगंध देत असते''

या व्यावहारिक गोष्टीमधील तत्त्वे जर प्रेमामध्ये लागू पडली तरच आपणाला प्रेमाचा खरा अर्थ कळला असे म्हणता येईल.

'प्रेम' या शब्दात अडीच अक्षरे आहेत. पहिलं अक्षर 'प्र' हे आपल्या प्रिय व्यक्तीस संबोधते तर 'म' हे अक्षर आपली त्या व्यक्तीवरील 'माया-प्रेम' दर्शविते. पण याच अडीच अक्षरांची सत्ता दुनियेवर चालते.

'पहिल प्रेम' हे देवानं आपल्याला दिलेले एक सुंदर वरदान आहे. ते प्रत्येकाला आयुष्यात एकदाच मिळतं. तसेच 'माझं पहिलं प्रेम' हे ओळखण्याची दृष्टीही आपल्याकडे असते. ते ओळखणं, पारखणं ही आपल्याच हातात असतं. कारण 'जे चकाकते ते सर्व सोनं नसते.' ते सदैव ध्यानात ठेवले पाहिजे. काही भाग्यवंतांना आपलं पहिलं प्रेम मिळालंही असेल पण ज्यांना ते मिळालं नाही त्यांच्यासाठी मला एवढंच लिहावं वाटेल....

कही तो होगी वों...

कही तो होगी वो....

'दुनियाँ' जहाँ वो तेरे साथ है....

क्षितिजा पलीकडंही जग आहे म्हणतात आणि ते दाखवण्याचं सामर्थ्य, ताकद प्रेम देत असतं.

मित्रानो, मी हे कॉलेज सोडताना एवढंच बोलेन,

"I Miss you, do not Miss me".

सुरेश मारुती मस्कर

बी.ए. ।।। (हिंदी)

वसूली - लघुकथा

पहाट झाली होती. डोंगराच्या कुशीतून सूर्य हळूहळू वर येत होता. आज कधी नाही ते भिकू तराळ सोसायटीच्या पुढचे अंगण स्वच्छ करत होता. जवळच पिंपळाचे झाड होते. इतक्यात फराकट्याचा भागू मामा तेथून जात होता. भागू मामा भिकू तराळाला म्हणाला, भिकू आज काय आहे गावात? म्हणजे भागूमामा तुम्हाला कल्पना नाही की काय? भागूमामा म्हणतो काय आहे सांग की? मला काहीच माहीत नाही. तेव्हा भिकू तराळ म्हणतो, काल संध्याकाळी गावात दवंडी दिली होती की वसुली गोळा करण्यासाठी जिल्ह्याचे वसुलीपथक येणार आहे. काय म्हणतोस? अरे आम्ही पिकल्या पान डोळ्यांना नीट दिसत नदाही की कानानं धड ऐकू येत नाही. मग मला दवंडी दिलेली कशी काय ऐकू येणार? असे म्हणतच भागूमामा घराकडे गेला. बायकोच्या कानावर ही बातमी घातली व भागूमामा विचार करू लागला. कधी नाही ते यावर्षी सोसायटीचे कर्ज फेडून टाकायला झाले नाही. झालेच नसते. कारण यावर्षी भात भरपूर झाले पण त्याचा दर पडला होता, ऊस होता पण माव्याने पूर्ण निकामी झाला होता. आता काय करावे ते भागूमामाला कळेना.

गावामध्ये सर्वत्र एकच गोंधळ उडाला होता कारण कितीतरी लोकांनी वसुली भरली नव्हती. त्यामुळे ज्याची वसुली किरकोळ आहे ती याच्या त्याच्याकडे मागून सोसायटीत भरत होती. तर ज्यांची वसुली मोठी आहे ते विचार करत होते. घाबरून गेली होती. काय करावे त्यांना सुचत नव्हते. आता आपल्या घरादारावर जप्ती येणार असे ते म्हणत होते. पण म्हणून तरी काय उपयोग? मात्र चार-पाच जणांनी वसुली भरली होती ते मात्र निर्धास्तपणे सोसायटी जवळच्या पिंपळाच्या पारावर बसून गप्पा मारत होते. तर ज्यांना वसुलीपथकाची भीती वाटत नव्हती ते मात्र साहेब आले तर काही तरी थापा मारायच्या असे एकमेकांना सांगत होते.

सोसायटीचा सेक्रेटरी व वसुलीपथक वसुली गोळा करण्यासाठी गावातील प्रत्येकाच्या घरात जात होते. तसेच ज्यांनी वसुलीकर भरला आहे. त्यांच्या नावावर लाल शाई मारत होते व ज्यांनी वसुलीकर भरलेला नाही त्यांचा संसार उद्ध्वस्त करायला मागे पुढे पाहात नव्हते. ज्यांना कशाचीही भीती वाटत नव्हती त्यांनी मात्र मी मोठ्या साहेबांना भेटून आलोय व त्यांनी थोड्या दिवसानंतर भरले तरी चालतात असे सांगत होते. हे सर्व होता होता भागूमामाचे घर आले. वसुलीपथक दारी दिसताच भागूमामा पाठीमागच्या दारातून सुसाट निघून गेला मग त्याची बायको दुरपा ही त्या साहेबांसमोर गयावया करत होती. त्यांना सांगत होती की, यंदा पिक-पाणी बी चांगलं आलं न्हाय. इकून थोडा पैसा मिळल म्हटलं तर, ही म्हस एक हाय पण गेल्या वर्षीधरनं गाबंच धरीना झालीया, पोरगा एक हाय तो बी मुंबईला त्याच्या बायकोपोरात मजेत हाय पण इकडं एक पैसा बी पाठवतं न्हाय. आता सांगा आमी काय करायचं असे म्हणत दुरपाकाकू साहेबांच्या विनवण्या करत होती. मग त्यांना ती म्हणाली, आता पुरतं माफ करा साहेब येत्याल्या सुगीला सगळं व्यवस्थित करीन. साहेबांनीही तिचं बोलण ऐकलं व पुढच्या दारी निघून गेले. मात्र दुरपाकाकूचा नवरा गेला तो परत आलाच नाही. चार दिवस झाले तरी देखील भागूमामाचा पत्ता नाही. इकडे काकू मात्र डोळ्यात तेल घालून आपल्या नवऱ्यांची वाट

बघत बसली होती. तिथल्याच कुणीतरी ही बातमी पोलिसात कळवली. पोलीस सगळीकडे तपास करीत होते. भागूमामा पळून गेला पण इकडे गावभर लोकांच्या तोंडी एकच बोल की, कर्जाला भिऊन भागूमामा पळून गेला. पाचव्या दिवशी भागूमामाचा पत्ता लागला. जवळच असणाऱ्या जंगलात जाऊन भागूमामाने आत्महत्या केली होती.

पोलिसांनी भागूमामाचा देह घरी आणला त्यावेळी आपल्या पतीचा देह पाहताच दुरपाकाकूनं हंबरडा फोडला. अशा प्रकारे भागूमामाने कर्जातून आपली शेवटची मुक्तता करून घेतली.

कु. अर्चना दत्तात्रय बुजरे

बी. ए. III

इतर

INVITATION

बस स्टॉपवर उभे राहून रोज करायचो मी तिचे....
Observation.
करून यायची ती रोज वेगवेगळी....
Fashion.
दिवसेंदिवस वाढत जायचे तिच्याबद्दल....
Attraction.
वाटायचे ती आहे माझ्यातील एक....
Fraction....
म्हणून तिचे केले मी....
Selection...
मनात नेहमी चालायचे विचारांचे....
Calculation.
त्यामुळे सतत मला यायचे....
Tension...
कारण काय असेल तिची यावर....
Reaction.....
म्हणून मित्रासोबत केले मी....
Discussion....
काहीतरी मला घ्यायला हवी...
Action....
असे त्यांनी मला दिले....
Suggestion.....
मग मी ही पाडायला लागलो तिच्यावर........
Impression.
एकदा तिला मिळाले बक्षीस म्हणून मी केले....
Congratulation....
ती म्हणताच thanks, मी म्हणालो.....
No Mention....
त्यावेळी तिच्या गोड चेहऱ्यावर पाहण्यासारखे होते....
Expression....
लगेच तिने पण त्य.वे मला केले.........
Explaination.....
तिथेच दोन हृदयांचे झाले........
Combination......
तेव्हापासून नवीन निर्माण झाले.....
Relation.....
तेव्हापासून नवीन निर्माण झाले......
Relation.....
मग घरच्यांकडून मिळाली.....
Permission.....
त्या आनंदाप्रीत्यर्थ आहे हे आजचे.......
Function.......
म्हणून सर्वांना हे..........
Invitation..........

सचिन कांबळे

बी.एससी II

राष्ट्रीय सेवा योजनेतून पाहिलेला गाव-बेलवळे बु ।।

बेलवळे बु।। हे कागल तालुक्यातील पश्चिमेकडील टोक. या गावामध्ये अन्न, वस्त्र, निवारा, आरोग्य, शिक्षण या मूलभूत गरजांची उणीव होती. या उणिवांची जाणीव झाल्यावर गावातील वडिलधारी मंडळी एकत्रित येऊन ह्यावर तोडगा काढू शकले.

गरिबांना जगविण्यासाठी पायली, आडीसरी, मापटे असे भातरूपी धान्य गोळा करून इ. स. १९४४ साली काळाबागदेव धान्य भिशीची जहागीर काळात स्थापना केली खऱ्या अर्थाने बेलवळे बु।। येथे सहकाराचा जन्म झाला. स्वातंत्र्योत्तर काळात या संस्थेचेच 'श्री काळाबागदेव' (वि. का. स.) विकास सेवा संस्था मर्यादित म्हणून नामकरण झाले.

काळाबाग हा कार्तिक स्वामी देवाचा 'सरसेनापती' दैत्यांच्यापासून देवांचे रक्षण करणारा एकमेव देव होय. काळाबाग हे ग्रामदैवत असून बेलवळे गावचे व आपल्या भक्तांचे रक्षण करतो ! ''काळरूपी दु:खाचा नाश करून भक्तांच्या जीवन संसारात सुखानंदाची बाग फुलवणारा तो काळबाग होय.''

या गावाच्या पूर्वेला बेलवळे खुर्द, पश्चिमेला-निगवे खा।। दक्षिणेला-चुये कावणे व उत्तरेला चांदेकरवाडी ही गावे सरहद्दीवर आहेत.

बेलवळे हे नाव कसे पडले याबद्दल अनेक मते आहेत. त्यापैकी एक म्हणजे पूर्वी या गावामध्ये बेलाची झाडे मोठ्या प्रमाणात होती. त्यावरून बेलवळे हे नाव पडले असावे असे वाटते. गावाला ऐतिहासिक वारसा लाभला आहे. येथे इंग्रज काळात शहीद झालेल्या मेजर जनरलचे स्मारक आहे. तसेच भोंगरखडीची गुहाही आहे. दूधगंगा नदीकाठी वसलेला हा गाव अत्यंत रमणीय, सधन संपन्न, समृद्ध आहे.

सध्याची राजकीय स्थिती काळाबागदेव धान्य भिशीप्रमाणे गावातील विचारवंतानी ग्रुप ग्रामपंचायत बेलवळे खुर्द व बेलवळे बु।। विभागून स्वतंत्र ग्रामपंचायतीची स्थापना केली.

आज या गावी कागल तालुक्यातील दोन वेगवेगळ्या साखर कारखान्यांचे विद्यमान संचालक, संचालिका कार्यरत आहेत. कागल तालुका, संघ-शाखा दोन विकास सेवा संस्था, श्री कृष्ण व श्री राम पतसंस्था व जिजामाता, मंगळागौरी, अंबिका, राणी लक्ष्मीबाई, सरस्वती, प्रगती, एकता, गृहलक्ष्मी, रमाबाई, रेणुका, लक्ष्मी - महालक्ष्मी, या शिवाय सोनिया स्वामी समर्थ, गाडगेबाबा, ओम गुरुदेव, बाळूमामा असे अनेक बचत गट आहेत.

या व्यतिरिक्त ९ दूध संस्था कार्यरत आहेत. शेतीच्या जोडीला पशुपालन हा व्यवसाय मोठा आहे.

सध्या येथे महिला सरपंच कार्यरत आहेत. सन २००१ च्या जनगणनेनुसार गावची लोकसंख्या ३११८ इतकी आढळते. यापैकी १६५२ पुरुष आहेत तर स्त्रिया १४६६ स्त्री आहेत.

शैक्षणिक स्थिती : बेलवळेमध्ये सध्या अंगणवाडी ते ज्युनिअर कॉलेजपर्यंत शिक्षणाची सोय आहे.

चार अंगणवाड्या एक प्राथमिक शाळा तर महात्मा फुलेंचे नावे हायस्कूल व ज्युनिअर कॉलेज आहे. सुमारे ८३० विद्यार्थी अंगणवाडीपासून ज्युनिअर पर्यंत शिक्षण घेतात. व ३५ शिक्षक ज्ञानार्जनाचे काम करतात. गावास शैक्षणिक वारसा फार चांगला आहे.

आरोग्य सुविधा : गावामध्ये एक प्राथमिक आरोग्य केंद्र आहे. तसेच अनेक डॉक्टर्स आरोग्य सेवक म्हणून कार्य करत आहेत.

आराध्य दैवत :

बेलवळे बु।। मध्ये एकूण ७ मंदिरे आहेत. त्यापैकी काळाबागदेव ग्रामदैवत आहे. दर तीन वर्षांनी यात्रा असते. 'देव जागृत आहे, नवसाला पावतो' असा भक्तिभाव - श्रद्धा लोकांमध्ये आहे.

नदीकाठावर नयनरम्य अशा ठिकाणी दत्त मंदिर आहे. तेथे दत्त जयंतीला मोठा उत्सव असतो. शिवाय महादेव मंदिर अशी वेगवेगळी दैवत आहे.

लोक श्रध्देने आपल्या दैवतांची भक्तीने करतात.

आम्हाला आवडलेल्या या गावास सन २००२-०३ यावर्षी संत गाडगेबाबा स्वच्छता अभियान पुरस्कार मिळाला. तसेच गावाला २००७-०८ या वर्षी निर्मल ग्राम पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले आहे.

आम्हाला आनंद एवढाच वाटतो की, आमचा म्हणजे बिद्रीच्या दूधसाखर महाविद्यालयाचा कॅम्प १८ जाने. ते २४ जाने. २०१० या काळात संपन्न झाला. आम्ही गावकऱ्यांशी हितगुज, गप्पागोष्टी करून तसेच संदर्भ पाहून वरील माहिती संकलित केली आहे.

संकलन : कु. राज ी पाटील, कु.प्रियदर्शनी शेटे

भावपूर्ण श्रध्दांजली..!

या शैक्षणिक वर्षात देशातील थोर, सामाजिक, शैक्षणिक,
सांस्कृतिक, साहित्यिक, वैज्ञानिक, संशोधक,
सैनिक तसेच राजकीय क्षेत्रातील मान्यवर
आणि ज्ञात अज्ञात व्यक्ती
यांचे दु:खद निधन झाले.
त्यांच्या आत्म्यास चिर:शांती लाभो
ही ईश्वर चरणी प्रार्थना !

प्राचार्य, प्राध्यापक व प्रशासकीय कर्मचारी,
दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री, ता.कागल, जि. कोल्हापूर.

प्रयोग प्रेमाचा

उद्देश	:	विज्ञानाच्या दृष्टीकोनातून प्रेमाचे परीक्षण करणे.
व्याख्या	:	प्रेम हे जळत्या मेणबत्तीसारखे असून जोपर्यंत उजेड आहे तोपर्यंत सुख आहे आणि विझल्यावर फक्त अंधार आहे.
		ड - एल - लेक - दुखाचा तलाव
		ज - ओ - ओशन - अश्रूंचा समुद्र
		त - व्ही - व्हॅली - मृत्यूची दरी
		ए - ई - एण्ड - जीवनाचा शेवट
साहित्य	:	कॉलेजचे आवार, हॉटेल, सिनेमा हॉल, बगीचा, देवालय आणि सध्या लोकनाट्य
कृती	:	आकर्षणाचे किरण एका ठिकाणाच्या डोळ्यांपासून (मुलगा) दुसऱ्या ठिकाणच्या डोळ्यापर्यंत (मुलगी) पोहचतात. तेव्हा दृष्टिपटलावर चमकदार प्रतिमा तयार होते. चेतातून द्रव्यापर्यंत संवेदना पोहचवतात. तेव्हा अल्हाददायक स्मितहास्य झळकते. अशा प्रकारे भिन्न लिंगामध्ये देवाण-घेवाण होते. या घडून येणाऱ्या अभिक्रियेला प्रेमाची परावर्ती अभिक्रिया असे म्हणतात.
अडथळा आणणारे घटक	:	आई, वडील, समाज इतर इत्यादी.
वर्गीकरण	:	प्रेमाचे दोन प्रकार असतात. खरे प्रेम व खोटे प्रेम
खरे प्रेम	:	हे प्रेम नैसर्गिक असते हे भाग्यवान माणसांच्या बाबातीतच घडून येते त्याला निसर्गाची देणगी स्विकारावी लागते. उदा. लैला-मजनू, हरि-रांझा, सोनी-महिवाल इ.
खोटे प्रेम	:	यात अनेक खोट्या गोष्टी असतात. याचा शेवट हा दुःखात होतो. खोटे प्रेम फार थोड्या काळापर्यंत टिकते.
गुणधर्म	:	भौतिक गुणधर्म : रंगहनि, अल्हाददायक, एकदा अडकले की बाहेर पडता येत नाही. आरोग्यवर्धक इत्यादि. रासायनिक गुणधर्म : सच्चे प्रेम माणसाला मूर्ख बनवते. हे प्रेम अत्यंत ज्वालाग्राही आहे.
समीकरण	:	प्रेम + मनुष्य = कवी, प्रेमभंग + मनुष्य = देवदास
उपयोग	:	प्रेमात पडलेला मनुष्य हा तहानभूक विसरतो. त्यामुळे अन्नाची मोठ्या प्रमाणावर बचत होते आणि उपवासाची संख्या वाढते.
अनुमान	:	प्रेमावर कर बसविल्यास राष्ट्रीय उत्पन्नात बरीच मोठी भर पडेल व देशाची सांपत्तिक स्थिती कदाचित सुधारेल !

विजय गुरव बी.एस्सी

कठीण शब्दांचे अर्थ

प्रेम : लग्नानंतर जाणारी वस्तू

मूल्य : लग्नानंतर येणारी वस्तू

सण : कर्ज काढण्याचा शुभ दिवस

भागीदार : धंदा बुडविण्यास मदत करणारा

तरूण : शील बिघडविण्यास तयार असलेला

साधू : शील बिघडविण्यास संधी न मिळाल्याने कोरडा राहिलेला माणूस

कर्ज : परत न करण्याची वस्तू

कीर्ती : वर्तमानपत्रात येणारा फोटो

सौंदर्य : जे आपल्याजवळ आहे, असा गैरसमज कित्येक स्त्रिया करून घेतात

ब्रम्हचारी : ज्याच्याकडे लोक संशयाने पाहतात.

स्तुती : जी आपण तोंडावर करतो.

निंदा : जी आपण पाठीमागे करतो.

पगार : वेळेवर न मिळणारी वस्तू

चहा : दुसऱ्याकडून उकळण्याची वस्तू

दारू : सुरुवातीला चोरून आणि नंतर, उघडपणे पिण्याचे पेय.

पाणी : जे सध्या कोणीच पीत नाही.

संपादक : लोंकाची बदनामी करणारा ग्रहस्थ

पैसा : जो मुर्खाजवळ जास्त प्रमाणात असतो.

घर : बायकोला मधून मधून भेटण्यासाठी च्या ठिकाणी आपण जातो.

नर्तकी : शिस्तबद्द लाथा झाडणारी स्त्री

सुंदर स्त्री : फार दिवस जी अविवाहीत राहू शकत नाही.

चेहरा : पावडरीशिवाय ज्याला शोभा नाही.

चप्पल : पायात घालण्याची किंवा फेकायची वस्तू

अनाथ स्त्री : जीला मदत करण्यास शेकडो पुरुष तयार असतात.

अश्रू : ज्यामुळे स्त्रियांचा नेहमी फायदा होतो.

छडी : अवघड विषय सोपा करून सांगण्याचे अस्त्र

अंबाडा : गंगावन ठेवण्याची जागा.

शाळा : ज्या ठिकाणी मुले आरडा ओरडा करतात तर शिक्षक झोपा काढतात.

कु. तावडे सुनिता महादेव
बी. ए. तृतीय

जगातील प्रसिध्द गणपती

पंचगणपती	:	नेपाळ
गणेश	:	कंबोडिया
द्वारपाल गणेश	:	तिबेट
गुडविद्या गणेश	:	चीन
गणेश मूर्ती	:	मेक्सिको
बोराचा गणपती	:	इंडोनेशिया
लेखक गणेश	:	सयाम
गणपती	:	रोम इटली
नृत्य गणपती	:	नेपाळ
हेरंब गणेश	:	नेपाळ
महापियेन गणेश	:	ब्रम्हदेश
साळा हतांचा गणेश	:	नेपाळ
गुरु गणेश	:	कंबोडिया
गणेश	:	तुर्कस्थान
गणपती	:	बोर्निओ
गणेश	:	जावा

भारतातील प्रसिद्ध गणपती

ओमकार गणेश	:	प्रयाग
विघ्नराज	:	आंध्रप्रदेश
श्वेता गणेश	:	केरळ
दुंढिराज	:	काशी
ब्रह्मगणेश	:	बिहार
षड्:मूज गणेश	:	पंजाब
दुर्गकुटगणेश	:	गुजरात
गोकर्ण गणेश	:	कर्नाटक
गणेश बर्फलिंग	:	हिमालय
महात्कट	:	काश्मिर
गणेशजी	:	बंगाल
मंगलमूर्ती	:	मध्यप्रदेश
बंदरी गणेश	:	हिमालय
सीतामढीचा गणेश	:	बिहार
बली गणपती	:	राजस्थान
पंच मुखी गणेश	:	मध्यप्रदेश
खांड्योव्याचा गणेश	:	गोवा
नरळ विमोचन गणेश	:	आसाम

महाराष्ट्रातील प्रसिध्द गणपती व स्थळे

मयुरेश्वर	:	मोरगाव, पुणे
बल्लाळेश्वर	:	पाली, रायगड
चिंतामणी	:	थेऊर, पुणे
विघ्नेश्वर	:	ओझर, जुन्नर
मंगलमूर्ती	:	चिंचवड, पुणे
महागणपती	:	टिटवाळा, ढाणे
मोदकेश्वर	:	नाशिक
गणेश	:	परभणी
चिंतामणी	:	कळंब, यवतमाळ
सिध्दीविनायक	:	सिध्दटेक, नगर
वरदविनायक	:	महाड, रायगड
गिरीजात्मक	:	लेण्याद्री, जुन्नर
श्री महागणपती	:	राजणगांव, पुणे
कसबा गणपती	:	पुणे
गणेश	:	कढाव, रायगड
पुळ्याचा गणपती	:	रत्नागिरी.

जितेंद्र प्रकाश पाटील
बी. ए. द्वितीय

चारोळ्या

''सरपणासाठी तोडलेल्या ओंढक्याला,
एकदा पालवी फुटली,
त्याचे त्याला कळेना जगण्याची,
ही जिद्द कुठली?''

घर दोघांच असतं,
ते दोघांनी सावरायच,
एकानं पसरवलं तर....
दुसऱ्यानं आवरायचं.

रंग रूपाचे बंधन,
प्रिती पाळत नसते,
म्हणून गोरी राधा,
कृष्णावर भाळत असते.

''कमळ पात्रावरील पाण्याला,
कधी थांब म्हणायचं नसतं,
निसटणाऱ्या क्षणांना कधी जवळ,
करायचं नसतं,
माणसाचं आयुष्य असंच असतं,
बरच काही हरवलं तरी त्यापेक्षा,
जास्त उरलेलं असतं.''

झोपडीत उजेडापेक्षा...
अंधारच खरा असतो,
दारिद्र्याचा संसार,
त्यातच बरा दिसतो.

एक थेंब आभाळातून पडला,
त्याचा झाला सुंदर मोती,
वाळूतच विरणार होता तो,
पण त्याला शिंपल्याची साथ
होती.

मोर थुईथुई नाचतो...
त्याची पिसे सांडतात,
लोकं इतकी हुशार असतात,
की, ते त्याचाही बाजार मांडतात.

कु. सीमा पाटील,
एस. वाय. बी. एस्सी.

स्पंदन प्रकाशक व मालकीसंबंधी माहिती

प्रकाशन स्थळ	:	दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री, ता. कागल, जि. कोल्हापूर. ४१६ २०८ फोन : (०२३२५) २५४८२२
प्रकाशन काळ	:	वार्षिक
प्रकाशक व प्रमुख संपादक	:	प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री, ता. कागल, जि. कोल्हापूर. ४१६ २०८
कार्यकारी संपादक	:	प्रा. डॉ. संजय पाटील
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	दूधसाखर महाविद्यालय, बिद्री, ता. कागल, जि. कोल्हापूर. ४१६ २०८
मुखपृष्ठ	:	मणिपद्म
संकल्पना	:	प्रा. डॉ. मानसिंग टाकळे
मुद्रक	:	श्रीपाद ऑफसेट, ४६४ ई, शाहुपूरी, कोल्हापूर.
राष्ट्रीयत्व	:	भारतीय
पत्ता	:	व्हिनस कॉर्नर, शाहुपूरी, कोल्हापूर. फोन : (०२३१) २६५८४०१

मी प्राचार्य डॉ. आर. एल.राजगोळकर असे जाहीर करतो की, वर दिलेली माहिती माझ्या माहितीप्रमाणे व समजुतीप्रमाणे खरी आहे.

\- प्रकाशक

या अंकातील मजकूराशी संपादक मंडळ सहमत असतीलच असे नाही.

मानव धर्म धर्म है केवल और सभी कुछ भ्रम है।
सब पर प्रेम दुलार लुटाना यही धर्म का क्रम है।।
''चित्रकूट''

रामेश्वर दयाल दुबे

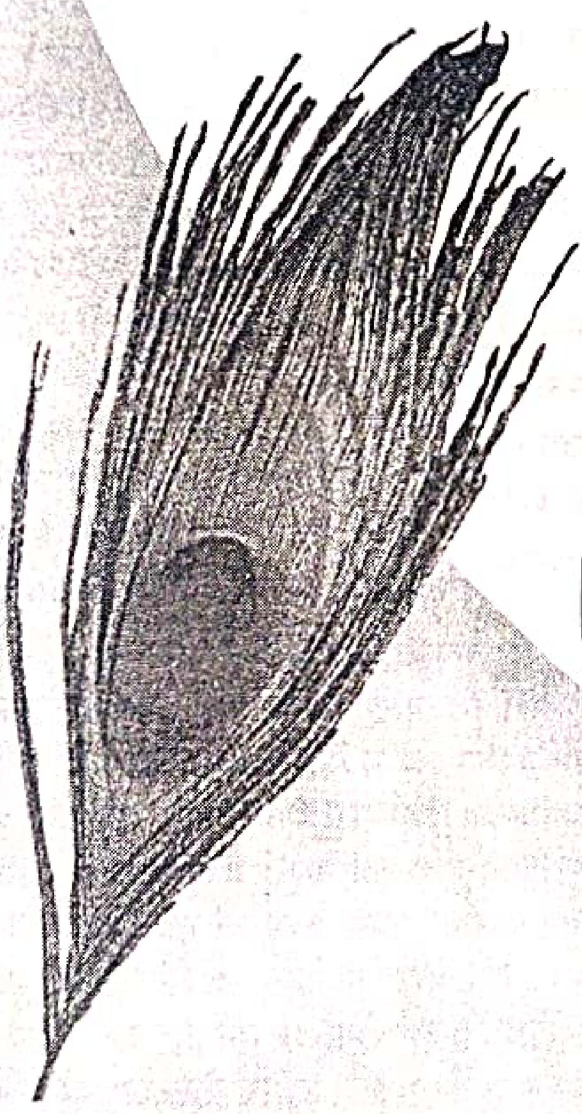

हिंदी विभाग

डॉ. देसाई एस. बी.

अनुक्रमणिका

गद्य	१)	हल्दी -कुंकुम समारोह---	कु. शिल्पा पाटील	३
	२)	जातियवाद भयंकर समस्या	कु. निता पाटील	४
	३)	दोस्ती	कु. पद्मावती पाटील	५
पद्य	१)	छोड दिया	कांबळे रणजीत	६
	२)	दिल की बात	सचिन फराकटे	६
	३)	जोक्स	कु. प्राजक्ता सुतार	७
	४)	प्यार	पंडीत फराकटे	७
	५)	होना जरुरी है	कु. शितल पाटील	७
	६)	दोस्त	विनायक पाटील	७
	७)	ऐसा कोई	अमीत फराकटे	८
	८)	जिंदगी और मौत	श्रीकांत फराकटे	८
	९)	बचपन	कविता पाटील	९

हल्दी-कुंकुम समारोह धार्मिक या सांस्कृतिक

भारत देश विविधपूर्ण है। यहाँ धर्म, भाषा, जाति, प्रांत आदि सभी में, विविधता दिखाई देती है। हर धर्म की रुढियाँ, परंपराएँ अलग-अलग है। हर धर्म के प्रचार की और प्रसार की पद्धतियाँ भी अलग-अलग है। हिंदू धर्म में हल्दी-कुकुंम को महत्वपूर्ण स्थान है। कुंकुम तो भारतीय सुहागन का गहना होता है। चैतन्य का प्रतीक होता है।

कुंकुम हल्दी से बनाया है। हल्दी, चूना और नींबू इकठ्ठा करने पर कुंकुम तैयार होता है। वैसे ही स्त्री-पुरुष दोनों भिन्न देह के, भिन्न स्वभाव के होने पर भी भावनिक और बौद्धिक स्तर पर निरंतर रुप में इकठ्ठा आते है। और उनका गृहस्थ जीवन शुरु होता है। कुंकुम स्त्री को सीख देता है कि, कुछ भी हो, एक दूसरें में मिल जाना चाहिए। अलग नही होना चाहिए। ये सुहागिनें धार्मिक विधि के बहाने इकट्ठा आ जाती है। और अपने विचारों का आचारोंका सुख-दुख का आदान-प्रदान करती है। इससे समाज प्रबोधन को प्रेरणा मिलती है। यह देखकर मन में प्रश्न निर्माण होता है कि हल्दी-कुंकुम समारोह को धार्मिक कहा जाए या सांस्कृतिक ?

वैसे इसे हम धार्मिक भी मानते है और सांस्कृतिक भी। हिंदू धर्म मे पुरुष को शिव का प्रतीक और स्त्री को को शक्ति का प्रतीक माना जाता है। स्त्री आपने माथे पर गोल कुंकुमतिलक लगाती है। लाल गोल कुंकुम तिलक दुर्गादेवी का, शक्ति का प्रतीक है। पुरुष अपने माथे पर खडा तिलक लगाता है। वह अपने में समाहित शिव रुप की पूजा करता है। माथे पर अपने मन की आत्मिक शक्ति केंद्रिभित होती है। इस तरह हल्दी-कुंकुम का आध्यात्मिक महत्व है।

अपने-अपने परिवार में स्त्री अनेक भूमिकाएँ निभाती है। उसे परिवार की अनेक जिम्मेदारियाँ उठानी पडती है। इसलिए उसे इन से थोडा सा छुटकारा मिले इसलिए ऐसे समारोहों की आवश्यकता होती है। ऐसे समय स्त्रियाँ सर्वधर्म समभाव से बर्ताव करती है। जात-पात का भेदभाव भूल जाती है।

धर्म और राजनीति एक दूसरे से एकदम अलग-अलग है। फिर भी आज के राजनीतिज्ञ राजनीति के लिए धर्म का गलत उपयोग कर रहे है। भारत एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। राजनीति में धर्म का उपयोग करना याने भारतीय राज्यघटना के विरूद्ध कदम उठाना है। आज हल्दी-कुंकुम जैसे समारोहों का गलत उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक रुप के बजाए उसे राजनीतीक रुप प्राप्त होता है। ऐसे समारोहों का आयोजन करके अपने पक्ष का प्रचार किया जाता है। मतदान करने का आवाहन किया जाता है। महिलाओं को आकर्षक भेट वस्तुएँ दि जाती है। उपहार राजनीतिज्ञों की दृढ धारणा है की धर्म का उपयोग राजनीति में किया जाए तो निश्चित यश मिलता है। जैसे कि राम मंदिर और बाबरी मस्जिद का विषय।

तात्पर्य यह है कि राजनीति में संस्कृति, धर्म, जातिभेद, आदि से निश्चित ही सकारात्मक वातावरण तैयार किया जाता है। पर राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बनना है या नहीं यह हमें सोचना है।

कु. शिल्पा पाटील

बी.ए. ।।

जातियवाद भयंकर समस्या

"दस कोस पर बदले पाणी
दस कोस पर बदले वाणी

इस काव्य पंक्ति से स्पष्ट होता है कि, हिंदूस्तान में अनेक धर्मो के अनेक जाती के लोग इकठ्ठा रहते है। उनके अलग अलग वेश और उनकी भाषा अलग-अलग है, उनके त्योहार भी अलग है फिर भी ये एक ही देश में रहते है। लेकिन क्या ये सचमूच मिलजुलकर रहते है नही ? ये आपस में झगडते हैं क्यो ?

स्वतंत्र पूर्व काल से लेकर यह जातिभेद कि समस्या आज २१ वीं सदीमें भी नही बदली, आज भी जाति धर्म के नाम पर झगडे होते है। जब स्वतंत्रपूर्व काल था तब चार वर्ण थे ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शुद्र इनमे इनके धर्मो याने वर्ण नुसार काम दिये थे इनमें इसी कारण उच्च-नीचता थी। आज विविध जाति-उपजाति है। जब हिंदूस्थान स्वतंत्र हुआ तो कश्मिर के लिए हिंदू और मुस्लिम झगडने लगे तब से लेकर आजतक यह झगडे शुरु है।

१९९३ के बाद से लेकर बम्बई में २६ नवबर २००८ को बम्बस्फोट हो गया ये तो आप को, मालुमही है। तब बम्बई में ताज हॉटेल, नरिमन हाऊस, ओबेरॉय होटल आदि महत्वपूर्ण स्थानोपर यह बम्बस्फोट करवाने वाली संघटना का नाम लष्कर-ए-तोयबा है और यह संघटना पाकिस्तानी है।

कुछ ही दिन पहले कि बात है, मिरज इस शहर में जातिय फसाद हो गए। इसका कारण था गणेशोत्सव मंडल के स्वागत कमानी पर लगाया गया अफजलखान वध का पोस्टर यह कारण लेकर मुस्लिमों ने झगडा शुरु किया पत्थर फैके, गाडीयॉ जलाई। इसकारण बहुतसा आर्थिक नुकसान हुआ। और सामाजिक व्यवस्था पूरी तरह से बिगड गई।

इन सब करणों से यही दिखाई देता हैं कि आज भी समाज में जातिभेद माना जाता है। इसीके कारण वित्तहानि, मनुष्यहानि तो होती ही है साथमें मानसिक तनाव भी बड जाता है।

आज हम सभी हिंदूस्थान में रहते है लेकिन क्या हम एक ही जाति-धर्म के है ? नहीं लेकिन फिरभी हम आज चाहे मुस्लिम हो या हिंदू उनके त्यौहारो मे उत्साह से सहभाग लेते है। उनके मंदिरो, मसिदो, गुरुद्वारा में भी जाते है तो फिर भी यह भेद क्यो ? हम मिलजुलकर रहकर भी क्यों झगडे करते है। आप का एक गाना मालून है,

"वेगवेगळी माती जरीही
एकच आहे भूमी
हिंदू, मुस्लिम, शीख, इसाई
सारे एकच आम्ही

हे ये गीत हम क्यों गाते है ? उसतरह क्या सचमुच हम जीते है ? अलग अलग मिट्टी हो लेकिन भुमि तो एक ही है उसीतरह अलग धर्म-जाती हो फिर भी हम यह क्यो नहीं समझते कि, मानवताही सच्चा धर्म है हम इकदूसरे से लड झगडकर इक दूसरे का खून बहाकर अपना जीवन व्यंर्थ बीता रहे है। यह हिंदूस्तान तो एक बगीचा है, और ये लोग इनमे लगे हुए विविध रंग-रुप के फुल है हमे ये सब झगडे छोडकर मिलकर रहना चाहिए न जाने ये लोग क्यों नही समझते कि,

चाहे हो धर्म अलग-अलग
खून तो एक ही है,
चाहे हो वर्ण-वंश अलग
रहते तो हिंदूस्थान में ही है

यह ध्यान में लेकर हमे मिलजुलकर रहना चाहिए। जातिभेद एक भयंकर समस्या है, उसे हम मिलकर मिटाना है।

कु. निता पाटील
बी.ए

दोस्ती

'दोस्ती' इस शब्द का अर्थ बहुत कम लोगों को ही समझ में आता है। दोस्ती यह आपस में बाते करने से या एकसाथ रहने से नही होती बल्कि विचारों के माध्यम से निर्माण से निर्माण होती है। सच्चा दोस्त तो सूरज के समान होता है क्योंकि उसके पास रहने से पूरे प्रकाश में रहने का भास होता है।

इस दुनिया में हर एक मनुष्य दोस्त के बिना अधुरा है। इसलिए उसके जीवन में दोस्त या सहेली होती है। 'दोस्त' इस शब्द में बहुत बडा अर्थ छुपा होता है। दोस्ती में सबकुछ चलता है, जैसे एक दूसरे पर गुस्सा बहुत करना, डाँटना, हँसी, मजाक उडाना अथवा हक से कुछ माँग लेना इस प्रकार की बहुत बाते जो शब्दों में नही कह सकते तो वो सब दोस्ती में चलता है। सभी को दोस्ती करनी ही चाहिए। जिसके जीवन में दोस्त नही होता वह मनुष्य बहुत कम नसीबवाले होते है, ऐसा मुझे लगता है। हर मनुष्य को दुःख, मुसीबते होते है और उसमें आधार देनेवाली दोस्ती ही एक रिश्ता होता है। दोस्ती यह तो लडकी-लडकी, लडके-लडके की अथवा एक लकडा और एक लडकी इनमें भी दोस्ती होती है। कोई अपने भाई-बहन, माँ-बाप से तो कोई दादा-दादी से दोस्ती करता है। दोस्ती यह घरवालो से कम पर बाहरवालों से ज्यादा होती है। क्योंकि ऐसा कहा जाता है कि, खून के रिश्तो से ज्यादा दोस्ती का रिश्ता प्यारा और श्रेष्ठ होता है। और यह बिल्कुल सही है। क्योंकि हम जितना दिल खोलकर दोस्त या सहेली से बोल सकते है, उतना-अन्य लोगों से नही बोल सकते। हम अपनी सभी मुसीबते दोस्त या सहेली से बाँट सकते है। फिर वह कौनसी भी बात हो एक दूसरे में आदर विश्वास या प्रेम हो तो दोस्ती बनी रहती है।

एक खुशी काफी है,
पलभर गम भुलाने के लिए।
एक गम काफी है,
जिंदगीभर रूलाने के लिए।
मगर एक दोस्त काफी है,
जिंदगीभर हसाने के लिए।

जिस तरह प्यार में विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। ठीक उसी तरह दोस्ती में भी एक दूसरे का विश्वास महत्त्वपूर्ण होता है। दुनिया में दोस्ती जैसा पवित्र रिश्ता और कोई नही है। पर कुछ लोग इस पवित्र रिश्तो को अपवित्रता का कलंक लगाते है। जैसे एक लडकी ने लडकी से दोस्ती की तो कोई कुछ नही कहता पर उसी लडकी ने एक लडके से दोस्ती की तो समाज के लोग एक ही रिश्ते से उन्हे देखते है। लोगों को लगता है की उनमें दोस्ती का रिश्ता न होकर प्यार का रिश्ता है। ईश्वरने मनुष्य को दो आँखे दी है फिर भी वह एकही दृष्टि से देखते है। वे यह नही सोचते कि, वे एक दुसरे के सच्चे दोस्त हो सकते है अथवा वे एक दूसरे को भाई-बहन मानते हो। पर लोग इस दो पवित्र रिश्तों का विचार न करके सिर्फ गलत ही विचार करते है। पर मैं ऐसा भी नही कहती कि प्यार का रिश्ता अपवित्र है बल्कि वह पवित्र और ईश्वर की देन है। सिर्फ बुरे विचार करनेवाले लोगों को मेरी बिनती है कि उन दोनों मे से रिश्ता जाने बगैर किसीको गलत न समझे। इसीलिए हर लोगों को दूसरे के जीवन में दखल अंदाजी के बजाए अपना स्वयं का जीवन अच्छे ढंग से बिताए। और बुरे लोगों को मैं कहना चाहती हुँ कि,

जिस प्रकार मन की भाषा मन को समझाती है,
उसी प्रकार दोस्त की भाषा दोस्त ही समझता है,
दोस्त ही जीवन में सुख और खुशी की देन है,
जीवन के दुःख में दोस्ती के अमृत का एक बुँद काफी है।

कु. पाटील पद्मावती दत्तात्रय
बी.ए. III (हिंदी विभाग)

छोड दिया

मेरे दिल में बसा है प्यार तेरा,
उस दिल को तुमने तोड दिया,
बदनाम ना करेंगे हम तुम्हें,
तेरा नाम लेना छोड दिया।

जब याद तुम्हारी आएगी,
समझेंगे तुझे कभी चाहा ही नही,
राहो मे अगर मिल जाओगे,
समझेंगे तुम्हे कभी देखा ही नही।

जिन राहों से तुम गुजर जाती हो,
उन राहों से चलना छोड दिया,
किस्मत से अगर, कोई मिल भी जाए,
दिल से नाता जोडना भी छोड दिया।

कु. कांबळे रणजीत पांडूरंग
बी.एस्सी. ।

दिल की बाते

तुम्हे चाह कर भी पा न सकूँगा,
दिल की बात बता न सकूँगा,
हम तुम मिले ना सही,
तुम्हे हरदम दिल में बसा के रखूँगा ।।१ ।।

मोहब्बत और फर्ज की जंग में,
किसी को भुला न सकूँगा,
माफ करना मगर,
चाहकर भी मोहब्बत को अपना न सकूँगा ।।२ ।।

तेरी वफा को याद रखूँगा,
तेरे खयालों को जुदा कर न सकूँगा,
माफ करना मगर,
चाहकर भी वफा कर न सकूँगा ।।३ ।।

ये दिन काट न सकूँगा,
रात बीता न सकूँगा,
सच कहता हूँ मगर,
जिंदा तो रहूँगा पर जी न सकूँगा ।।४ ।।

सच कहता हूँ मगर,
जिंदा तो रहूँगा पर जी न सकूँगा ।।

सचिन फराकटे
बी.ए. ।

जोक्स्

टीचरजी - सोनू तुम कल स्कूल क्यों नहीं आए?
सोनू - मास्टरजी, गिर गया था और लग गंई
टीचरजी - कहाँ गिरे थे और कहाँ लग गई
सोनू - बेडपर गिर गया था और आँख लग गई

दुनिया मे बेवफाओं की कमी नहीं है,
अब सूरज को ही देखो,
वह आता है, उषा के साथ,
रहता है, किरण के साथ,
और जाता है, संध्या के साथ ।

कु. प्राजक्ता महादेव सुतार
बी. ए. ।

होना जरूरी है।

कमरे में सोफे का, शादी में तोहफे का,
किचन में टोस्टर का, स्कूल में मास्टर का,
होना जरूरी है।
चाय में शक्कर का, नल में वॉटर का,
सर्दियो में स्वेटर का, होटल में वेटर का,
होना जरूरी है।
थिएटर में पिक्चर का, कॉलेज में लेक्चर का,
बस में चेकर का, बैंक में लॉकर का,
होना जरूरी है।
दूकान में सेलर का, जेल में जेलर का,
समाज में अखबार का, और
दूधसाखर महाविद्यालय में हमारा होना जरूरी है।

कु. शितल पाटील
बी.ए.।।।

प्यार

प्यार तो सब करते है,
लेकिन सच्चा प्यार वही करते है,
जो प्यार को गहराई से जानता है,
प्यार तो भगवान की देन है,
जो जिंदगी सँवारता है।
प्यार में जीना तो जीना होता है,
वरना बेकार का रोना होता है।
माँगने से कब मिलता है प्यार,
वह तो दिल की पुकार है यार।

पंडीत फराकटे
बी.ए. ।।

दोस्त

निशानेपर लगता है,
उसे कहते तीर,
दिल में उतर जाए,
उसे कहते हैं तस्वीर,
आप जैसे दोस्त को पाना,
उसे कहते ही तकदीर।

विनायक पाटील
बी. ए.।।।

ऐसा कोई

काँटो के इस सफर में,
कोई फुल बिठायेगी राहो में,
ऐसी कोई जीवन साथी,
आएगा मेरे जीवन में ?

अँधियाँरे इस जीवन को,
क्या बदलेगी कोई रोशनी में,
ज्यादा नहीं पर थोडासा रंग प्यार का,
भर देगी कोई जीवन में ?

इस जीवन की जंग मे,
बनेगी मेरी ढाल जो,
क्या ऐसी कोई साथी,
आयेगा मेरे जीवन में ?

तो मैं भी बनके दीपक,
रहुँगा उस ज्योति का,
क्या ऐसा कोई प्यारा साथी,
आयेगा मेरे सुने-जीवन में ?

अमित फराकटे

बी.एस्सी. ।।।

जिंदगी और मौत

क्या है जिंदगी ?
किसे कहते है जीना ?
क्या है मौत ?
किसे कहते है मरना ?

दूसरोंको गम देकर,
जीना भी क्या जीना,
क्या पाया क्या खोया,
खाली हाथ तो जाना ।

जानवर की मौत पाकर,
मरना भी क्या मरना ?
अमर पुण्य को छोडकर,
पाप लेकर क्या करना ?

दूसरों के गमों को बाँटकर,
अपना सुख उन्हें देना,
अपनों के साथ साथ,
दूसरोंके लिए भी जीना ।

जो जो आये धरती पर,
उनको एक दिन जाना,
कुछ और नहीं चाहता,
मुझे दूसरों के लिए है मरना ।

श्रीकांत फराकटे

बी.एस्सी. ।।

बचपन

काश! फिर से एक बार बचपन आता
बीती खुशियाँ वापस लाता।
माँ का प्यार दुलार मिल पाता ।
फिर से जी पाता बचपन का जीवन।
हाँ वही अबोध और अज्ञानता का जीवन।

दाढी मूँछौ से डरती
बडी-बडी आँखो से डरती
कई बहाने करके माँ तो
फिर से माँ की गोद में छुपती
हाँ वही तुतपालन और बालपन का जीवन।

कोई नहीं था दुश्मन तब तो
कहाँ खोयी या उलझन तब तो ?
बसा खेल-खेल में हँसता-रोता
दुख का कभी न अनुभव होता।
हाँ वही तनावमुक्त और स्वतंत्रता का जीवन।

काश! फिर से एक बार बचपन आता
बीती खुशियाँ वापस लाता ।

सचिन फराकटे

बी.ए. ।

स्पंदन

If somebody feels that they
have never made any mistakes
in their life, it means they had
never tried a new thing
in their life.

Albert Einstein

English Section

Prof. C. Y. Jadhav

INDEX

1)	What is Life ?	Miss. Priyanka Thanekar	3
2)	Good Thoughts	Miss. Vinaya M. Patil	3
3)	Just Fun	Miss Usha Khamkar	4
4)	The Face	Powar Anil Shivaji	4
5)	Mother	Yogesh Chopade	4
6)	Some Tips	Arun Balwant Dhond	5
7)	Only For You !	Arun Dhond	5
8)	Easy...Greatness !	Preeti Piraji Yadav	6
9)	Julius Caeser as a Political Tragedy	Deepali Patil	7
10)	Shylock as a Typical Villian	Geetanjali Chougale	10

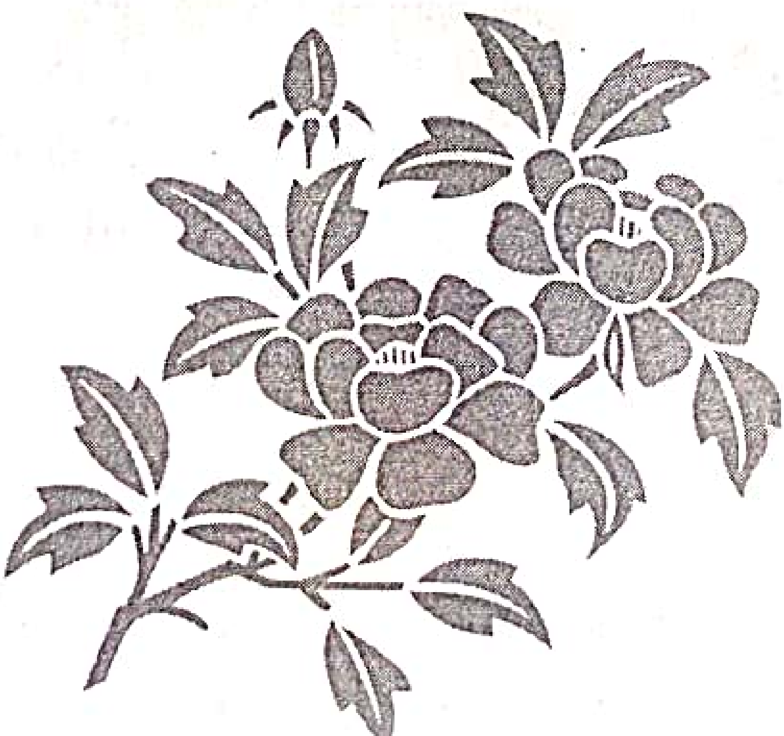

What is the life?

Life is an adventure - Dare it.
Life is an adjustment - Adjust it
Life is a book -Study it.
Life is beauty - Praise it.
Life is duty - Perform it
Life is an experiment - Do it.
Life is a flower - Smell it
Life is a game - Play it.
Life is a gift - Accept it.
Life is love Enjoy it.
Life is mystery - Unfold it.
Life is a challenge - Face it.
Life is a promise - Fulfill it.
Life is a puzzle - Solve it.
Life is a spirit - Realise it.
Life is a straggle - Fight it.

Priyanka Thanekar
B. A. III

♦♦♦

Good Thoughts

- People become unhappy because they construct walls instead of bridge.
- Our work is presentation of our capabilities.
- 'Silence' on face may avoid many problems and 'Smile' on face may solve many problems ! so have a silence with smily face.

Twelve things to remember

1) The value of Time,
2) The success of Preservance,
3) The pleasure of Working,
4) The dignity of Simplicity,
5) The worth of Character.
6) The power of Kindness,
7) The influence of Examples,
8) The obligation of Duty,
9) The wisdom of Eeconomy,
10) The virtue of Patience,
11) The importance of Talent,
12) The joy of Originating.

Miss. Vinaya M.Patil
B.A. I

Just Fun.....

Guest - Sonu, where is your mother?
Sonu - She has gone to the market but she will be back soon.
Would you like tea or coffee?
Guest - 'Tea' will be better.
Sonu - Brook Bond, A1 or Taj mahal?
Guest - Red label Tea
Sonu - In a cup or a glass?
Guest - In a cup if possible.
Sonu - Steel cup or china cup?
Guest - Don't give me tea. please give me medicine My head is aching.
Sonu - Disprin or Anacin?
Guest - I don't want any medicine; take me home please.
Sonu - By 'Bus' or by 'taxi'

(The Guest runs away)

Usha Khamakar
B.A. I

The Face

I know a face, a lovely face
As full of beauty and grace.
A face of pleasure, ever bright,
In utter darkness it gives light.
A face that is itself like joy,
To have seen it, I am a lucky boy.
But I have joy that few others have
This lovely joy is my Mother

Powar Anil Shivaji
B.Sc. III (Phy.)

◆◆◆

Mother

M - Most marvellous work of God!
O - One and only good person!
T - Tender love that she gives!
H - Heaven she makes of earth!
E - Excellence that she possesses!
R - Resource of happiness and comfort.

Yogesh Chopade
B.A. III (English)

Some Tips

My friendship is like an onion
Which has many layers in it...
It will add taste to your life.
But If you try to cut it.
You will have tears in your eyes.

♦♦♦

One beautiful Heart is
Better than Thousand
Beautiful faces....one
Honest wish of sweet
Friend is stronger than
God's thousands blessings.

♦♦♦

Do not do well in the past
Do not dream of the future,
Concentrate the mind,
On the present moment.

Arun Dhond
B.A. I

Only for you !

I took admission in college
Only for you!
I come in the college,
Only for you !
I sit in the library,
Only for you !
I do all experiments,
Only for you !
I complete the journals,
Only for you !
I never visit the canteen,
Only for you !
I attend all the lectures,
Only for you !
I complete all the notebooks,
Only for you !
I read all the books,
Only for you !
I don't lose concentration,
Only for you !
Whatever I do,
Is only for you,
Oh my dear Examination,
only for you !

Arun Dhond
B.A. I

♦♦♦

Easy...Greatness

Easy to judge someone's mistakes,
Greatness is to recognise our own mistakes.
Easy is to talk without thinking,
Greatness is to refrain the tongue.
Easy is to hurt someone who loves us.
Greatness is to heal the wound....
Easy is to set rules...
Greatness is to follow them...
Easy is to show victory,
Greatness is to assume defeat with dignity...
Easy is to stumble with a stone,
Greatness is to get up...
Easy is to enjoy life everyday
Greatness is to give its real value...
Easy is to promise something to someone,
Greatness is to fulfill that promise...
Easy is to criticise others.
Greatness is to improve oneself...
Easy is to think about improving.
Greatness is to put it into action.
Easy is to think bad of others.
Greatness is to give them the benefit of the doubt...
Easy is to receive.
Greatness is to give...
Easy is to keep the friendship with words,
Greatness is to keep it with meanings.

Preeti Yadav
B.A. III (English)

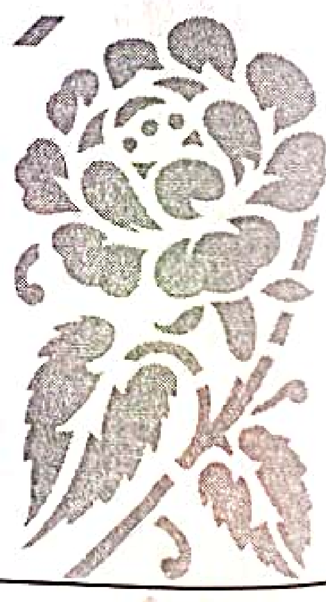

'Julius Caesar' as a Political Teagedy

Shakespeare's concept of tragedy is largely Aristotelian. But differs from the greek master. A shakespearean tragedy usually falls into five technical parts - Exposition, rising action, crisis, falling action & catastrophe. A shakespearean tragedy is a story of exceptional calamity leading to the death of a man in high estate. We see a number of human beings placed in certain circumstances. The theme of shakespearean tragedy is the struggle between good & Evil resulting in sorrow, suffering & death. According to shakespeare's conception of tragedy & tragic hero, tragedy arises out of conflict (external as well as internal) in the mind of the hero, usually a man of high status, gifted with a full tendency to identify his whole being with one interest, object, passion or habit of mind.

It is well-known that shakespeare did not invent his own plot but borrowed themes from variety of sources for his Roman tragedies. Shakespeare borrowed material from North's transaction of Plutarch's lives of noble Grecians & Romans.

A Shakesperacan tragedy is predominently the story of one man, the hero or as in the love-tragedies, at the most of two, the hero & the heroine. The story leads upto & includes the death of the hero. As A.C. Bradley says - "Shakespearean tragedy is erssentially a tale of suffering & calamity conducting to death."

Shakespeare's tragic heroes are persons who, "Stand in a high degree." For e.g. Hamlet, King lear, Macbeth etc. The plot of Julius Caesar is based upon history but it is not a historical play. It is not the intension of shakespeare to present the historical facts about the life Caesar but to create a work of art. The interest of the play does not lie in the outer facts of history as in the inner life of the Characters.

On the other hand tragedies deal with the psychological or inner conflicts. Shakesperare shows in his historical plays the heros as mainly concerned with keeping their crowns with wars & battles etc. But in the tragedies he shows the heros battling with forces within

themselves & falling because of some fatal flaw in their own characters. Julius Caesar belongs to this class of the plays.

When the play opens Julius Caesor appeares to be all powerful in the Roman world. He has won many glorious victories & defected great Pompey & his sons. Caesar has extended the frontiers of the Roman empire & he is now in full control of the Roman world. A powerful man like him was needed in the critical period to save the Roman empire from disintegration.

In those days the Romans were familiar with only one form of government that is the 'Kingship'. At the beginning of the year 44 B.C., there was a sharp division between the monarchists that is supporters of Caesar & Republicans i.e. senators who were against monarchic principles.

We see Roman political society developing under Caesar. As a monarch is always proud & boastful, on the question of freedom or rebell of public, Caesar answers arroganthly in the third person, 'Know, Caesar doth not wrong, nor without cause.' He says further, 'I am constant as the northern star & constant to remain to Reephin so.'

As a result, the conspirators who intend to end the dectatorship act on their beliefs & Caesur is stabbed by Brutes. Observations are found from political point of view. The conspirators except Brutes acted to do so in their personal envy of great caesar & Brutes. In his imaginary picture of caesar as a tyrant joints the conspirators & makes blunder after blunder. The conspirators do not have the capacity to organize the people. They quarrel amongst them selves & loose the battle. It is not the tragedy of the republicanism. The ghost of caesar, octavious & Caesarism continues even after the death of Julius Caesar.

Brutes might have committed a number of errors but the play shows without shadow of doubt that Roman was not ripe at the time for republican principles. The people were still hero worshipers & they wanted a strong god-like person to control them.

Julius caesar is thus a political

tragedy exploring the relation between private & public virtue, between personal morality & political efficiency between innocence & action.

The political reasons & interests are more strong than the historical reasons & hence, Julius caesar is more a political tragedy than a historical tragedy.

Deepali Patil

B. A. II (English)

Shylock as A Typical Villain

Shakespeare's 'The Merchant of Venice' is one of the most popular plays and the popularity basically rests on the character of Shylock, the Jew. There is no doubt that Shakespeare conceived Shylock as the villain of the play. Shakespeare ensured this by making Shylock a Jew and a money-lender. Because in Shakeshpeare's time both these things were utterly hateful. But inspite of all this Shylock, the Jew money - lender, is the villain who hates and catches the opportunity. He seeks and catches the opportunity of having Antonio at his mercy. We see him insisting on following the bond to nearly mad, when Jessica elopes taking a lot of jwellery and money with her. He has some pleasing aspects too. He does love his dauqhter, his servant Launcelot and his wife also. Some critics feel that Shylock is too severely punished but after all, he was on the point of commiting legal murder.

We have to think Shylock in the Elizabethan context instead of applying modern standards and

values. Elizabethan concept of Jew - a greedy, heartless, selfish and miserly money-lenders. We have to keep in mind that 'The Bible' bans to Christians from taking interest. They did not charge any interest on the loans which borrower used to borrow from them. In the age of Shakespeare, the business become a prerogative of the Jews and it resulted into the hatred for christians. Christians started to have them because according to christian doctrines was hatred. And yet they lived together in the same community. tolerated each other sheerly out of social need.

Shylock was a Jew living in Venice where majority of the people were christians.

Undoubtedly it was a racists society where Jews were persecuted and looked down upon. Shylock knows the history of hebrew race, culture and religion.

He loves them from the bottom of his heart. He was staunch Jew. He believes in the sacredness of the Jewish way of life. He did not like loose ways of the christians. His business was also sacred to him. His

ideas about business were different than christians. Usury was not a sin as Jew thought it is just like any other business. He says 'Theft is blessing, if men steal not' He did not see any wrong in taking interest on money. It was like making profit out of selling things, He hated christians more than any body. He was too angry and frustrated, nearly became mad when his only daughter Jessica married a christian.

Shylock hated Antonio, the wealthy merchant of Venice in his enemity for more than one reason. Shylock says himself.

"I hate him for he is a christian,

But more for that in low simplicity

He lends out money grafis and brings down

The rate of usance here with us in Venice."

Moreover he tells Antonio how he publically abuses him, spit on his jewish gaberdine, instults him. Shylock's business as a money-lending was sacred to him. He has stored a lot of money and guarded it from theft. He did not trust anybody with his money, not even his own daughter. It is this view of his business and his love for life. He used to hate Antonio because of Antonio took less interest. Shylock got pleasure from Antonio's loss. On the debt the consequences of this, Shylock

cannot carm more money through his business usury. It was one of the reasons why he hated Antonio shylock did not want to miss a single opportunity to take revenge. He thought over Antonio's proposal carefully. The man seeking loan from him was not important for him.

The guarantor, Antonio was more important, Because Antonio was one of his christian competitors. It was here that we found the seed of his passion for revenge. This passion of revenge shown intensely in the play. He would have nothing else but the for feature noted in the bond. And what is this punishment? A pound of Antonio's flesh from near of the heart. Really heartless isn't he? Those who believe that it is a 'merry bond' point out that shylock belongs to the minority community. He has to live among the christians who abused, insulted and betrayed the jews openly. If shylock hates the christians, it is understandable. But at the same time, he can not live safely by instigating them by his actions. After all, they are the source of his income so Shylock has to tolerate them.

There is every possibility that Autonio would repay it in time. In that case revenge would have been an empty dream. Shylock's daughter Jessica falls in love with a christian named Lornw. She elopes with him. That is dagger in his heart. She inflicts more torture on him by taking away the only thing he loved, money and gold. Shylock is miser charging heavy interest. Money is everything to him. He hates Antonio. When because she wbs him a lot of money and gold, and we hear of him wandering on the streets as a mad man shouting. "My daughter! O My ducate ! O My daughter fled with a

christian! O my christian ducates !" It shows that Shylock loves money more than his daughter.

All the characters speak about Shylock as a villain. Antonio, Bassanio, Jessica, Launcelot Gobbo, have harsh words for him Shylock's behaviour in the trial scene show his mercilessness, his cruelty, selfishness, sharpening his knife, revengeful attitude, his denial to listen to any kind of persuation, his insisting on the pound of flesh of Antonio's heart. means nearly to murder him.

It is Portia who catches Shylock in his own bond. Who comes in th guise of a lawyer. She allows him, to have his a pound of flesh, but keeps a condition. While taking flesh from his nearest part of heart, he should not shed a drop of blood because it is not mentioned in the bond. Shylock is trapped in his own cage. He became helpless because as a punishment his whole property was confiscated and he has to convert into christanity.

If Shylock showed mercy for Antonio he would have become a hero. But he refused it.

But shylock is not Iago of Othello one of the greatest Shakespearean tragedies and Iago is one of the most heartless villains. He takes revenge on Othello, military commander for shallow reasons. That he was denied promotion and that he had unfounded suspicion about Othell's illicit relationship with his wife Emilia.

But Shylock has a firm background which makes him a villain. How Shylock and Jews in general are treated by the christians - spitting, pulling beards, public insult etc. So the injustice makes Shylock angry and frustrated when an opportunity presented itself, he took revenge.

Geetanjali R. Chougale
B.A. II (English)

विनायक पाटील बी.ए. ॥

जितेंद्र पाटील बी.ए.॥

विविध समित्यांचे अहवाल

अनुक्रमणिका

१)	वार्षिक अंक व भित्तीपत्रक समिती	३
२)	आर्टस सर्कल समिती	३
३)	प्रसिध्दी विभाग समिती	३
४)	कला मंडळ - व मराठी विभाग	३
५)	सहल व हायकिंग समिती	३
६)	माजी विद्यार्थी समिती	४
७)	स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन समिती	४
८)	महिला सबलीकरण समिती	४
९)	राष्ट्रीय सेवा योजना समिती	५
१०)	ग्रंथालय समिती	६
११)	जिमखाना अहवाल	७
१२)	सांस्कृतिक विभाग	८
१३)	हिंदी विभाग	९
१४)	राज्यशास्त्र विभाग	९
१५)	कार्यशाळा व चर्चासत्र समिती	१०

वार्षिक अंक व भित्तीपत्रक समिती

शैक्षणिक वर्ष २००९-१० मध्ये या समितीने खालीलप्रमाणे उपक्रम राबविले.

१) संपकालावधीत पावसाळी व स्वातंत्र्यदिन विशेषांक प्रसिध्दी झाले नाहीत.

२) २ ऑक्टोबर २००९ रोजी दसरा-दिवाळी विशेषांकाचे प्रकाशन हस्ते. श्री. राजेंद्र शेळके - माजी विद्यार्थी संघटनेचे अध्यक्ष उपस्थित मा. प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर सर.

३) २६ जानेवारी २०१० रोजी प्रजासत्ताकदिन विशेषांक प्रकाशित हस्ते. मा. जी.डी. पाटील सर (संचालक बिद्री कारखाना) प्रमुख उपस्थित मा. केशवराव पाटील (उपाध्यक्ष बिद्री कारखाना) इतर संचालक, कार्यकारी संचालक व मा. प्राचार्य.

४) 'स्पंदन' वार्षिक अंकासाठी दि. १३/२/२०१० पर्यंत विद्यार्थ्यांकडून साहित्य व प्राध्यापकांकडून अहवाल मागविले.

५) साहित्य जमा करून दि. २० एप्रिल २०१० पर्यंत अंक प्रकाशित करणे.

या कामी मा. प्राचार्य यांचे मार्गदर्शन संस्थेचे प्रोत्साहन तर प्रा. सी. वाय. जाधव, प्रा. डॉ. एस्. बी. देसाई, प्रा. डॉ. एम. व्ही. टाकळे व श्री. नामदेव वारके यांचे सहकार्य लाभले.

प्रा. डॉ. एस्. डी. पाटील

आर्टस सर्कल समिती

२००९-१० या शैक्षणिक सालामध्ये आर्टस सर्कल या कमिटीमधील इंग्रजी विभागाचा मी निमंत्रक या नात्याने जानेवारी महिन्यामध्ये आर्टस व सायन्स विभागातील विद्यार्थ्यांच्या 'Good Handwriting in English' या स्पर्धेचे आयोजन केले.

प्रा. साळोखे एस. ए.

प्रसिध्दी विभाग समिती

महाविद्यालयातील विविध उपक्रमांच्या बातम्या दै. पुढारी, दै. सकाळ, दै. लोकमत, दै. तरूण भारत वृत्तपत्रातून प्रसिध्द झाल्या आहेत.

निमंत्रक

श्री. ए. जे. वारके

कला मंडळ - व मराठी विभाग

महाविद्यालयातील कला मंडळ व मराठी विभागाच्या वतीने निबंध, हस्ताक्षर, वक्तृत्व स्पर्धेचे आयोजन करण्यात आले.

निमंत्रक

श्री. ए. जे. वारके

सहल व हायकिंग समिती

सन २००९-१० या शैक्षणिक वर्षात कला विभागातील इतिहास विभागाची अभ्यासक्रमावर आधारीत शैक्षणिक सहल कोल्हापूर, औंध, सातारा, नारायणगाव, बालाजी या ठिकाणी दिनांक ५ जानेवारी रोजी जावून आली. सदर सहलीसाठी विभागातील १० विद्यार्थी व प्रा. डॉ. ए. आर. माने व एस आर. पाटील होते. त्याच प्रमाणे दिनांक १ फेब्रुवारी व २फेब्रुवारी रोजी मराठी, इंग्रजी व हिंदी विभागाची संयुक्त सहल अलमटी, विजापूर, कुडल संगम, बदामी या स्थळांना भेटी देवून आली. सदर सहलीमध्ये १२ विद्यार्थी व प्रा. डॉ. ए. जे. वारके होते.

शास्त्र विभागातील, फिजीक्स , केमेस्ट्री व बॉटनी विभागाची शैक्षणिक सहली जावून आल्या आहेत.

सदर कमिटीमध्ये शास्त्र विभागाकडून प्रा. एस.एस.पाटील यांचे सहकार्य लाभले.

आपला

प्रा. एस. आर. पाटील

निमंत्रक

माजी विद्यार्थी समिती

मी माजी विद्यार्थी व पालक संघ या समितीचा निमंत्रक म्हणून काम पाहत आहे. या वर्षी २ आक्टो. गांधी जयंती निमित्त माजी विद्यार्थ्याचा मेळावा आयोजित केला होता. या मेळाव्यासाठी ७० एक माजी विद्यार्थिंही उपस्थित होते. त्यांच्याशी संर्व प्राध्यापक, समिती व प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर सर यांनी हितगूज केले. व त्यांना भावी काळातील यशाबद्दल शुभेच्छा व्यक्त केल्या. विद्यार्थ्यांनी ही आपल्या मनोगतातून महाविद्यालयाकडून आपल्या अपेक्षा काय आहेत त्या व्यक्त केला. पालक मेळावा जूलैमध्ये घेण्याचे ठरले सदरकामी प्रा. पी. एस. पाटील यांनी सहकार्य केले.

आपला

एस. आर. पाटील

निमंत्रक

स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन समिती

१) आठवड्यातून दोन दिवस (मंगळवार, शुक्रवार याप्रमाणे विद्यार्थ्यांना स्पर्धा परीक्षा मार्गदर्शन केले.

२) दि. ०७/११/२००९ रोजी फ्रॅक्लीन इन्स्टिट्यूट, कोल्हापूर येथील तज्ञांनी 'हवाई क्षेत्रातील नोकरीच्या संधी' या विषयावर व्याख्यान दिले.

३) दि. १४/१२/२००९ रोजी 'स्मार्ट इंडिया' उपक्रमाचे सर्जेराव म्हातुगड व राजकुमार उपाध्ये यांनी रोजगार संधी व स्पर्धा परीक्षा या विषयावर व्याख्यान दिले.

४) वेगवेगळ्या स्पर्धा परीक्षांच्या येणाऱ्या जाहीरातीची माहिती विद्यार्थ्यांना करून दिली. व फॉर्म भरून घेतले.

वरील प्रमाणे कमिटीचे कामकाज केले.

आपला विश्वासू

प्रा. एन. एम. पाटील

निमंत्रक

महिला सबलीकरण समिती

महिला सबलीकरण कक्ष कमिटीच्यावतीने १६/०१/२०१० रोजी 'महिलांसाठी हळदी-कुंकू' हा कार्यक्रम आयोजित करण्यात आला. या कार्यक्रमाअंतर्गत महिलामध्ये वाढता 'मानसिक ताण-तणाव' या विषयांवर डॉ. एम. ए.म कदम यांनी व्याख्यान दिले. या कार्यक्रमांमध्ये महिलांना हळदी-कुंकू व तिळगूळ वाटप करण्यात आले. या कार्यक्रमामध्ये सदलगे मॅडम यांचे सहकार्य मिळाले या कार्यक्रमाला मा. प्राचार्य डॉ. राजगोळकर सर यांचे मार्गदर्शन लाभले.

निमंत्रक

कु. प्रा. सारिका कांबळे

राष्ट्रीय सेवा योजना समिती

१) दि. ११ जूलै २००९ रोजी जागतिक लोकसंख्या दिन साजरा केला. त्यामध्ये महाविद्यालयातील समाजशास्त्राचे प्रा. डी. के. शिंदे यांनी लोकसंख्या वाढीचे दुष्परिणाम विषद केले. तसेच त्यांनी लोकसंख्या नियंत्रीत करण्यासाठी उपायांची माहिती दिली कार्यक्रमाला विद्यार्थी विद्यार्थींनी उपस्थित होत्या.

२) दि. २७/१०/२००९ रोजी बिद्री व कारखाना परीसरातील स्वच्छता मोहीम आयोजित केली. सफाई व कचरा निर्मूलन केले. ग्रामपंचायत बिद्रीचे सहकार्य लाभले.

३) दि. १० डिसें. २००९ रोजी महाविद्यालयामध्ये छत्रपती प्रमिलाराजे हॉस्पिटल, कोल्हापूरच्या रक्तपेढीच्यावतीने रक्तदान शिबिर आयोजित केले. शिबिरामध्ये ७०स्वयंसेवकांनी रक्तदान केले.

४) दि. ६ जाने २०१० रोजी महाविद्यालयामध्ये चालू असलेल्या बांधकामामूळे निर्माण झालेली घाण साफ केली.

५) दि. १२/०१/२०१० रोजी महाविद्यालयामध्ये विवेकानंद जयंती व राजमाता जिजाऊ जयंती साजरी केली. प्रा. एस. आर. पाटील यांनी मार्गदर्शनपर भाषण केले. तसेच स्वयंसेवक प्रकाश महाडेश्वर व अमर पाटील यांनी मनोगत व्यक्त केले

६) शासनाच्यावतीने घेतलेल्या पल्स पोलीओ २०१० मोहिमेस परीसरामधील वेगवेगळ्या गावामध्ये स्वयंसेवकानी सहकार्य केले.

७) शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर व सहकार भुषण एस. के. पाटील महाविद्यालय, कुरुंदवाड यांच्या संयुक्त विद्यमाने कार्यक्रम अधिकारी व स्वयंसेवक यांची एक दिवशीय कार्यशाळा दि. २८ डिसें. २००९ रोजी आयोजित करण्यात आली . त्यामध्ये कार्यक्रम अधिकारी प्रा. डी. एन. पाटील, स्वयंसेवक कु. मयुरी गोते व कु. अश्विनी पोवार सहभागी झाले.

८) दि. ०२ आक्टो. २०१० रोजी महात्मा गांधी जयंती साजरी केली. व हा दिवस अहिंसा दिवस म्हणून साजरा केला.

९) दि. ०८ फेब्रु. २०१० रोजी महाविद्यालयाच्या गुणगौरव समारंभानिमित्त महाविद्यालय व परीसर स्वच्छता मोहिम राबविली. कचरा निर्मूलन केले. तसेच शौचालये व मूतान्या स्वच्छ केली.

१०) दि. ४ मार्च २०१० रोजी निगवे गावामध्ये ग्रामस्वच्छता अभियान राबविले. सर्व गाव लख्ख स्वच्छ केला. कचरा निर्मूलन केले. तसेच गटारी स्वच्छ केल्या.

११) दि. २० फेब्रु. २०१० रोजी महाविद्यालयासमोर शिवजयंती साजरी केली. प्रा. डी. के. शिंदे यांनी प्रतिमा पूजन केले. प्रा. एस. आर. पाटील व प्रा. ए. आर. माने यांनी शिवरायांचा तेजस्वी इतिहास कथन केला.

विशेष श्रमसंस्कार शिबीर

आरोग्यासाठी, सार्वजनिक व व्यक्तिगत स्वच्छता विशेष श्रमसंस्कार शिबिर, बेलवले

बुदुक ता. कागल येथे दि. १८ जाने. २०१० ते २४ जाने २०१० दरम्यान आयोजित करण्यात आले. यामध्ये स्वयंसेवक व ग्रामस्थ सहभागी झाले.

शिबिराचे उद्घाटन आमदार के. पी. पाटीलसाो यांच्या हस्ते झाले. प्रथम गावामधून प्रचार फेरी काढून वातावरण निर्मिती केली. स्वयंसेवकानी स्त्रीभृण हत्या, आरोग्य, स्वच्छता, पर्यावरण, विषयक घोषणा दिल्या. शिबिरादरम्यान ग्रामसफाई, गटार, स्वच्छता, कचरा निर्मूलन, गाव तलावामधील पान वनस्पती गारवेल निर्मूलन केले. तसेच रस्ते दुरुस्त केले. त्याचप्रमाणे खालील प्रमाणे व्याख्यानांचे आयोजन केले.

१) सार्वजनिक व व्यक्तीगत स्वच्छता
प्रा. पांडूरंग सारंग

२) युवकाना शेती व्यवसायात संधी
डॉ. प्रकाश बाळासाहेब पाटील

३) किफायतशिर दुग्ध व्यवसाय
डॉ. प्रकाश साळुंखे

४) फुले, शाहू, आंबेडकर यांचे सामाजिक कार्य
प्रा. डॉ. अनिल माने

५) आरोग्य, बचत व सहकार
श्रीमती एम. एम. सातवेकर

६) संमोहन व तणाव निर्मूलन
प्रा. एस. जी. खानापूरे

७) बदलते विश्व व युवकांची जबाबदारी
श्री. संदीप मगदूम

शिबीराची सांगता माजी आमदार नामदेवराव भोईटे यांच्या हस्ते झाली. त्यांनी श्रमदानाची पाहणी केली व स्वयंसेवकाचे कौतूक केले. शिविर यशस्वी करण्यासाठी सरपंच, उपसरपंच ग्रामपंचायत सदस्य, विविध संस्थांचे पदाधिकारी ग्रामस्थ, तरूण मंडळे यांचे सहकार्य लाभले.

राष्ट्रीय सेवा योजनेचे सर्व उपक्रम यशस्वी करण्यासाठी मा. प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर यांचे मार्गदर्शन लाभले. तसेच कार्यक्रम अधिकारी प्रा. डी. एन. पाटील, प्रा. एस. जी . खानापूरे, कमिटी सदस्य प्रा. एस. एस. पाटील, प्रा. एस. आर. पाटील. प्रा. ए. बी. माने, श्री. एन. व्ही. पाटील यांनी परिश्रम घेतले.

प्रा. डी. एन. पाटील
निमंत्रक

ग्रंथालय समिती

आधूनिक काळात ग्रंथालये ही ज्ञानाची केंद्रे बनली आहेत. ज्ञानाच्या कक्षा खूपच रूंदावल्या आहेत. नवनवीन गोष्टी निर्माण झाल्या आहेत. ज्ञानाच्या सर्व शाखेत अगणित माहिती प्रगत झाली आहे. व प्रकाशित होत असते, विज्ञान व तंत्रज्ञान या शाखेत तर खूपच भर पडलेली आहे. ग्रंथालय ही एक सामाजिक संस्था आहे. समाजाच्या हितासाठी तिचे संवर्धन करणे ही काळाची गरज आहे. स्वाभाविकपणे समाजातील आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक अशा विविध घटनाचा आचार विचारांच्या आवडी निवडीचा परिणाम सतत ग्रंथालयावर हातो. ज्याप्रमाणे वाचकाच्या गरजा वाढतात तसे शोध लावून ज्ञानाची कक्षा वाढवून माहिती गोळा केली जाते. कोणत्याही विषयाचा विकास हा त्या विषयात झालेल्या संशोधनावर शोधावर अवलंबून

असतो. ही सामाजिक संस्था असल्यामुळे ग्रंथालय ही विद्यार्थ्यांच्या पारंपरिक संकल्पना बदलून ते ज्ञानाचे माहीतीच अध्ययावत केंद्र बनले आहे. मानवाच्या मनावर चांगले संस्कार होण्यासाठी चांगल्या ग्रंथाचे वाचन मनन, चिंतन करावे लागते. त्यामुळे चांगले संस्कार होऊन त्याचा सर्वांगीण विकास होतो. भावी जीवन सुसंस्कृत, कार्यक्षम होण्यासाठी ग्रंथालयाचा आधार घ्यावा लागणार आहेच.

२१ व्या शतकाच्या उंबरठ्यावर उभा असता, मानवाच्या संस्कारावर, समाजशिलतेवर झालेली तांत्रीक आक्रमणे, प्रसार माध्यमाच्या व करमणूकीच्या साधनाचा पगडा यामुळे मानवी मनावर विपरीत परिणाम होत आहे. मानवी मनावर बुध्दीवर, विचारांवर चांगले संस्कार व्हायचे असतील तर मानवाला ग्रंथालयाचा,चांगल्या ग्रंथाचा आधार घेतलाच पाहिजे. शाळा व महाविद्यालयातून आदर्श नागरीक निर्माण करण्यासाठी व्यावसायाभिमुख व संस्कारक्षम शिक्षण देण्यासाठी ग्रंथालय उपयुक्त ठरतात. त्यासाठी समृध्द ग्रंथालय ही आधूनिक युगाची खरी गरज आहे. मा. प्रा. डॉ. राजगोळकर आर. एल. यांनी बदलत्या शैक्षणिक धोरणानुसार १० व्या वार्षिक योजणेतून यु. जी. सी. कडून सूमारे ९८४०००/- इतके अनुदान ग्रंथालयासाठी प्राप्त करून दिले. सन २००९-२०१० या शैक्षणिक वर्षात ग्रंथालयात ४४७ ग्रंथ खरेदीसाठी ८५४७२ रु. खर्च केलेले आहेत. सी. एम. एल. टी हा नविन कोर्स सुरु आहे. तसेच बी. सी. एस. या कोर्ससाठी खास पुस्तकाची व्यवस्था केली आहे.

ग्रंथालय कामकाज सुखकर, चांगले, समाधानी होण्यासाठी मा. आ. के. पी. पाटीलसाहेब व सर्व संचालक मंडळ याचे मोलाचे मार्गदर्शन लाभले आहे. मा. कार्यकारी संचालक व सचिव मा. चौगुले साहेब यानीही वेळोवेळी मार्गदर्शन केले आहे. मा. डॉ. प्राचार्य आर. एल. राजगोळकर व ग्रंथालय कमिटी आदर्श यानी ग्रंथालयाच्या विकासासाठी व भरभराटीसाठी खूप त्रास घेतलेला आहे. व त्याचे मार्गदर्शन व सूचना ह्या ग्रंथालय विकासासाठी खूप उपयुक्त ठरलेल्या आहेत. त्यामुळे ग्रंथालयाचा विकास झाला, विद्यार्थी व प्राद्यापक यांच्या सहकार्यामुळेच महाविद्यालयाचे ग्रंथालय हे आज सर्व बाजूने सुसज्य व संपन्न झाले आहे.

मा. श्री. वागरे ए. टी.

जिमखाना अहवाल

आपल्या महाविद्यालयाने शैक्षणिक वर्ष२००९-१० मध्ये व्हॉलीबॉल, अथलेटिक्स, ज्युदो, टेबल टेनिस इ. खेळात कोल्हापूर विभागीय स्पर्धेत व क्रॉसकंट्री ॲथलेटिक्स , जिमनास्टीक, पोहणे इ. स्पर्धेत शिवाजी विद्यापीठ आंतर विभागीय स्पर्धेत सहभाग घेवून स्पृहनीय यश संपादीत केले.

१) पोहणे स्पर्धेत- अनिल बाबुराव मगदूम
लक्ष्मण बापू मगदूम यांची
आंतर विभागीय स्पर्धेसाठी निवड

२) ॲथलेटिक्स - जत येथे झालेल्या शिवाजी विद्यापीठ आंतर विभागीय स्पर्धेसाठी
१) रविंद्र साताप्पा जठार व
२) रणजीत मधुकर पाटील यांची निवड

३) जिमनास्टीक स्पर्धेत महाविद्यालयाने शिवाजी विद्यापीठात आंतर विभागीय स्पर्धेचे अजिंक्य पद पटकावून मामासाहेब जगदाळे ट्राफीवर आपले नाव कोरले.

संघातील यशस्वी खेळाडू : १) अनिल मगदूम २) प्रविण चव्हाण ३) लक्ष्मण मगदूम ४) अमर यादव ५) रविंद्र जठार ६) वैभव आरडे ७) स्वप्नील पाटील वरील स्पर्धेतून स्वप्नील पाटील यांची ग्वाल्हेर येथील अखिल भारतीय आंतर विद्यापीठ स्पर्धेसाठी निवड झाली.

सदर सालामध्ये महाविद्यालयाने शिवाजी विद्यापीठ अंतर विभागीय क्रॉस कंट्री (पुरुष व महिला) तसेच बास्केटबॉल (महिला) स्पर्धेचे यशस्वी आयोजन केले. कोल्हापूर विभागीय बास्केटबॉल (पुरुष) स्पर्धेचेही आयोजन केले.

वार्षिक क्रीडा स्पर्धेत क्रिकेट, व्हॉलीबॉल, कॅरम, बुध्दीबळ, टेबल टेनिस व ॲथलेटिक स्पर्धेचे आयोजन केले.

जनरल चॅम्पीयनशीप मुलांमध्ये पाटील रणजीत मधुकर, व मुलींमध्ये संपदा देसाई यांनी पटकाविले.

या कामी संस्था, प्राचार्यसो यांचे मार्गदर्शन लाभले.

प्रा. एन. डी. पाटील

सांस्कृतिक विभाग

सन २००९-१०या शैक्षणिक वर्षामध्ये महाविद्यालयाच्या सांस्कृतिक विभागाने विजयाची यशस्वी परंपरा कायम राखत महाविद्याचे नाव विद्यापीठ व राज्य पातळीवर पोहचवले. याचा मला सार्थ अभिमान वाटतो. चालू वर्षामध्ये सांस्कृतिक विभागाच्यावतीने खालील उपक्रम यशस्वी रित्या राबवले.

२६ जून २००९ रोजी लोकराजा छत्रपती शाहू महाराज जयंती

१० सप्टेंबर २००९ रोजी शिक्षक दिन

१८ सप्टेंबर २००९ रोजी प्रथम वर्षातील विद्यार्थ्यांसाठी स्वागत समारंभाचे आयोजन.

५ ऑक्टोबर २००९ रोजी मलकापूर येथे जिल्हास्तरीय युवक महोत्सवमध्ये पथनाट्य, मुखनाट्य, हिंदी वक्तृत्व, मराठी वक्तृत्व, वादविवाद या प्रकारामध्ये महाविद्यालय सहभाग घेतला. यामध्ये पथनाट्य संघाने द्वितीय क्रमांक प्राप्त करून मध्यवर्ती युवक महोत्सवामध्ये मंजल मारली.

९,१० ऑक्टोबर २००९ रोजी रहिमतपूर जिल्हा-सातारा येथे महाविद्यालयीन, पथनाट्याने यश संपादन केले.

२६ नोव्हेंबर२००९ रोजी महाविद्यालयामध्ये मुंबई येथील २८ आकरा च्या अतिरेकी हल्ल्यामध्या शहिद झालेल्या जवानांना आदरांजली वाहन्यात आली तसेच या दिवशी संविधान दिवस म्हणून साजरा करण्यात आला.

१८ डिसेंबर २००९ रोजी कॉमर्स कॉलेज कोल्हापूर येथे महाविद्यालयीन पथनाट्य, मुखनाट्य सादर केले. यामध्ये महाविद्यालयीन मुकनाट्याने प्रथम क्रमांक प्राप्त केले.

३ जानेवारी२०१० रोजी सावित्रीबाई फुले जयंतिचा कार्यक्रम साजरा करण्यात आला.

१४ जानेवारी २०१० रोजी संक्रांतच्या निमित्ताने पारंपारिक वेशभूषामध्ये महाविद्यालयीन विद्यार्थी विद्यार्थींनी सहभाग घेतला.

११ फेब्रुवारी २०१० रोजी विविध गुणदर्शन व पारितोषिक वितरण समारंभाच्या निमित्ताने सांस्कृतिक कार्यक्रम पार पाडण्यात आले.

२५ फेब्रुवारी २०१० रोजी बी. ए. व बी.एस्सी भाग ३ च्या विद्यार्थ्यांचा सदिच्छ समारंभ आयोजित करण्यात आला.

या सांस्कृतिक विभागामध्ये काम करत असताना कला विभागाच्या वतीने डॉ. माने ए. आर. व शास्त्र विभागाच्या वतीने प्रा.सावंत एस. के. व प्रा. पाटील आर. एस. तसेच महाविद्यालयीन अन्य प्राध्यापक व शिक्षकेत्तर कर्मचारी तसेच महाविद्यालयाचे प्राचार्य डॉ. राजगोळकर यांची प्रेरणा व मार्गदर्शन मिळाले व संस्थेचे अध्यक्ष व संचालकांचे सहकार्य मिळाले.

निमंत्रक
सांस्कृतिक विभाग
प्रा. डॉ. देसाई एस. बी.

हिंदी विभाग

सन २००९-१० या शैक्षणिक वर्षामध्ये विभागाच्या वतीने भरगोस कार्यक्रम घेण्यात आले. १४ सप्टेंबर हा दिवस देशभरामध्ये हिंदी दिन म्हणून साजरा केला जातो. या वर्षीही महाविद्यालयामध्ये हिंदी सप्ताह साजरा करण्यात आला त्याचे कार्यक्रम खालील प्रमाणे :

१४ सप्टेंबर २००९ हिंदी हस्ताक्षर स्पर्धा.

१८ सप्टेंबर २००९ हिंदी निबंधलेखन स्पर्धा.

२६ सप्टेंबर २००९ हिंदी सप्ताह समापन कार्यक्रम या कार्यक्रमासाठी नेसरी महाविद्यायाचे प्राचार्य डॉ. के. आर. पाटील प्रमुख पाहूणे म्हणून उपस्थित होते. या वेळी झालेल्या स्पर्धेमधील विजेत्यांना महाराष्ट्र बँक शाखा बिद्री च्यावतीने रोख बक्षिसे देण्यात आली. विजते खालील प्रमाणे.

हस्ताक्षर स्पर्धा

प्रथम - जितकर माया राजाराम
द्वितीय - कांबळे रणजीत सुरेश
तृतीय - पाटील रणजीत मधुकर

निबंध स्पर्धा

प्रथम - पाटील नित्ता तुकाराम
द्वितिय - मस्कर सुरेश मारूती
तृतीय - पाटील महेश मच्छिंद्र

या वर्षीही महाविद्यालयीन विद्यार्थ्यांना केंद्रसरकारची हिंदी स्कोलरशिप मंजूर झाली तृतीय वर्षाकरीता रूपये ४००० ची स्कॉलशिप मिळणारे विद्यार्थी कु. पाटील शितल, कु. रक्ताडे-पाटील शोभा, प्रा. श्री. डोने रोहन यांचा विभागाला सार्थ अभिमान आहे. विभागातील प्रा. सारिका कांबळे यांना एम. फिल पदवी मिळाली. तर प्राध्यापक दिघे पी. एच. डी. शोधकार्य करत आहेत. विभागामध्ये काम करत असताना प्रा. कु. सारिका कांबळे प्रा. दिघे व प्राचार्य सहकार्य प्राध्यापक यांचे मोलाचे सहकार्य लाभले.

डॉ. देसाई एस. बी.

राज्यशास्त्र विभाग

१) शिवाजी विद्यापीठाच्या नेहरू अभ्यास केंद्रातर्फे दि. ५,६ आणि ७ ऑक्टोंबर रोजी "पंडीत जवाहरलाल नेहरू" यांच्या प्रवाह आणि आधुनिक जगाचा उदय या विषयावर तीन दिवसाची कार्यशाळा संपन्न झाले. त्यात खालील विद्यार्थिंनी उपस्थित होत्या.

१) कु. चौगले वर्षा अशोक - बी.ए. भाग ३

२) कु. मांडवकर धनश्री एकनाथ - बी. ए. भाग ३

२) देवचंद कॉलेज अंतर्गत राधानगरी महाविद्यालय राधानगरी येथे सोमवार दि. ११/०१/२०१० रोजी "धर्मनिरपेक्ष" या विषयावर एक दिवसाची कार्यशाळा संपन्न झाले त्यात खालील विद्यार्थीनीनी उपस्थित होत्या.

१) कु. चौगले वर्षा अशोक - बी. ए. भाग ३

२) कु. मांडवकर धनश्री एकनाथ - बी. ए. भाग ३

३) कु. जाधव आशा आनंदा - बी. ए. भाग ३

४) कु. पाटील पूनम शिवाजी - बी. ए. भाग ३

३) महात्मा गांधीजींच्या पुण्यतिथी निमित्त राज्यशास्त्र विभागाच्यावतीने दि. ३०/०१/२०१० रोजी वक्तृत्व स्पर्धा संपन्न झाले त्यात खालील विद्यार्थ्यांच्या सहभाग

१) कु. सीमा सदाशिव कुसाळे - बी.ए. १

२) अमर विठ्ठल पाटील - बी. ए. २

३) प्रकाश रमाकांत माहादेश्वर - बी. ए. भाग३

४) कु. मयुरी मोहन गोते - बी.ए. उत्तेजनार्थ

प्रा. ए. बी. माने

विभाग प्रमुख

Workshop on Understanding Poetry

The Department of English, Doodhsakhar Mahavidyalaya, Bidri, organized Shivaji University Kolhapur, sponsored One Day Workshop on the revised syllabus of B.A.III paper V (Understanding Poetry) for U.G. teachers from Shivaji University Kolhapur on 30th Nov. 2009.

The objective of this workshop was to provide valuable guidance regarding the teaching of this paper at U.G. level. And also to avail the teachers of English a platform for discussion about teaching of this paper.

Sowe invited a distinguished scholar of Indian English Poetry, **Dr. Shirish Chindhade from Pain. R.A. Kulkarni, Kolhapur, Dr. M.G. Kadam, S.G.M. College, Karad, and Prof. J.A.Mhetre,** Chairman B.O.S. in English, Satara were the Resource Persons.

Dr. Shirish Chindhade, in his Keynote address explained the ways of teaching poetry at U.G. chsses by giving various examples in an excellent manner.

The Chief guest of the workshop Dr. **P. A. Attar** took a review of various aspects of African poetry. Also he told what exactly Indian English Poetry is trying to express. Lastly, he talked on the Confessional tone in American poetry.

In the post-lunch session, **Prin. R.A. Kulkarni** very excellently stated his observations about

teaching poetry at U.G. classes. He idual poems can be arrived at. Prof. N. V. Nalwade, Kolhapur chaired this session.

discussed some significant poems and explained how a greateer understanding and appreciation of individual poems can be arrived at. Prof. N. V. Nalwade, Kolhapur chaired this session.

In the second session, **Dr. M. G. Kadam** forcused his attention on perceptive criticism on some poes. Definitely that will be helpful to the teachers as well as students for wider perspective Prof. P. R. Shewale chaired this session.

In the last 'Feedback and Valedictory Function' **J.A. Mhetre, BOS chairman** conducted very lively discussion on the syllabus, paper pattern and workshop also. Many teachers very actively participated in this discussion.

In all the workshop proved to be very fruitful and beneficial for the teachers of English. Totally, 95 teachers and 15 students of English Dept. of our college attended this workshop.

We thank Shivaji University for giving us the opportunity of organizing this workshop.

Prof. C. Y. Jadhav
Co-ordinator

Report of a One day Seminar on

Revised Syllabi of B.A.III English Spl. paper IV, V, VIII

The Dept. of English of our college organised Lead college sponsored one day seminar on "Revised Syllabi of B. A. III English papers IV, V and VIII for teachers and students of B.A. III (Spl. Eng.) on 5th Feb. 2010.

The objective of the seminar was to provide on insight to the students. It also aimed to avail an appropriate study approach towards special Eng!.sh papers. We had invited the young, enthusiaditc, scholars as a Resource persons, 1) **Prof. N. V. Nalawade, Head Dept. of Eng. New college Kolhapur. 2) Prof. Arundhati Pawar, Dept. of Eng. New College, Kolhapur and 3) Dr. S.B. Bharmbar, Head, Dept. of English, Arts & Comm. College Nesari.**

Dr. A. G. Joshi, Principal Devchand college, Arjunnaagar and former Dean of Shivaji University, Kolhapur was the chief guest of the

inaugural function of the seminar. In his a keynote address, he stated the importance of organising such seminars and expressed his

satisfaction. He advised the students to 'Get English and Go Global.'

In the first session, Prof. Arundhti Pawar explained the concept of 'Literary Criticism and appreciation' and different approaches to the study of literature. Then she took a review of the prescribed Critical Essays in her lucid style.

In the second session, Prof. N. V. Nalawade illustrated 'The Structure and Function of Modern English' in a very simple language. He illustrated phonology, morphology, syntax and clause analysis by providing various tips and hints to the students.

In the post-lunch session, Dr. S. B. Bhambar, in his speech, explained 'How to study a poem?' He further provided a check-list of 'Before writing answer and also discussed

How to write answer of a particular poem in the exam?

In every session, after the speech, there was an interaction with resource persons. And students responded very well during interaction session. A number of students asked their doubts & questions regarding the respective papers.

Dr. A. D. Kumbhar presided over as a chief Guest of valedictory function. and expressed great satisfaction about the seminar he advised the students to take advantage of such seminars for their improvement.

Result, the seminar proved very helpful and beneficial to the students for preparing of examinations. In all 120 students and 7 teachers of English attended this seminar.

We thank our 'Leed College' for giving us the opportunity of organizing this seminar.

Co -ordinator
Prof. C. Y. Jadhav

मी

व

माझे

सहकारी

अनुक्रमणिका

१)	प्रा. डॉ. एस. डी. पाटील	३
२)	प्रा. डॉ. ए. जे. वारके	३
३)	प्रा. एस. ए. साळोखे	३
४)	प्रा. ए. बी. माने	४
५)	प्रा. एस. आर. पाटील	४
६)	प्रा. एन. एम. पाटील	५
७)	प्रा. एल. एस. करपे	५
८)	प्रा. एस. जी. खानापूरे	५
९)	प्रा. ए. डी. जानवे	६
१०)	प्रा. डॉ. ए. आर. माने	६
११)	प्रा. डॉ. एस्. बी. देसाई	७
१२)	प्रा. एन्. डी. पाटील	७
१३)	प्रा. एस्. ए. गंगावणे	७
१४)	प्रा. सी. वाय. जाधव	९
१५)	डॉ. एस. एन. कुलकर्णी	१०

प्रा. डॉ. एस. डी. पाटील

शैक्षणिक वर्ष २००९-१० मधील माझा वैयि तक अहवाल खालीलप्रमाणे :

१) मराठी विषयाचे तज्ञ म्हणून उपस्थित सहकारमहर्षी श्री. एम. के. पाटील महा. कुरुंदवाड येथे दि. ५/६/०९ रोजी.

२) 'मराठी भाषा : सर्जन आणि उपयोजन' या बी. ए. भाग तीन पेपर क्र. सातच्या एकदिवशीय कार्यशाळेस उपस्थित महावीर महा. कोल्हापूर येथे दि. २६/१०/०९ रोजी.

३) चंद्रकुमार नलगे यांचे साहित्य या एकदिवशीय चर्चासत्रास उपस्थित मराठी विभाग शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर येथे दि. २६/११/०९ रोजी.

४) व तृत्व शैली व सादरीकरण कौशल्य या विषयावरील एक दिवशीय कार्यशाळेस उपस्थित सदाशिवराव मंडलिक महा. मुरगूड येथे दि. ३०/१२/०९ रोजी.

५) मराठी-हिंदी-इंग्रजी नाटकांचा तुलनात्मक अभ्यास आणि अनुवादाची प्रक्रिया या विषयावरील चर्चासत्रास उपस्थित भोगावती महा. कुरुकली येथे दि. १५/१/२०१० रोजी.

६) समकालीन मराठी साहित्य : स्वरूप आणि समीक्षा (१९७५ ते २०००) या तीन दिवशीय राष्ट्रीय चर्चासत्रास उपस्थित डॉ. घाळी महा. गडहिंग्लज येथे दि. ३ ते ५ फेब्रुवारी २०१० रोजी.

७) व्यसनमु ती : काळाची गरज या विषयावर गांधी पुण्यातिथी निमित्त मजरे कासारवाडा ता. राधानगरी येथे व्याख्यान दिले. शनिवार दि. ३० जानेवारी २०१० रोजी.

८) स्त्रीवादी साहित्य....चिकित्सा या दोन दिवशीय राज्यस्तरीय चर्चासत्रात १९६० नंतरच्या मराठी साहित्यातील स्त्रियांचे कथा लेखन या विषयावर सदाशिवराव मंडलिक महा. मुरगुड येथे शोध निबंध सादर केला. दि. ११ व १२ मार्च २०१०.

९) चांदेकरवाडी ता. राधानगरी येथे तंटामु ती समितीमार्फत आयोजित 'राजकीय ऐ य व सामाजिक सलोखा या विषयावर दि. २० मार्च २०१० रोजी ग्रामस्थासमोर व्याख्यान दिले.

♦♦♦

प्रा. डॉ. ए. जे. वारके

महावीर महाविद्यालय, कोल्हापूर व शिवाजी विद्यापीठ यांच्या वतीने आयोजित बी. ए. भाग ३ बदललेल्या अभ्यासक्रमाला प्रशिक्षण शिबिरास उपस्थिती

प्रा. साळोखे एस. ए.

१) शुक्रवार दि. २६ जून, ०९ रोजी देवचंद कॉलेज, अर्जुननगर येथे घेण्यात आलेल्या महाविद्यालयीन अधिव्याखयात्यांच्या निवडीस शिवाजी विद्यापीठाचा इंग्रजी विषयतज्ञ म्हणून काम पाहिले.

२) मंगळवार दि. १५ सप्टेंबर २००९ रोजी विटा कॉलेज, विटा येथे घेण्यात आलेल्या बी. ए. भाग ३ च्या इंग्रजी विषयाच्या, बदलेल्या अभ्यासक्रमार्तंगत पेपर नं. ६ च्या 'Undierstanding Drama' या कार्यशाळेस हजर.

३) सोमवार दि. ११ जानेवारी २०१० रोजी सदाशिवराव मंडलिक महाविद्यालय, येथे बी. ए. भाग ३ च्या पेपर नं. ७ च्या 'Heart of Darkness' या कांदबरीच्या चर्चासत्रामध्ये इंग्रजी विभागाचे विद्यार्थी घेऊन सहभाग.

४) शुक्रवार दि. १५ जानेवारी २०१० रोजी भोगावती महाविद्यालय, कुरुकली येथे नाटकाचा अनुवाद कसा करावा 'या विषयावर कार्यशाळेचे आयोजन करण्यात आले. या कार्यशाळेसाठी आपल्या महाविद्यालयातील मराठी, हिंदी व इंग्रजी विभागातील विद्यार्थ्यांबरोबर सहभाग.

प्रा. ए. बी. माने

१) के. एच. कॉलेज गारगोटी येथे दि. २०/४/२००९ ते ३०/४/२००९ पर्यंत सिनिअर सुपर व्हिजन म्हणून शिवाजी विद्यापीठ परीक्षेचे काम पाहिजे.

२) देवचंद कॉलेज, अर्जूननगर येथे दि. ०२/०५/२००९ ते १६/०५/२००९ पर्यंत बहिस्थ वरिष्ठ परिक्षक म्हणून शिवाजी विद्यापीठ परीक्षेचे काम पाहिले.

३) शिवाजी विद्यापीठाच्या नेहरू अभ्यास केंद्रातर्फे दि. ५,६ आणि ७ ऑक्टोंबर २००९ रोजी पंडित जवाहरलाल नेहरू यांच्या प्रवाह आणि आधुनिक जगाचा उदय या विषयावर तीन दिवसांची कार्यशाळा संपन्न झाले त्यात सहभाग.

४) शिवाजी विद्यापीठ राज्यशास्त्र परिषद, सोळावे अधिवेशन दि. १२ व १३ जानेवारी २०१० रोजी श्रीपतराव चौगुले महाविद्यालय, माळवाडी कोतोली येथे दोन दिवसाची राज्यशास्त्र परिषद संपन्न झाले त्यात सहभाग.

५) शिवाजी विद्यापीठ कोल्हापूर व राज्यशास्त्र विभाग यांच्यावतीने 'Nation, civil Society state in western India' या विषयाचा.

६) शिवाजी विद्यापीठातील गांधी अभ्यास केंद्राच्यावतीने दि. १८,१९,२० मार्च २०१० असे तीन दिवस '' गांधी आणि त्यांचे समकालिन'' या विषयावर राष्ट्रीय चर्चासत्र संपन्न झाले त्यात सहभाग.

७) शिवाजी विद्यापीठातील राज्यशास्त्र विभागाच्यावतीने दि. २२ व २३ मार्च २०१० रोजी "Samyukta Maharashtra Myths and Reality" या विषयावर दोन दिवशीय राष्ट्रीय चर्चासत्र संपन्न झाले त्यात सहभाग.

प्रा. एस. आर. पाटील

१) शिवाजी विद्यापीठ इतिहास प्राध्यापक परिषद संत गाडगे महाराज महाविद्याल कराड येथे दिनांक १३ फेब्रु. २०१० ते १४ फेब्रु. २०१० या दिवसी होती त्या परिषदेस उपस्थित होतो.

२) शिवाजी विद्यपीठाकडून 'विषय तज्ञ' म्हणून नियुक्ती झाल्यानंतर निवड समितीवर दोन ठिकाणी काम पाहिले.

३) कौलगे ता. कागल येथे झालेल्या भव्य कब्बडी स्पर्धेच्या उद्घाटनाचे अध्यक्ष स्थान भूषविले.

४) वर्षातील बहुतांशी वेळा थोर पुरूषांच्या जयंती निमित्त विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.

प्रा. एन. एम. पाटील

१) जून २००९ मध्ये पी. एच. डी. साठी रजिस्ट्रेशन केले.

२) दि. १० डिसेंबर २००९ ला जैवविविधता आणि सामाजिक व सांस्कृतीक आतरराष्ट्रीय परिषदेस उपस्थित होतो.

३) बी. ए. भाग २ पेपर २ व ३ च्या अभ्यासक्रम कार्यशाळेसाठी एस. जी. एम. कराड येथे उपस्थित होतो.

४) दि. १८-१२-२०१० ते २१/०२/२०१० दरम्यान बेंगलोर विद्यापीठात भूगोल विषयाच्या आतरराष्ट्रीय परिषदेमध्ये Regional Disparities in levels of Agricultural Development in Kolhapr Drstrict.'' हा संशोधन पेपर सादर करत आहे.

५) सदर शैक्षणिक वर्षात स्पर्धा परीक्षा विभागाकडे निमंत्रक म्हणून काम पाहीले.

प्रा. एल. एस. करपे

मी सन २००९-१० या शैक्षणिक वर्षात खालील प्रमाणे सेमिनार उपस्थित होता.

१) मराठी, अर्थशास्त्र परिषदेच्या ३३ व्या वार्षिक अधिवेशनासाठी दि. १३,१४ व १५ जानेवारी २०१० इ. या कालावधीत शारदाबाई पवार महीला महाविद्यालय, शरद नगर बारामती येथे सहभागी होतो.

प्रा. एस. जी. खानापूरे

१) महाविद्यालयीन कमिटी सदस्य

एन.एस.एस. - प्रमुख शास्त्र शाखा

ग्रंथालय समिती - सदस्य

एन. ए. ए. सी. - सदस्य

२) कॉन्फरन्स

मी जोशी-बेडेकर कॉलेज ठाणे, येथे आयोजित "Mind Brain Consciousness' या अंतरराष्ट्रीय कान्फरन्स attend केले आहे.

३) सामाजिक कार्य

व्याख्याने -

मी खालील ठिकाणी विविध विषयावर व्याख्याने दिली आहे.

१) संयुक्त व्याख्यानमाला शिरवळ - मानसिक विकार

२) डी. वाय. पाटील कॉलेज, पुणे - अभ्यास तंत्र

३) डी.एड्. कॉलेज, अक्कलकोट - विचार सामर्थ्य

४) बेलवळे हायस्कूल, बेलवळे - अभ्यास तंत्र

५) आजरा महाविद्यालय, आजरा - माईड पॉवर

६) एन.सी.सी. कॅप, बेलवळे - संमोहन लेख

मी खालीलप्रमाणे विविध विषयावर लेख लिहिल आहे.

१) दैनिक पुढारी - परिक्षेला सामोरे जाताना

२) नाडीपट्टी मासिक पुणे - संमोहन आणि नाडी पट्टी

३) रेकी, पुस्त सातारा - वैश्विक उर्जा

४) दैनिक पुढारी - नार्की ॲनॅलिसिस मार्गदर्शन व उपचार

मी शेकडो शाळा-कॉलेजचे विद्यार्थी पेशंट आणि गरजू व्यक्तिंना विविध विषयावर मार्गदर्शन व उपचार केले आहे.

अवार्डस

माझ्या सामाजिक कार्यामुळे मला खालील प्रमाणे आवार्डस् मिळाले आहेत.

१) भारतीय रत्न - मिरज - राज्यस्थरिय अवार्ड

२) ऑल इंडिया अचिव्हर्स नवि दिल्ली - राष्ट्रीय अवार्ड

प्रा. ए. डी. जानवे

१) दि. २८ व २९ जाने २०१० रोजी बॅ. बाळासाहेब खर्डेकर महाविद्यालय वेंगुर्ले जि. सिंधुदुर्ग येथे मराठी समाजशास्त्र परिषदेचे २० वे अधिवेशन दहशतवाद व समाज या विषयावर संप्पन झाले. त्यामध्ये सक्रीय सहभाग घेतला.

२) One day Workshop on "Socio-Economic Apporach To Medicainal Plants" Org. by Bhogawati Mahavidyalaya Kurukali. Date - 2 Feb. 2010

३) दि. ३० जाने २०१० रोजी राज्यशास्त्र विभागाच्या वतीने ''महात्मा गांधी जयंती'' निमित्त दूधसाखर महाविद्यलयामध्ये वक्तृत्वस्पर्धा आयोजित केलेली होती. त्या स्पर्धेमध्ये परीक्षक म्हणून काम पाहिले.

४) दि. १० फेब्रुवारी २०१० रोजी कासारवाडा ता. राधानगरी येथे महात्मा गांधी तंटामुक्त समितीच्यावतीने ''अंधश्रध्दा निर्मुलन ही काळाची गरज'' या विषयांवर व्याख्यान दिले.

५) दि. ९ व १० फेब्रुवारी २०१० रोजी बी.ए.भाग ३ पेपर क्रं. ६, ७, ८ समाजशास्त्रविषयी दोन दिवशीय कार्यशाळा शिवाजी विद्यापीठत समाजशास्त्र विभाग व कर्मवीर हिरे कला, वाणिज्य व शास्त्र कॉलेज गारगोटी यांच्या वतीने आयोजित केलेली होती. त्यामध्ये सक्रीय सहभाग घेतला.

६) गुरु. दि. ४ मार्च २०१०रोजी निगवे ता. करवीर येथे एन. एस्. एस्. चे दूधसाखर महाविद्यालयाच्यावतीने एक दिवशीय शिबीर आयोजित केलेले होते. त्यामध्ये सक्रीय सहभाग घेतला.

७) सन २०१०-११ या शैक्षणिक वर्षातील ''फिडबॅक कमिटी दूधसाखर महाविद्यालय बिद्रीच्या वतीने बी. ए. भाग १,२, व ३ विद्यार्थ्यांकडून फिडबॅक फॉर्म भरून घेवून कॉलेजला प्राध्यापकांबाबत रीपोर्ट सादर केला.

प्रा. डॉ. ए. आर. माने

१) २६ जून २००९ रोजी राजर्षी शाहू महाराज जयंती साजरी केली. संयोजन व विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.

२) ४ जाने. २०१० क्रांती जोती सावित्रीबाई फुले जयंती महाविद्यालयात साजरी करण्यात आील. विद्यार्थ्यांसमोर प्रमुख वक्ता म्हणून व्याख्यान दिले.

३) ६ जाने. वि. स. खांडेकर प्रशाला, कोल्हापूर येथे 'सावित्रीबाई फुले' यांचे जीवनकार्य या विषयावर प्रमुख पाहुणा म्हणून मार्गदर्शन केले.

४) सांस्कृतिक कमिटीसदस्य म्हणून गॅदरींगमधील सांस्कृतिक कार्यक्रमाची विद्यार्थ्यांकडून तयार करून घेतली व कार्यक्रम यशस्वी केला.

५) एन. सी. सी. च्या वतीने आयोजित बेलवले ता. कागल येथे फुले-शाहू-आंबेडकर यांचे कार्य या विषयावर ग्रामस्थासमोर जाहिर व्याख्यान दिले.

६) दि. १० फेब्रु: २०१० रोजी कासारवाडा ता. राधानगरी येथे अंधश्रध्दा निर्मूलन या विषयावर ग्रामस्थासमोर व्याख्यान व चमत्काराचे प्रयोग करून दाखविले.

७) २० फेब्रुवारी २०१० रोजी छत्रपती शिवाजी महाराज जयंती निमित्त विद्यार्थ्यांना मार्गदर्शन केले.

८) इतिहास विभागाच्यावतीने कोल्हापूर-कराड-औंध-सातारा या शैक्षणिक सहलीचे आयोजन.

प्रा. डॉ. एस्. बी. देसाई

सन २००९-१० या शैक्षणिक वर्षामध्ये महाविद्यालयीन व सांस्कृतिक विभागाच्या व्यतिरिक्त मी खालील उपक्रमामध्ये विशेष सहभाग नोंदवला.

६ एप्रिल २००९ रोजी श्रीमती एस. बी. नाळे यांच्या एम. फिल मौखिकीसाठी परिक्षक म्हणून विद्यापीठात नियक्त.

२ मे २००९ रोजी श्री. चौरे जे. जी. यांच्या एम.फिल मौखिकीसाठी विद्यापीठात नियुक्त.

२४ जून २००९ रोजी श्रीमती एस. वाय. पाटील यांच्या एम. फिल मौखिकीसाठी परिक्षक म्हणून विद्यापीठात नियुक्त.

१३ सप्टेंबर २००९ रोजी शिवराज महाविद्यालय गडहिंग्लज येथे हिंदी विषय तज्ञ म्हणून निवड.

'भारतवाणी' धारवाड कर्नाटक पत्रिकेसाठी वैदेही के राम हा लेख स्विकृत.

राष्ट्रभाषा वर्धासाठी आलेख स्विकृत.

संचारिका औरंगाबाद महाराष्ट्र 'शबरी' का कथ्य या विषयावर लेख स्विकृत.

२५ नोव्हेंबर २००९ रोजी झालेल्या वक्तृत्व स्पर्धेसाठी परिक्षक म्हणून नियुक्त.

५,६ फेब्रुवारी २०१० रोजी विद्यापीठाच्या परिक्षा विभागाकडे नियुक्त.

प्रा. एन्. डी. पाटील

१) शिवाजी विद्यापीठ आंतर विभागीय क्रॉसकंट्री (पुरुष व महिला) तसेच बास्केटबॉल (महिला) स्पर्धाचे आयोजन सचिव म्हणून काम पाहिले.

२) शिवाजी विद्यापीठ बास्केटबॉल (पुरुष) निवड समिती निमंत्रक म्हणून नियुक्ती.

३) शिवाजी विद्यापीठ बास्केटबॉल (पुरुष) संघाचे प्रशिक्षक म्हणून काम पाहिले. 'जयसिंगपूर' व १३ व्या अश्वमेध महाराष्ट्र राज्य आंतर विद्यापीठ स्पर्धेसाठी सहभागी.

४) अखिल भारतीय दक्षिण-पश्चिम आंतर विद्यापीठ स्पर्धा 'कोलेनचेरी (केरळ) येथे प्रशिक्षक म्हणून नियुक्ती.

५) कोल्हापूर विभागीय बास्केटबॉल (पुरुष) स्पर्धा आयोजन सचिव म्हणून काम पाहिले.

६) ५५ व्या राष्ट्रीय शालेय स्पर्धांसाठी 'पंच' म्हणून नियुक्ती व पुरूष अंतिम सामन्यासाठी मुख्य 'पंच' म्हणन नियुक्ती.

Prof. S. A. Gangawane

Extracurricular Activities in the Academic Year 2009-10

A) Seminar, Conferences & Work-Shop Attended :

1) National Symposium on SAdances in Laseres and Spectorscopy Feb, 27-28th 2009. Dr. Hari Singh Gour Vishwaviyalaya Sagar (M.P.)

2) Lasers and Advanced College Kave Road Pune.

B) Publications.

1) Studies on Surface deformation using Sb_2S_3 thin Films by double exposure holographic interferometry technique, N.S. Shinde, S.A. Gangavane, B. P. Relekar, V.J. Fulari, National Laser Symposium, Defence Research and Development Organization, New Delhi (7-10 Jan.2009)
2) Studies on Surface Deformation of Cdmium Telluride thin films By Double Exposure Holographic Interferometry Technique. S.A.Gangawane, S. D. Kamat, V. J. Fulari (2009). National

   Symposium on Advances in Lasers and Spectroscopy, Feb 27-28th, 2009. Dr. Hari Singh Gour Vishwavidyalaya, Sagar (M.P.)
3) Studies on Surface Deformation of CdS, CdSe and CdTe Thin Films by Double-Exposure Holographic Interferometry Technique" S.A. Gangawane, S. D. Kamat, V. J. Fulari. Lasers and Advanced Materials.

ICLAM 2010, March 6-8,2010 Abasaheb Garware College Karve Road, Pune-411 004, Maharashtra, India.

ii) Publications

1) Monitoring The Cdmium Selenide Thin Films by Double-Exposure Holographic Interferometry Technique. S.A. Gangawane, S.D. Kamatr, V.P. Malekar, V. J. Fulari (Paper Communicate, Journal of Optics.)
2) Measurement of properties of Copper telluride thin films using holography" V. J. Malekar, S.A.Gangawane PIERC 12 (2010) 56-64.
3) Double Exposuer Holographic Interferometry Technique for Electro deposited Cadmium Sulfide Thin films S.A. Ganagwane, S. D. Kamat, H.D. Dhaygude, V. J. Fulari. (Paper Communicate, Applied Surface Science)
4) Studies on Surface Deformation of Cdmium Telluride Thin Films by double-Exposure Holographic Interferometry Technique" S.A. Gangawane,

S.D. Kamat, V. J. Fulari, (Paper Communicate, Optics Communications).

(C) Co-Curricular Activity

1) Member of Standing committee and Special Cell.

2) Staff Academy and Staff Secretary.

3) Admission Committee.

Prof. C. Y. Jadhav
Individual Profile

1) I worked as a coordinator of U.G.C. supported Career Oriented Course 'A Certificate Course in Functional English.'

2) On behalf of Dept. of English of our college, I orgnized A One day University Level Workshop on the Revised Syllabus of B.A.III English Paper V (Understanding Poetry) for U.G. teachers of Shivaji University affiliated colleges on Monday, 30th Nov. 2009. About 100 participants attended the workshop.

3) On behalf of Dept. of English of our college. I organized A one day Seminar under the Lead College scheme on the Revised Syllabi of B. A. III English Paper IV, V & VIII for B.A. III English students on Friday, 5th Feb. 2010. More than 100 Students from various colleges under lead cluster attended the seminar and got benefitted of that.

4) I Was appointed as an examiner for 'A Paper Presentation COmpetition' for the English students at UG level a Lead College Activity on Thesday 19th January, 2010 at Arts and Commerce College, Nesari. Also guided the students regarding Paper Presentation on the occasion of Prize Distribution Function.

5) I was invited as a Resource Person of Quiz Cotest organized by Lal Bahadur Shastri College, Satara on the revised syllabus of English Comp. at B.A. III on 17th Feb. 2010. I prepared 200 objective type questions based on the revised syllabus of English Comp. at B.A. III

6) I attended a Seminar on ' Global

Nature of English Language in 21st Century' at Murgud under leed College Scheme on 9th January, 2010.

Dr. Kulkarni S. N.
Reader

1) Being a convener of UGC committee prepared a Human right education and XI plan development proposal and submitted to UGC on 14th Aug. 2009
2) I myself visited to office of the Maharashtra Public Service Commission, Mumbai and assessed the papers of main examination.
3) Organised one day seminar for the students in Doodhsakahar Mahavidyalaya, Bidri on 17th Dec. 2009 with collaboration of Bhabha Atomic Research Centre.
4) Arranged lectures of Prof. H.C. Pradhan, Director Homi Bhabha Centre for science Education, Mumbai for College students.
5) Arranged educational trip of B. Sc. III Students to Shivaji University, Kolhapur.
6) Delivered lecture on "Preparation of Major an Minor project proposal " in Devchand College, Arjunanagar.
7) Prepared Sixth pay documant and submitted to "Shivaji University, Kolhapur" on 16th Jan. 2010.
8) Delivered lecture on "Sixth Pay, XIth Plan and Service Regulation" for the college teachers of Doodhsakhar Mahavidyalaya.
9) Participared in Annual Convention of Indian Association of Physics Teachers held at Gadhinglaj and Edited the Proceeding of the convention.

प्राध्यापक वृंद

सन २००९-२०१०

मा. प्राचार्य डॉ. आर. एल. राजगोळकर

एम.एस्सी., पी.एच.डी.

कला विभाग

मराठी :

प्रा. डॉ. ए. जे. वारके	एम.ए.बी.एड्.सेट, पीएच.डी.
प्रा. डॉ. एस. डी. पाटील	एम.ए.बी.एड्. एम.फिल, पीएच.डी.

हिंदी

प्रा. डॉ. एस.बी. देसाई	एम.ए.एम. फिल पीएच.डी.
प्रा. डी. जी. दिघे	एम. ए.(सध्या संशोधनासाठी कार्यरत रजेवर)
प्रा. कु. एस्.आर. कांबळे	एम.ए.एम. फिल. सेट

इंग्रजी

प्रा. सी.वाय. जाधव	एम. ए. डीटीई.
प्रा. डी. एन. पाटील	एम. ए. एम. फिल
प्रा. एस.ए. साळोखे	एम.ए.एम.एड्. एम. फिल

इतिहास

प्रा. डॉ. ए.आर. माने	एम.ए.बी.एड. सेट, पीएच.डी.
प्रा. एस. आर. पाटील	एम.ए.

समाजशास्त्र

प्रा. डी. के. शिंदे	एम. ए. एम. फिल
प्रा. ए. डी. जानवे	एम. ए. बी. एड.

राज्यशास्त्र

प्रा. ए. बी. माने	एम. ए.
प्रा. पी. एस. पाटील	एम. ए.

भूगोल

प्रा. एन. एम. पाटील	एम. ए. सेट

अर्थशास्त्र

प्रा. एल. एस. करपे	एम.ए.बी.एड्., एम. फिल.

शारीरिक शिक्षण संचालक

प्रा. एन. डी. पाटील	एम. पी. एड.

शास्त्र विभाग

भौतिकशास्त्र

प्रा. एच. डी. धायगुडे	एम. एस्सी.
प्रा. डॉ. एस. एन. कुलकर्णी	एम. एस्सी, पीएच. डी.
प्रा. डॉ. एम. व्ही. टाकळे	एम. एस्सी., पीएच. डी.
प्रा. एस. ए. गंगावणे	एम. एस्सी.
प्रा. एस. डी. पाटील	एम. एस्सी.
प्रा. आर. आर. देसाई	एम. एस्सी.

रसायनशास्त्र

प्रा. एस. एन. झेंडे	एम. एस्सी. (सध्या संशोधनासाठी कार्यरत रजेवर)
प्रा. आर. बी. चोपडे	एम. एस्सी,
प्रा. एस. के. सावंत	एम. एस्सी.
प्रा. एस. जी. खानापुरे	एम. एस्सी.
प्रा. के. आर. सनदी	एम. एस्सी. सेट
प्रा. एस. के. जगदाळे	एम. एस्सी.

वनस्पतीशास्त्र :

प्रा. डॉ. एस. जी. गायकवाड एम.एस्सी.पीएच. डी.
प्रा. एस. एस. पाटील एम.एस्सी. एम. फिल
प्रा. पी. बी. पाटील एम. एस्सी.

प्राणीशास्त्र

प्रा. आर. एस. पाटील एम.एस्सी.

गणित :

प्रा. डी. डी. कोमेजवार एम. एस्सी. एम. फिल
प्रा. कु. एम. व्ही. सदलगे एम. एस्सी.

संख्याशास्त्र

प्रा. वाय. एस.पाटील एम.एस्सी.
प्रा. एस. एच. पाटील एम.एस्सी. एम फिल
प्रा. पार्टे ए. डी. एम.एस्सी.

संगणक विभाग :

प्रा. एस.एस. मिठारी एम. सी. ए.
प्रा. बी. ए. वारके एम. सी. ए.
प्रा. डी. बी. गोते बी.ई.(इलेक्ट्रानिक्स)
प्रा. दिगंबर अस्वले एम. सी. ए.
श्री. सागर पाटील

ग्रंथपाल :

श्री. ए. टी. वागरे एम.ए.बी.लिब. सायन्स

कार्यालयीन कर्मचारी

अधिक्षक:

श्री. पी. व्ही. पाटील एम. कॉम

मुख्य लिपीक

श्री. एम. के. भोईटे बी. कॉम.

वरिष्ठ लिपीक :

श्री. आर. एच. कंकाळ बी. कॉम.

कनिष्ठ लिपीक :

श्री. आर. एम. देसाई बी. ए.
श्री. व्ही. डी. तळेकर बी. ए.
श्री. आर. टी. पाटील बी. ए.

प्रयोगशाळा सहाय्यक

श्री. एस. के. पाटील बी. ए.

ग्रंथालय परिचर :

श्री. एन. एस. वारके एम. ए., बी. एड.
श्री. एस. टी. जोशी
श्री. जे. डी. कांबळे

शिपाई :

श्री. एस. एन. कांबळे
श्री. पी. आर. डाकरे
श्री. एस. आर.गुरव बी. ए.

मा. प्राचार्यासमवेत स्पंदनचे संपादक मंडळ

मा. प्राचार्यासमवेत महाविद्यालयाचा शिक्षक वृंद

मा. प्राचार्यासमवेत महाविद्यालयाचे प्रशासकीय सहकारी

वारणानगर येथे पार पडलेल्या राजस्तरीय जिम्नॅस्टीक स्पर्धेत अजिंक्यपद मिळविलेला संघ

महाविद्यालयात राज्यशास्त्र विभागामार्फत घेण्यात आलेल्या वक्तृत्व स्पर्धा

वार्षिक स्नेहसंमेलनातील रंगलेला शेलापागोटा

वार्षिक स्नेहसंमेलनातील एक विद्यार्थी कलाकार

वार्षिक स्नेहसंमेलनात गीत गायन करताना विद्यार्थीनी

श्री दूधगंगा-वेदगंगा सहकारी साखर कारखाना लि., बिद्री (मौनीनगर)

तालुका कागल, जिल्हा कोल्हापूर- महाराष्ट्र

तार : दूधसाखर बिद्री
फोन : (०२३२५) २५४९२२ ते २५४९२६

कोल्हापूर ऑफिस : ०२३१-२६६१५७८, २६६०४१
फॅक्स : (०२३२५) २५४९७२

आमच्या कारखान्याची ठळक वैशिष्ट्ये

* कारखान्याच्या गळीताची सुरुवात सन १९६३ साली १२५० मे. टन दैनंदिन ऊस गाळप क्षमतेने झाली. सद्याची गाळप क्षमता प्रतिदिनी ४५०० मे. टन आहे.
* कारखान्याचे कार्यक्षेत्र राधानगरी, भुदरगड, कागल आणि करवीर या तालुक्यातील २१८ गावांमध्ये सुमारे ३५ कि. मी. परिसरामध्ये विस्तारलेले आहे.
* सन १९९४-९५ च्या गळीत हंगामात मे. वसंतदादा साखर संशोधन संस्था पुणे यांनी तांत्रिक कार्यक्षमता प्रस्तापित केल्यावद्दल महाराष्ट्र राज्यातील ''द्वितीय क्रमांकाचे'' पारितोषिक देऊन कारखान्यास गौरविले आहे.
* मे. वसंतदादा शुगर इन्स्टिट्यूट, मांजरी बु॥ जिल्हा पुणे यांनी आमच्या कारखान्याने महाराष्ट्र राज्यात सर्वाधिक रिड्युसड ओव्हर ऑल रिकव्हरी मिळविल्यावद्दल सन १९९६-९७ सालाचे हंगामासाठी तांत्रिक कार्यक्षमतेचे महाराष्ट्र राज्यात ''प्रथम क्रमांकाचे'' बक्षिस देऊन कारखान्यास गौरविले आहे.
* भविष्यात कारखाना कार्यस्थळावर स्वतःची आर्कशाळा उभारणेचा कारखान्याचा संकल्प आहे.
* देशातील तीव्र वीज टंचाईस हातभार लावणेसाठी, वीस मेगॅवॅटचा अंदाजे ११० कोटी रूपयांचा वीज निर्मिती प्रकल्प उभारणीचे कामकाज हाती घेतले आहे.
* कारखान्याच्या माध्यमातून कृतियुक्त सहभागाने दूधगंगा नदीवरील दूधगंगा प्रकल्प व वेदगंगा नदीवरील पाटगांव प्रकल्पाचे पुर्ततेसाठी कारखान्याने कृतीयुक्त योगदान दिले आहे. त्याचे फलीत, सद्या दोन्ही नद्या वारमाही दुथडी वाहतात.
* शासनामार्फत राबविणेत येणाऱ्या लोकाभिमुख योजना राबविण्यामध्ये कारखाना प्रत्यक्ष कृतीयुक्त सहभाग घेत असून, कार्यक्षेत्रातील जनतेच्या सर्वांगीण विकासासाठी कारखाना सदैव कटीबध्द आहे.
* कारखाना कार्यस्थळावर बालवाडीपासून कला, विज्ञान आणि संगणक शाखांच्या पदवी पर्यंतच्या शिक्षणाची सोय केलेली असून पदव्यूत्तर अभ्यासक्रम सुरु करणेसाठी कारखाना व्यवस्थापकीय मंडळ प्रयत्नशिल आहे
* केंद्र सरकारचे योजनेमधून कारखाना कार्यक्षेत्रातील ऊस उत्पादनामध्ये वाढ व्हावी म्हणून ऊस विकासाच्या विविध योजना कार्यान्वित तसेच अद्ययावत तंत्रज्ञानाधारे ऊस पिकविण्याच्या दृष्टीने शिबीरे, मेळावे, चर्चासत्रे, प्रात्यक्षिके घेऊन तसेच बि-वियाणे, खते, किटक नाशके औषधे अनुदानावर देऊन कारखाना सभासदांना प्रोत्साहीत करीत आहे.
* सहकाराचे माध्यमांतून कारखाना कार्यक्षेत्रातील सभासद, ऊस उत्पादक, सामान्य जनता यांचे सर्वांगीण विकासासाठी कारखाना कटीबध्द आहे.

मा. आर. डी. देसाई
कार्यकारी संचालक

मा. केशवराव शं. पाटील
व्हाईस चेअरमन

आमदार के. पी. पाटील
चेअरमन

आणि

सर्व सन्माननीय संचालक मंडळ, सभासद, बंधू-भगिनी, खाते अधिकारी व सर्व सेवक वर्ग